₹ 30/-

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक प्रयास

अनुप्रास

अनुप्रास

www.anupras.com

वर्ष-02, अंक-02, जुलाइ-दिसम्बर 2020

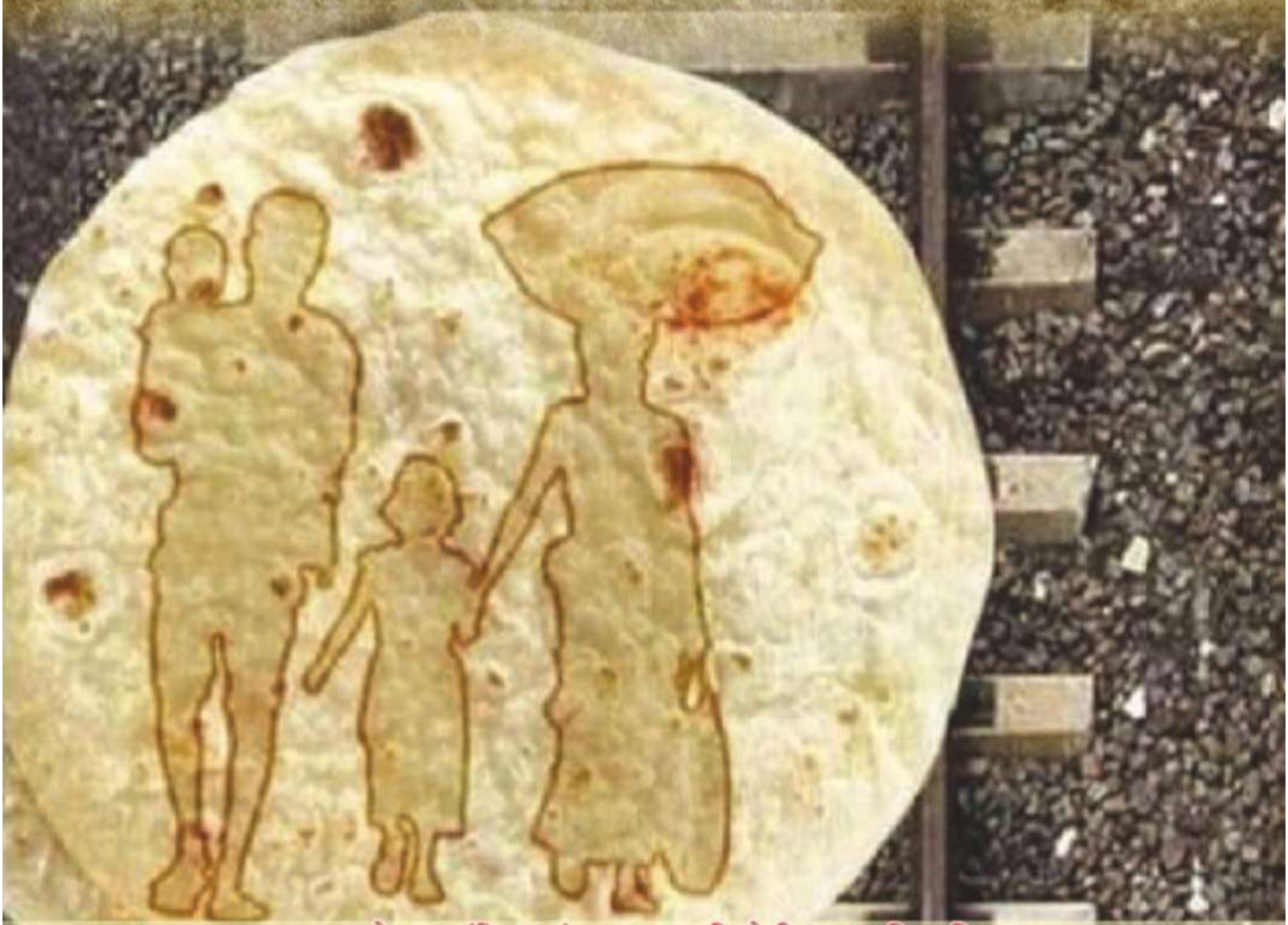

- प्रख्यात नाटककार महेन्द्र मलंगिया संग तारानन्द वियोगी आ ऋषि बशिष्ठक साक्षात्कार
- आलेख : कखनहु आठ-आठटा कहारवाला पालकीमे बैसल त' कखनहु... • शिवशंकर श्रीनिवासक कथामे 'वेसेक्स' कथा लेखनक स्वरूप
- मैथिली-संताली संस्कार गीतमे समता मूलक ओ प्रगतिशील भाव • रेलक पटरी पर छिड़िआएल रोटी !

संस्मरण : • हुनक आत्मामे बसल रहनि काव्य आ कला • मैथिली रंगनायक दयानाथ झा

कथा : • होमो युगमे चुलबुल पांडेक विवाह • पसाही

- कविता • गजल • गीत • चर्चामे • व्यंग्य • बालबाड़ी

डॉ. नरेन्द्रक चारिटा गजल

9835106782

01

अजब अन्हार गुजगुजायल अछि
एखन इजोत बहुत घायल अछि

गरीब ठाढ़ अछि अदालतमे
अमीर कर्ज ल'क' पड़ायल अछि

बाहरी लोक आइ हौआ अछि
लोकसँ लोक सब डेरायल अछि

नहि इलाज नहि टीका कोनो
विचित्र रोग आइ आयल अछि

हाल बेहाल तालाबंदीमे
भुखमरी घरमे उतरि आयल अछि

02

एक त' पैघ ई दुनियाँमे महामारी अछि
ताहिसँ पैघ मुदा रोग ई सरकारी अछि

रोगसँ मृत्यु केर आँकड़ा भयावह अछि
ताहिसँ बढ़ि क' मुदा भुखमरी बेकारी अछि

एहि दुर्दिनमे जहर घोरि रहल अछि ओ सब
कहि रहल अछि मुसलमानक ई बेमारी अछि

धर्म केर नाम पर की खेल चलि रहल देखू
एकसँ एक पातकी आ दुराचारी अछि

गामसँ शहर धरि सब लोक असुरक्षित अछि
घातमे ठाम-ठाम पर एत' शिकारी अछि

03

प्राइवेट आ सरकारी बंद
रोजी आर दिहारी बंद

तालाबंदीक एहि विकालमे
पैंचा आर उधारी बंद

छात्र मजूर फँसल अपटीमे
गाड़ी आर सवारी बंद

बाँकी राज्य मदतिमे लागल
सगरो मुदा बिहारी बंद

सबसँ सब परहेज करैए
सबटा घरक केबाड़ी बंद

सील भ' रहल जिला-जिला
सब किछु पारा-पारी बंद

04

अफवाहक बाजार चलि रहल
फूसिक सब व्यापार चलि रहल

गुंडागर्दी मार धार पर
राष्ट्र भक्त सरकार चलि रहल

हौआ देखा रहल अछि रोगक
खेल मुदा किछु आर चलि रहल

कर्ज उठा किछु लोक पड़ायल
बाँकी देश उधार चलि रहल

लक डाउन केर लाभ उठा क'
मुल्ला सबक शिकार चलि रहल

धर्मक आगि पजारि देशमे
सौंसे राग मल्हार चलि रहलए

गजल

डॉ. जियाउर रहमान जाफरी
9934847941

अहाँ छी बड़ अभिमानी मीत
बुझि रहल छी ज्ञानी मीत

मिल गेल जखन हृदयसँ हृदय
की राजा की रानी मीत

अहाँसँ भेंट हमर जे भ' गेल
बनि गेल एक पिहानी मीत

हाथ उठे तँ नजरि नीचाँ
रहीम जकाँ के दानी मीत

दूर देशकेँ भाषा की अछि
हम जानै छी हानी मीत

गजल

ललित कुमार झा
7663903910

हरेक समस्याक समाधान रहिते छै
अपनो लोकमे किछु आन रहिते छै

बेसी लोकक विचार बपजेट देखबै
सभकेँ कोनो ने कोनो गुमान रहिते छै

जे पहुँचि चुकल बहुत दूर आगाँ धरि
तकरो पछुआयल मतिमान रहिते छै

बुझना जायत जे ई बड़ उदार छथि
ताहु लोकक स्वार्थक दोकान रहिते छै

कतेको जे चमकैत आभावान लागए
मोनक भीतरिया भयाओन रहिते छै

बुझी नहि ककरो बुरिबक एहि युगमे
'ललित' सभकेँ थोड़े ज्ञान रहिते छै

अनुप्रास

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक प्रयास

वर्षः 2, अंक : 2, जुलाइ-दिसम्बर 2020, मूल्य-30 रु.

संरक्षक
इन्द्र नारायण झा

परामर्शी
डॉ. तारानन्द वियोगी
धीरेन्द्र प्रेमर्षि
डॉ. कमल मोहन चुन्नू
ऋषि बशिष्ठ

प्रबन्ध सम्पादक
श्रीमती किरण झा
अजीत कुमार झा
9708705079

सम्पादक
दीप नारायण
9430583847

सहायक सम्पादक
कुमार आलोक
शशि कुमार शशि
अमित भारद्वाज

तकनीकी सहयोग
शेष नारायण
डॉ. कुमार इन्फोटेक, मधुबनी

सम्पादकीय कार्यालय
इन्द्र परिसर, लहेरियागंज
मधुबनी(मिथिला) बिहार-847211
मो.- 8862977228
ई-मेल : info@anupras.com
anuprasmadhubani@gmail.com

● सम्पादकीय सहयोग पूर्णतः अवैतनिक।

● पत्रिकामे व्यक्त विचार लेल सम्पादक उत्तरदायी नहि छथि। अनुप्राससँ सम्बन्धित समस्त न्यायिक मामिलाक फरिछोट मधुबनी न्यायालयक अधीन होयत।

● अनुप्रास लेल स्वामी, प्रकाशक श्रीमती गिरिजा नारायण द्वारा ज्ञान गंगा क्रीएशन्स, पटनासँ मुद्रित।

अनुक्रम

सम्पादकीय
2 : की रोटीक कोनो कानून छैक?

आलेख
3 : कखनहु आठ-आठटा कहारवाला पालकीमे बैसल त' कखनहु... : प्रा. डा. रामावतार यादव
7 : शिवशंकर श्रीनिवासक कथामे 'वेसेक्स' कथा लेखनक स्वरूप : डा. ललितेश मिश्र
9 : मैथिली-संताली संस्कार गीतमे समता मूलक ओ प्रगतिशील भाव : डॉ. अशोक अविचल
12 : रेलक पटरी पर छिड़िआएल रोटी : ईशनाथ झा
14 : महासंकटक एहि विकलांग दौरमे मोन पड़ैत छथि 'अष्टावक्र' : रूपेश त्योंथ
16 : 'कोरोना' मानव जातिक अस्तित्व लेल संकट : रामबाबू सिंह

संस्मरण
19 : हुनक आत्मामे बसल रहनि काव्य आ कला : केदार कानन
24 : मैथिली रंगनायक दयानाथ झा : डॉ. प्रकाश झा

कथा
26 : होमो युगमे चुलबुल पांडेक विवाह : विभा रानी
28 : फिरिस्त : चण्डेश्वर खाँ
29 : पसाही : शिवशंकर श्रीनिवास

व्यंग्य
32 : भोज : सुरेन्द्र लाभ

कविता
11 : बिनय भूषण
33 : महाकान्त ठाकुर/विरेन्द्र कुमार झा
34 : पंकज कुमार/निशाकर
35 : बिन्देश्वर ठाकुर/ रोहित यादव
36 : मनीष झा बौआभाइ/अशरफ राइन/पूनम झा 'मैथिली'
37 : विनीत उत्पल/सोनी नीलू झा

गजल/गीत
11 : वीरेन्द्र कुशवाहा
33 : अशोक अमन
37 : प्रियंका झा
38 : मनोज विद्यार्थी/रामेश्वर निशांत/अर्जुन प्रसाद गुप्ता 'दर्दीला'/डॉ. शुभ कुमार वर्णवाल
42 : गजेन्द्र गजुर

चर्चामे
39 : साहित्य अकादेमीक बहन्ने चर्चा : हितनाथ झा

साक्षात्कार
43 : प्रख्यात नाटककार महेन्द्र मलंगिया संग तारानन्द वियोगी आ ऋषि बशिष्ठक साक्षात्कार

बालबाड़ी

कथा
47 : दोस्त : वैद्यनाथ झा

कविता/गजल
48 : रमाकान्त राय 'रमा'/ मनोज कुमार झा/ विजय कुमार ठाकुर

सम्पादकीय

की रोटीक कोनो कानून छैक?

अनुप्रासक दोसर अंक अपनेक हाथमे अछि। एहि देशव्यापी घरबन्दीक बीच मौलिक लेखनसँ किछु समय कपचि प्रस्तुत अंकक तैयारीमे लगाओल अछि। ओना एहि बीच बहुत रास लेखनीसँ नीक-नीक साहित्य सृजन भेल अछि जे जनजीवन सामान्य भेला उत्तर सोझाँ अयबे करत। खैर, एखन सोझाँमे देश अछि। देश नहुँ-नहुँ लॉक-ऑनक दिस क्रमशः बढ़ि रहल अछि। हमरा लोकनिकेँ सेहो अपन जीवन जीबाक दृष्टिकोणमे किछु फेर-बदल क' लेबाक चाही। कारण, जँ जीयब त' कोरोनाक संग जीबय पड़त, जकर प्रभावसँ एखन समुच्चा दुनियाँक गति ठमकि सन गेल अछि। 'लोकल'सँ 'ग्लोबल' होइत एहि समयमे हमरा लोकनिक बीच एकटा शब्द 'सामाजिक दूरी' अपन पैर पसारि लेलक अछि। जे कि समाजक लेल कोनो वायरससँ बेसी मारुख अछि। एकर जिम्मेदार के? ...ई त' समयसँ अपनहि सोझाँ आबि जायत!

प्रश्न अछि जे ई मरकी, जाहिसँ समुच्चा देश तबाह अछि, तकर पसार के कयलक? राशनकार्डधारी आ कि पासपोर्टधारी? जँ सरकार समय पर विदेशसँ आवाजाही बन्न क' दितैक तँ 135 करोड़ जनताक ई हालति नहि होएतैक। राजमार्गक अलकतरा पर तरबाक चमड़ी घँसैत एहि देशक एकटा विशेष वर्गक की दोष? जाहि वर्गक पसेना पर देशक जीडीपी निर्भर करैत अछि!

एहि लॉकडाउनसँ सभसँ बेसी प्रभावित भेल अछि— दिहाड़ी, हप्ता वा कि महीना पर गुजर करय बला मजदूर। समाजक सभसँ गरीब लोक, नान्हिओटा आर्थिक झटकसँ जकर प्राण उधिया जाइत अछि, ओकरा सभक स्थिति एहन छैक जे ओ घरमे रहत त' भूखे मरत आ बाहर जायत त' मरकीसँ। एहि वर्गक लेल की रोटीक कोनो कानून छैक? की, हजार-पाँच सय टाका खातामे भेज देलासँ आ चारि गोट मास्क, एक गोट साबुनसँ हाथ धोला मात्रसँ एकर सभक दुनियाँदारी चलि जयतैक?

"समाजक सभसँ गरीब लोक, नान्हिओटा आर्थिक झटकसँ जकर प्राण उधिया जाइत अछि, ओकरा सभक स्थिति एहन छैक जे ओ घरमे रहत त' भूखे मरत आ बाहर जायत त' मरकीसँ। एहि वर्गक लेल की रोटीक कोनो कानून छैक? की, हजार-पाँच सय टाका खातामे भेज देलासँ आ चारि गोट मास्क, एक गोट साबुनसँ हाथ धोला मात्रसँ एकर सभक दुनियाँदारी चलि जयतैक?"

बिनु होमवर्क कयने सरकार द्वारा कयल देशव्यापी बन्दीक चलते गरीब-मजदूर वर्गक जीवनमे तबाही आयल अछि। भोजन आ दबाइ सन बुनियादी सुविधाक अभावमे अपन ठौर-ठेकान छोड़ि पलायन करबाक ई वीभत्स दृश्य सरकारक लापरवाही नहि अछि त' आर की?

एहनो समयमे, जखन एतेक दिनक घरबन्दीमे कारखाना बन्न रहल, दोकान बन्न रहलैक, बाजार भकोभन्न भ' गेल तखन एक मात्र खेतेटा बाँचल जतय उत्पादन होइत रहल। पर्व-त्योहार सेलिब्रेट करबाक समय नहि अछि एखन। एखन जरूरी अछि आर्थिक नीतिकेँ पटरी पर अनबाक। देशक जाहि किसान-मजदूरक जीवन तबाह भ' गेल, सैकड़ो किलोमीटर चलैत-चलैत जे मरि-खपि गेल, ओहि परिवारक लेल की विचार भेल? ई वएह किसान छथि जे खेती-बाड़ीसँ पर्याप्त अर्थोपार्जनक अभावमे, कोनो उद्योग-धंधा नहि होयबाक चलते, गाम-घर, परिवार-समाजकेँ छोड़ि शहर गेल छलाह पेट भरबाक खातिर।

जखन प्रधानमंत्रीजी भाषणमे मास्क, सोशल डिस्टेंस, थूक, साबुन, सेनेटाइजेशन, अक्षय तृतीया आ रमजान आदि शब्दक चर्चा करैत छथि त' ओ किसान फक्क रहि जाइत अछि जकरासँ बेसी महत्वपूर्ण रमजान आ चौठी चान भ' जाइत छैक! सवाल छैक जे जे समुच्चा देशक पेट भरि रहल छथि ओहि अन्नदाता दिस देखबाक पलखति किनको छन्हियो कि नहि?

जँ सरकारी योजनामे किसानक विषयमे एखनहुँ गम्भीरतासँ नहि सोचल गेल त' अहिना सभ गोटे शंख फूकैत रहब, थारी बजबैत रहब आ ओम्हर देशक अन्नदाता भूखसँ बिलबिला क' मरैत रहताह!

कखनहु आठ-आठटा कहारवाला पालकीमे बैसल त' कखनहु हौदा-कसल हाथीपर सवार एकगोट फिरिंगी मैथिली-सेवक : संक्षिप्त जीवनवृत्त

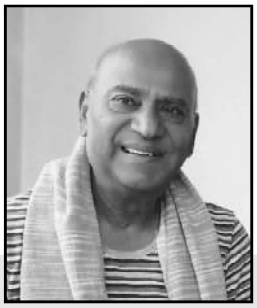

प्रा. डा. रामावतार यादव
काठमाण्डु, नेपाल
ramyadav1942@gmail.com

प्रसिद्ध भाषाविद्, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, नेपालक पूर्व उपकुलपति, तीन बेरि प्रज्ञा पुरस्कार विजेता आ कतेको ग्रंथक रचयिता प्राध्यापक डा. रामावतार यादवक अनेकहु अनुसंधानात्मक आलेखसभ नेपाल, भारत, अमेरिका, विलायत ओ जर्मनीमे प्रकाशित छनि।
ब्रिटिश काउंसिल छात्रवृत्ति, विलायत, फुलब्राइट छात्रवृत्ति, अमेरिका, ब्रिटिश काउंसिल भीजिटर, लण्डन, अलेक्जाण्डर फौन हुम्बोल्ट पोष्टडौक्टोरल सीनियर रिसर्च फेलोशिप, जर्मनी आदि प्राप्त कएनिहार प्रा. डा. यादव *मिथिला रत्न, मिथिला विभूति, पहिल शब्दकोशकार पंडित भवनाथ मिश्र साहित्य शिखर सम्मान* एवं *चेतना समिति ताम्रपत्र सम्मान*सँ सेहो सम्मानित छथि।

For seven months of the year he has pitched his tents beside a village, a grove or the ruin, sleeping under canvas or the open sky, rarely with a *pukka* or solid roof over the head. For company he has had only a learned Brahmin, a scholarly *pandit* drawn from the Hindu priestly caste who can read and translate Sanskrit for him, as well as a pair of clerks who handle his correspondence and half a dozen scouts who act as his eyes and ears. The rest of his camp is made up of servants, palanquin-bearers, *mahouts* (elephant-keepers), bullock-cart drivers, grass-cutters and matchlockmen.

Charles Allen, *The Buddha and the Sahibs, the Men Who Discovered India's Lost Religion*, 2002

1. प्राक्कथन

बात किछु पुरान अछि। भारतवर्षमे ईष्ट इण्डिया कम्पनी सरकारक विस्तार भ' गेल छल। स्कौटलैण्डक ग्लास्गो शहरक आसपासक ग्रामीण इलाकामे जनमल आ ग्लास्गोमे प्रारम्भिक शिक्षा तथा एडिनबड़ा विश्वविद्यालयमे डाक्टरी पढ़ाइ समाप्तकए **Dr. Francis Buchanan MD** विशुद्ध धनोपार्जन एवम् यशार्जनक तीव्र अभिलाषासँ अभिभूतभए देहातक डाक्टरी पेशाकेँ लात मारि समुद्री यात्रापर निकलि अनायास एकगोट पानीजहाजक कप्तानक Assistant Surgeon रूपेँ ईष्ट इण्डीज, मलाया, बर्मा आदि प्रदेशक यात्राकए 1794 ई. सितम्बर मासक 14 तारीखक दिन एकाएक पानीजहाज छाड़ि कलकत्ता बन्दरगाहक धरतीपर उतरि गेलाह। बीसहु वर्षधरि ईष्ट इण्डिया कम्पनीक वफादार नोकरभए **डा. फ्रान्सिस ब्युक्यानन** भारतक दक्षिणसँ उत्तर विभिन्न भूभागक यात्रा कए ताहि प्रदेशसभक विविध पक्षदिसि विस्तृत भौगोलिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक अध्ययन-सर्वेक्षण कएल— जे अद्यतन बहुमूल्य अछि, अनुसन्धेय अछि। विशेष रूपेण उल्लेख्य अछि हुनक 1807-1814 ई.क बेङ्गाल प्रेजिडेन्सी अन्तर्गतक कुल आठगोट जिल्लाक 'तथ्याङ्कगत सर्वेक्षण'— जाहि मध्य ब्युक्यानन मूलतः मेडिकल डाक्टर वा कहू जे Botanist होइतहु उत्तरी भारतमे (आ नेपालमे सेहो) बाजएजाएवाला **मिथिला** (पढ़ू **मैथिली**) सहित अनेकहु स्थानीय/प्रादेशिक भाषाक *Comparative Vocabularies* (1810) अर्थात् 'तुलनात्मक शब्द-संग्रह'क हस्तलिखित पाण्डुलिपि तैयार कएलैन्हि— ई हस्तलिखित पाण्डुलिपि अप्रकाशित रूपेँ British Library, Londonक India Office Recordsमे अनुरक्षित अछि एवम् सौभाग्यवश एकर आधिकारिक प्रतिलिपि हमरा लग सेहो अछि : विस्तृत विवरणहेतु देखू हमर प्रकाशनोन्मुख कृति (Yadav 2020, Forthcoming)।

प्रस्तुत आलेखक अभीप्सित इष्ट ताही स्कौटिश मैथिली सेवकक जीवनवृत्त ओ हुनक मैथिली शब्दकोशशास्त्रमे पुरोगामी एवम् अतुलनीय अवदानक संक्षिप्त वर्णन-विश्लेषण-समीक्षा करब थिक।

ओना, हमरा इहो ज्ञात अछि जे फ्रान्सिस ब्युक्याननहुसँ 2-3 वर्ष पूर्वहि ईष्ट इण्डिया कम्पनीक एकगोट अत्युच्च पदाधिकारी एवम् प्रकाण्ड संस्कृतज्ञ **Henry Thomas Colebrooke** (1807) अमरसिंह-विरचित प्रख्यात कृति *अमरकोश*मे उपलब्ध कुल 370 मैथिली शब्दक संगहि भारतभरिक अन्यान्य 12 गोट स्थानीय/प्रादेशिक भाषाक *Comparative Vocabulary*क एकगोट सुगठित एवम् विलक्षण देवनागरी लिपिमे हस्तलिखित पाण्डुलिपि तैयार कएने छलाह जे अद्यतन अशोधित एवम् अप्रकाशित रूपेँ British Libarary, Londonमे अनुरक्षित अछि ओ एहि गौरवशाली कृतिक आधिकारिक प्रतिलिपि हमरा लग सेहो अछि— जाहिमादे अनुसन्धान गतिमान अछि। ध्यातव्य जे एकगोट अति प्रख्यात आलेखमे Colebrooke (1801 : 225) अंग्रेजी भाषाक माध्यमे लिखल गेल दस्तावेजमे ग्रिअर्सनहुसँ पूर्व पहिलि बेरि ***मैथिल/तिरहुतीय*** (पढ़ू **मैथिली**) भाषाक उल्लेख कएने छलाह :

MAIT'HILA, or *Tirhutiya*, is the language used in *Mithila*, that is, in the *Sircar* of *Tirhut*, and in some adjoining districts, limited however by the rivers *Cust* (*Causici*) and *Gandhac* (*Ghandhaci,*) and by the mountains of *Nepal*; it has great afffinity with *Bengali*; and the character in which it is written differs little from that which is employed throughout Bengal. In *Tirhut*, too, the learned write *Sanscrit* in the *Tirhutiya* character, and pronounce it after their own inelegant manner.

मैथिली शब्दकोशशास्त्रमे एकगोट आओरो फिरिंगी **S. W. Fallon** (1879)क बहुमूल्य अवदानकहेतु द्रष्टव्य अछि गोविन्द झा (2010 : 7-11)।

तहिना, एहिठाम ई उल्लेख करब प्रासंगिक होएत जे कोलब्रुकक मार्गक अनुसरण कए **Subhadra Jha** (1939-40) बड़ौदासँ प्रकाशित *Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute* नामक प्रसिद्ध जर्नलमे वन्द्यघाटीय सर्वानन्द-विरचित *अमरकोश*क टीका-*टीकासर्वस्व*मे (1159 A.D.)-उपलब्ध कुल 300 मैथिली शब्दक मनोयोगपूर्वक संकलन ओ विशद् विश्लेषण प्रकाशित कएलैन्हि— ओना आब ई स्पष्ट बुझना जाइत अछि जे सुभद्र झा कोलब्रुक (1807)क British Library, Londonमे अनुरक्षित ओ अद्यतन अप्रकाशित पाण्डुलिपिसँ कोनहुना अवगत नहि छलाह।

तद्वत्, एम्हर आबि **शशिनाथ झा**(1984) 'अमरकोशक टीकामे उपलब्ध मैथिली शब्द' शीर्षकक पूर्ण-शोधित आलेख *मैथिली अकादमी पत्रिका*मे प्रकाशित कएलैन्हि— जाहिमे ओ सर्वानन्दक *टीकासर्वस्व* सहित श्रीकरोपाध्यायकृत *व्याख्यामृत,* अच्युतोपाध्यायकृत *व्याख्याप्रदीप,* चतुर्भुज शर्माकृत *नामलिंगानुशासनवृत्ति,* मुकुन्द झाकृत *अमरमैथिलभाषाविवृत्ति,* तथा चन्द्रधारी सिंहकृत *चन्द्रिका टीका* (चन्द्रधारी सिंह 2001) सन मैथिल विद्वानक बनाओल *अमरकोश*क बहुमूल्य टीकासभक गहन गवेषणा कएलैन्हि। पढ़लासँ अभिज्ञात होइत अछि जे शशिनाथ झा सुभद्र झाक वैदुष्यपूर्ण कृतिसँ कि त' पूर्णतः अनभिज्ञ छथि आ कि हुनक सन्दर्भ देबाक काजदिसि विमुख। पच्चीस वर्ष पश्चात् पुनर्प्रकाशित उपर्युक्त आलेखक परिमार्जित परिशोधित प्रारूपमे पर्यन्त शशिनाथ झा (2009: 44-65) Subhandra Jha (1939-40)क उल्लेख नहि कएल अछि, तखन Colebrooke (1807)क आ Sukumar Sen (1944)क त' कथे कोन। तहिना, हेमचन्द्रकृत *देशीनाममाला*मे उपलब्ध गोट 'शताधिक' मैथिली शब्द ओ ऐतिहासिक-भाषाविज्ञानमे तकर योगदानद' देखू योगानन्द झा (1988)।

शशिनाथ झा (2009)क चारि वर्ष पश्चात् **राम चैतन्य धीरज** (2013 : 24-25) वैदिक संस्कृतमे लिखित *ऋग्वेद*मे 50गोट मैथिलीक शब्दक उपलब्धताक दावा करैत एकगोट अति विवादास्पद/कलहपूर्ण ओ अविश्वसनीय अध्यर्थन प्रस्तुत कएलैन्हि— ओना एहि कृतिमे अग्रज अध्येता-अनुसंधाता सुभद्र झा, सुकुमार सेन, ओ शशिनाथ झाक अप्रतिम अवदानसभक कोनहु चर्च उपलब्ध नहि अछि। उदाहरणार्थ प्रस्तुत शब्दमध्य *ऋग्वेद*क किछु शब्द, यथा— काटब <*kata-ba*> cut-FUT-1/2HON 'I/You(HON) will cut'

<*kata-ba*> cut-INF/GERUND 'The act of cutting', तथा सुनू <sun-u> hear-IMP-2HON+1 '(YouHON) listen to me' स्पष्टतः काल, पुरुष, कक्ष, आदरार्थी आदि व्याकरणिक प्रत्यय (affixes)सँ अन्वित आधुनिक मैथिलीक समापिका क्रियारूप-सन प्रतीत होइत अछि। धीरजजीक अध्यर्थनसँ आभासित होइत अछि जे कालान्तरमे बहुत पाछाँ जनमल ओ **मागधी अपभ्रंशक** (अर्द्धमागधी अपभ्रंश नहि) पूर्वी शाखासँ निःसृत (देखू गंगानन्द सिंह 1950, Tsuyoshi Nara 1979, Tanmoy Bhattacharya 2016) मैथिली भाषाक व्याकरण— जाहि भाषाक नामहुक एकरूप अद्यतन स्थिर नहि भ' सकल अछि— अपन जन्महुसँ पूर्वक प्राचीन वैदिक संस्कृतमे लिखित *ऋग्वेद*क व्याकरणकेँ गम्भीर रूपेँ प्रभावित कएने अछि। जेना एतबा मात्र प्रशस्त नहि होअए, 6 वर्ष पश्चात् पुनः राम चैतन्य धीरज (2019) इहो कहि गेलाह अछि जे प्राचीन वैदिक संस्कृत आ नव्य भारतीय आर्यभाषा मैथिलीक जन्मकाल संगहि अछि। स्पष्टतः एहि कथनसभक पुष्टिहेतु बहुतराश अनुसंधानक अपरिहार्यता अछि— से सुधी पाठकजन बुझताह। अलमति विस्तरेण।

ओना आब ई सर्वविदित भ' गेल अछि जे पहिल मैथिली-भाषी विद्वान जनिका मैथिली भाषाक तुलनात्मक शब्द-संग्रह प्रस्तुत करबाक श्रेय प्राप्त छैन्हि ओ छथि भवनाथ मिश्र जे ईष्ट इण्डिया कम्पनीक राज्यकालहिमे ई. 1914मे *मिथिला शब्द प्रकाशः*

शीर्षक अन्तर्गत **मिथिला** (पढ़ू **मैथिली**), **हिन्दी, संस्कृत** भाषाक कुल 581 शब्दक त्रैभाषिक शब्द-संग्रह प्रकाशित कएने छलाह।

2. ब्युक्याननक संक्षिप्त जीवनवृत्त

फ्रान्सिस ब्युक्याननक आधिकारिक आत्मचरित वा जीवनचरित अद्यतन अनुपलब्ध अछि। ताहि हेतुएँ यत्रतत्रसँ संकलित सूचनासँ अभिज्ञात होइत अछि जे हुनक जन्म 15 February 1762क' Scotland प्रदेशक Bardowie estate अन्तर्गत Stirling countyक Branziet नामक स्थानमे भेल छलैन्हि, प्रारम्भिक शिक्षा ग्लास्गो शहरमे भेलैन्हि, तत्पश्चात् चिकित्सा शास्त्रक अध्ययनकए University of Edinburghसँ 1783मे MD डिग्री प्राप्त कएलैन्हि।

ग्लास्गो शहरक इर्दगीर्दक देहाती इलाकामे डाक्टरी पेशासँ अप्रसन्न ओ पिताक ऋण भार सतत् बढ़ैत देखि 32 वर्षक ब्युक्यानन खिन्नभए धनार्जनक उद्येश्यसँ पानीजहाज चढ़ि 14 सितम्बर 1794क' एकाएक भारतक कलकत्ता बन्दरगाह पर उतरि गेलाह। शीघ्रहि ईष्ट इण्डिया कम्पनीक Bengal Medical Serviceमे आबद्ध भए बीसहु वर्षधरि (1794-1814) भारतमे कार्यरत रहि ब्युक्यानन चिटागौङ्ग, मलाया, मैसूर आदि स्थानक स्थलगत अध्ययन-सर्वेक्षणकए प्रतिवेदन समेत प्रस्तुत कएल : ताहि क्रमेँ ओ 1802-1803मे नेपालक भ्रमणकए अनेकहु बहुमूल्य वनस्पतिक सङ्कलन कए गुप्त रूपेँ कलकत्ता पठाओल तथा नेपालक इतिहास सेहो लिखल। परञ्च, मैथिली-भाषी समस्त मैथिलजनहेतु सर्वोपरि उपादेय सूचना ई जे 11 सितम्बर 1807क' विज्ञप्ततः हुनका बेङ्गाल प्रेजिडेन्सी अन्तर्गतक कुल आठगोट जिल्लाक 'तथ्याङ्कगत सर्वेक्षण' करबाक अभिभारा भेटलैन्हि– जाहि मध्य ओ मैथिली सहित अन्य आठगोट भाषाक तुलनात्मक शब्द-संग्रह सेहो तैयार कएलैन्हि। प्रमाण साक्ष्य अछि जे ओ पूर्णिया जिलाक सर्वेक्षण त' कएलैन्हि परञ्च निजी कारणेँ घनीभूत रूपेँ मैथिली-भाषी जिला तिरहुत नहि जाए सोझे जंगलवाला जिला भागलपुर चलि गेलाह– आखिर ओ Botanist जे छलाह। तेँ दुर्भाग्यवश तिरहुत जिलाक स्वतंत्र सर्वेक्षण-प्रतिवेदन अनुपलब्ध अछि।

फ्रान्सिस ब्युक्यानन ई. 1815मे स्वदेश लौटि गेलाह, माएक मृत्यु पश्चात् ई. 1818मे माएक सर्वस्वक लोभेँ अपन पारिवारिक नाम 'ब्युक्यानन' बदलि माए Elizabeth Hamiltonक पारिवारिक नाम 'ह्यामिल्टन' राखि कानूनतः **फ्रान्सिस ह्यामिल्टन** भ' गेलाह, 59 वर्षक अधेड़ उमेरमे विवाह कएलैन्हि, आ 15 June 1829क' 67 वर्षक उमेरमे हुनक देहान्त भेलैन्हि।

3. ब्युक्याननक *मैथिली शब्द-संग्रह* : संक्षिप्त परिचय

फ्रान्सिस ब्युक्याननक हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे एहि शब्द-संग्रहक ने त' संकलयिताक नाम आ ने कोनहु शीर्षक देल गेल अछि, परञ्च ब्रिटिश लाइब्रेरी लन्दनद्वारा प्रदत्त Information Sheetमे स्पष्टरूपेण एकर रचयिता फ्रान्सिस ब्युक्यानन आ एकर शीर्षक *Comparative Vocabularies* रूपेँ प्रस्तुत कएल गेल अछि। तेँ एकर शीर्षक इएह स्थिर भेल।

एहि हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे **अंग्रेजी** भाषाक अतिरिक्त भारत आ नेपालक सीमावर्ती क्षेत्रक कुल आठगोट भाषाक शब्दसभ संगृहीत अछि, यथा हेन्दी (पढ़ू **हिन्दी**), मिथिला (पढ़ू **मैथिली**), खस/पहड़िया (पढ़ू **नेपाली**), **किरात**, **एयाकथुम्बा**, **मगर**, **मुर्मी** आ **सिकिमभुटिया**। प्रविष्टिसभ तत्तत् भाषाक नीचाँ देल गेल अछि। अर्थात् मूल प्रविष्टि अंग्रेजीमे दए तकर समरूप आन आठहु भाषामे रोमन आ देवनागरी लिपिमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। ब्रिटिश लाइब्रेरी लन्दनद्वारा प्रदत्त Information Sheetमे सूचित कएल गेल अछि जे एहि शब्द-संग्रहमे कुल 1759 शब्द समाविष्ट भेल अछि परञ्च गम्भीर गवेषणा पश्चात् ई आभासित होइत अछि जे जेँ कि किछु पृष्ठक पुनरावृत्ति भेल अछि तेँ शब्दक यथार्थ संख्यामे ह्रास भ' सकैत अछि। एहि शब्द-संग्रहक सभसँ विशिष्ट पक्ष ई जे शब्दसभक चयन/संकलन योग्य संग्रहकर्त्ताद्वारा (विशेषतः संस्कृतज्ञ ब्राह्मण जातिक 'Assistant'द्वारा जनिक नामक स्पष्ट उल्लेख अद्यतन अनुपलब्ध अछि) क्षेत्रगत अनुसन्धानकए कएल गेल अछि– ताहि हेतुएँ एकर आधिकारिकता संदेहशून्य अछि। ओना अधिकांश चयनित शब्दसभ बभनाह/संस्कृताह होएबाक प्रबल संभावना देखना जाइत अछि। ब्राह्मण संकलकक अतिरिक्त ब्युक्यानन स्वयं चयनित शब्दसभक पुनर्निरीक्षण करैत छलाह। औष्ट्रेलियामे कार्यरत विदुषी **Marika Vicziany** (1986: 649)क सम्मतिमेः "...but Buchanan used a number of alternatives: personal observation, questionnaires to Company servants, personal interviews with pundits, peasants and artisans, and the records of interviews conducted by his Indian assistants." तहिना, चारि वर्ष पूर्व प्रकाशित एकगोट गम्भीर अध्ययन-अनुसंधानमे **Mark F. Watson & Henry J. Noltie** (2016 : 19)क मतेँ ब्युक्यानन स्वयं अति साकांक्ष छलाहः "Buchanan trusted his own observations more than hearsay, but went to great length to garner data from local informants to back up what he saw... Buchanan would attempt to establiish reliability by considering the first-hand experience of his informants and their possible motives for distorting or withholding evidence, and lastly by cross-checking with other sources - a methodology familiar to modern anthropologists."

जेँ कि ई शब्द-संग्रह बहुभाषिक अछि तेँ एकर प्रविष्टिसभ देवनागरी लिपिक वर्णक्रमानुसार प्रस्तुत करब संभव नहि। स्वभावतः ई शब्द-संग्रह Ontological अछि, अर्थात् शब्दसभक चयन जीवन-जगतक विविध पक्षसँ भेल अछि– जेना कि अमरसिंहकृत विश्वविख्यात कृति *अमरकोष*मे कएल गेल अछि। द्रष्टव्य जे उनैसम

शताब्दीक पहिल दशकहिमे मैथिली भाषाक स्थिर एवम् स्तरीय वर्तनी प्रयुक्त देवनागरी लिपिमे हस्तलिखित ब्युक्याननक ई *Comparative Vocabularies* मैथिली भाषाक एकगोट अमूल्य निधि अछि।

4. उपसंहार

प्रथमतः, ई कहब समीचीन होएत जे भारत आ नेपालक मैथिली भाषाक अध्येता-अनुसन्धाता एवम् विद्वानलोकनि मैथिली शब्दकोशशास्त्र-विधामे प्रदत्त फ्रान्सिस ब्युक्याननक पुरोगामी तथा मौलिक योगदानकहेतु सतत् हुनक ऋणी रहताह।

द्वितीयतः, जौर्ज एब्राहम ग्रिअर्सनहुसँ (1881) एकहत्तरि-बहत्तरि वर्ष पूर्वहि ब्युक्यानन (1809-1810) **मैथिली ओ हिन्दी भाषाकेँ दू फराक एवम् स्वतंत्र भाषा बूझि** अलग-अलग शब्दावली प्रस्तुत कएने छलाह। स्पष्टतः ग्रिअर्सन मधुबनी क्षेत्रमे रहितहु भागलपुर आ पूर्णियामे कार्यरत अग्रज कर्मचारीक बहुमूल्य अवदानसँ अवगत नहि छलाह से बुझना जाइत अछि।

तृतीयतः, क्षेत्रानुसंधानकए, मैथिलीभाषी जनसमुदायक जीवन-जगतसँ प्रत्यक्ष रूपेँ सम्बद्ध विषयमादेँ, मैथिलीभाषीजनसँ अन्तर्वातालए एवम् प्रत्यक्षरूपेँ पूछि, तात्कालीन कथ्य मैथिली भाषाक चयनित-संकलित शब्दसभक आधिकारिक शब्द-संग्रह प्रस्तुत करबाक ई पहिल स्तुत्य प्रयत्न थिक। निस्सन्देह एहन वैज्ञानिक प्रयत्न अद्यतन अपेक्षिते रहल अछि।

निष्कर्षतः ओ अन्ततः, जँ भवनाथ मिश्र (1914) मैथिलीक पहिल मैथिली-भाषी तुलनात्मक-शब्दसंग्रहकार छथि, आ जँ दीनबन्धु झा (1950) मैथिलीक पहिल मैथिली-भाषी पूर्ण शब्दकोशकार छथि, तँ फिरिंगी फ्रान्सिस ब्युक्यानन (1810) हिनकासबहुसँ पूर्वक मैथिलीक पहिल तुलनात्मक-शब्दसंग्रहकार छथि।

सन्दर्भ सूची

झा, गोविन्द 2010 *अनुचिन्तन,* पटना : नवारम्भ।

झा, दीनबन्धु शाके 1872/1950 ई. *मिथिलाभाषाकोष,* इसहपुर : दीनबन्धु झा।

झा, योगानन्द 1988 "देशीनाममाला आ मैथिली," *भाखा* (पटना) 2: 10, 48-52।

झा, शशिनाथ 1984 "अमरकोशक टीकामे उपलब्ध मैथिली शब्द," *मैथिली अकादमी पत्रिका,* जून-जुलाई 4: 3, 44-65।

झा, शशिनाथ 2009 *निबन्धमन्दारमञ्जरी,* दीप-मधुबनी : तीर्थनाथ पुस्तकालय।

धीरज, राम चैतन्य 2013 *भाषा विचार आ मैथिलीक प्राचीन साहित्य,* पटना : शेखर प्रकाशन।

धीरज, राम चैतन्य 2019 *मैथिली भाषाक वैचारिक अस्मिता,* पटना : नवारम्भ।

मिश्र, भव नाथ 1914 *मिथिला शब्द प्रकाशः,* काशी : श्री भूपालचन्द्र वन्दोपाध्याय।

सिंह, गंगानन्द 1950 "अखिल भारतीय प्राच्यविद्यासम्मेलनक चौदहम अधिवेशनक मैथिली शाखाक अध्यक्ष कुमार गंगानन्द सिंहक अभिभाषण 1950," **मे** : देवेन्द्र झा (सङ्कलयिता, 1983) *भाषणत्रयी,* पटना : मैथिली अकादमी, पृष्ठ 37-73।

सिंह, चन्द्रधारी 2001 *नामलिंगानुशासनं नाम अमरकोषः (श्री चन्द्रधारीसिंहशर्मणा विरचितया चन्द्रिकाख्यव्याख्यया समलंकृतः),* दरभंगा : कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयः।

Allen, Charles 2002 *The Buddha and the Sahibs, the Men Who Discovered India's Lost Religion*, London: John Murray.

Bhattacharya, Tanmoy 2016 "Inner/outer politeness in Central Magadhan Prakrit languages: Agree as labeling," *Linguistic Analysis* 40: 3-4, 297-336.

Buchanan, Francis 1810 *Comparative Vocabularies*, Ms. British Librarty, London

Colebrooke, Henry Thomas 1801 "On the Sanscrit and Pracrit languages," *Asiatick Researches*: 7, 199-231.

Colebrooke, Henry Thomas 1807 *APAC MSS IO/San. 156-157*. British Library, London

Grierson, George Abraham 1881 *An Introduction to the Maithili Language of North Bihar, Part 1*, *Grammar,* Calcutta: Asiatic Society of Bengal.

Jha, Subhadra 1939-40 "Maithili equivalents to vernacular words found in Sarvanand's commentary on Amarakosa," *Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute* (Baroda, India) 21: 1-2, 106-114.

Nara, Tsuyoshi 1979 *Avahattha and Comparative Vocabulary of New Indo-Aryan Languages,* Tokyo, Japan: Institute for the study of Languages and Cultures of Asia and Africa.

Sen, Sukumar 1944 "New Indo-Aryan vocables in Sarvananda's *Tikasarvasva,*" *Indian Linguistics* 8:4, 184-209.

Vicziany, Marika 1986 "Imperialism, botany and statistics in early nineteenth-century India: The surveys of Francis Buchanan (1762-1829)," *Modern Asian Studies* 20: 4, 625-650.

Watson, Mark F. & Henry J. Noltie 2016 "Career, collections, reports and publications of Dr Francis Buchanan (Later Hamilton), 1762-1829 : Natural history studies in Nepal, Burma (Myanmar), Bangladesh and India, Part 1," *Annals of Science*, 1-33.

Yadav, Ramawatar (ed. 2020 **Forthcoming**) *Historiography of Maithili Lexicography & Francis Buchanan's* ***Comparative Vocabularies****: Facsimile Edition of the British Library, London Manuscript*, Darbhanga: Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation.

•

तकनिकी कारणेँ डाइक्रिटिकल चिन्हक प्रयोग नहि कएल गेल अछि।

- सम्पादक

शिवशंकर श्रीनिवासक कथामे 'वेसेक्स' कथा लेखनक स्वरूप

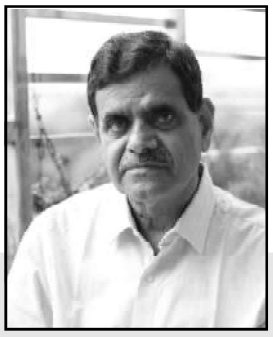

डा. ललितेश मिश्र

सहरसा, मधुबनी
सम्पर्क : 8877999177

किरण साहित्य सम्मानसँ सम्मानित डा. ललितेश मिश्र। मुख्यतः समीक्षा ओ कथा लिखैत छथि। *'प्रस्तावना'* समीक्षात्मक निबंध-संग्रह तथा *'बीच वैतरणीमे'* कथा संग्रह प्रकाशित छनि। *'काल सारथी', 'आखर अनन्त'* तथा *'सत्यसंध बबुआ खां'* पोथीक सम्पादन कयने छथि। बी. एन. मण्डल विश्वविद्यालय केर स्नातकोत्तर अंग्रेजी विभागक अध्यक्ष तथा मानविकी एवं छात्र कल्याण संकायाध्यक्षक पदसँ अवकाश प्राप्त छथि।

आंग्ल साहित्यमे 'वेसेक्स' कथा ओ उपन्यास लेखन कहि क' जे साहित्य रचित अछि ओकर बेस प्रचलन आ प्रसिद्धि अछि। ई महारानी विक्टोरिया(1837-1901) कालीन साहित्य कोष थिक। 63 वर्षीय ई राजत्व काल द्रुत गतिएँ इंगलैंडमे विकास ओ चातुर्यक लेल विश्व भरिमे लोकक इर्ष्य बनल छल। एहि कालमे विश्वक पहिल औद्योगिक क्रान्ति ओ प्रसिद्ध मानवशास्त्री, डार्विनक मानवक उत्पत्ति सम्बन्धी सिद्धान्त विमर्शक केन्द्र बनल छल। परन्तु इएह ओ समय छल जखन ग्राम्य जीवनक अवसान भ' तकर शहरीकरणक तेजीसँ उदय होइत विस्तृतिकेँ पौलक। ग्राम्य जीवनक संस्कार, संस्कृति, पारंपरिक सोच-व्यवस्था-पद्धति अघातित होम' लागल छल।

एहने सामाजिक ओ सांस्कृतिक पृष्ठभूमिमे वेसेक्स साहित्यक प्रादुर्भाव भेल जकर उद्भावन टामस हार्डी(1840-1928) कयल तथा विक्टोरियन यथार्थवादी रचनाकार कहि विश्व भरिमे ख्यात् भेलाह। वेसेक्स हुनकहि कल्पना प्रसूत क्षेत्र थिक जाहिमे दक्षिणी-पश्चिमी इंगलैण्डक डोरसेट, सामरसेट, हैम्पशायर, विल्ट-शायर आदि ग्रामीणन इलाका अबैछ आ तकरहि जन-जीवनक दुःख-दैन्य, हास-परिहास, सांस्कृतिक आ पारंपरिक मूल्यक क्षय आ मानव मूल्य रहित जीवन बोध वेसेक्स साहित्यक मूल स्वर बनि गेल जकर अभिव्यक्ति टामस हार्डीक कथा ओ उपन्यासमे मर्मभेदी रूपेँ भेल अछि।

हार्डीक कथा लेखनमे वर्ग विभेद, विवाह, स्त्री-पुरुषक संबंध आ तकरा प्रति सामाजिक दृष्टिकोण, सामान्य लोकक निर्धनता आ प्रचुरता, हुनका लोकनिक मध्य प्रसृत किंवदन्ती, रीति-रीवाज ओ ऐतिहासिक परम्परा आदि वर्ण्य विषयक रूपमे आएल अछि। वेसेक्स जन-जीवन, ओकर आशा-आकांक्षा, विश्वास-अंधविश्वास, भाग्यवाद, विडम्बनाकेँ देखि, पढ़ि, गुनि अन्ततः ओ इहो मानलनि अछि जे 'हैप्पीनेस इज बट एन ओक्केजनल इपिसोड इन द' जेनेरल ड्रामा आफ पेन दैट इज लाइफ' अर्थात वेदनामय मानव जीवनमे प्रसन्नता, सुखक बोध यदा-कदा अथवा असामयिके होइछ। ई बूझब अप्रासंगिक नहि होएत जे एहि वेसेक्स साहित्यक दृष्टिबोधक व्यापक प्रभाव विश्वक आन साहित्यक अतिरिक्त भारतीय भाषा साहित्यहु पर पड़ल। मैथिली साहित्यमे 1960 ई.क पश्चात ई प्रभाव बहुलतासँ काव्य ओ कथा साहित्यमे दृष्टिगोचर होम' लागल, मुदा, से बहिरंगे धरि, फुटकरे रूपमे, अस्थायी ओ असंगठित स्वरूपहिमे। परम्पराक विखंडन, सांस्कृतिक मूल्यक क्षरण, भोगवादी प्रवृतिक जन्म, श्रमिक, कृषक केर इर्ष्या-द्वेष, प्रेम, उद्वेग आदि एहि अवधिमे सेहो प्रतिबोधित भेल, किन्तु, तकर स्वरूप कदाचित उर्जस्वल ओ व्यापक नहि। उक्त दृष्टिबोधक तार्किक विस्तृति, व्यापकता, प्रसार ओ वैचारिक एकतानताक सुसंगत परिचय मैथिली साहित्यमे 1980 ई. उपरान्त प्रथम-प्रथम शिवशंकर श्रीनिवासक कथा लेखनमे किछु उत्परिवर्तित रूपमे दृश्यमान होइछ।

शिवशंकर जीक असंग्रहित फुटकर कथा सभकेँ छोड़ि एखन धरि सहयोगी प्रकाशन त्रिकोण(1986) सहित चारि गोट कथा संकलनक प्रकाशन भेल अछि जाहिमेसँ 'त्रिकोण'क अतिरिक्त 'गामक लोक'(2005) आ 'गुण कथा'(2014) हमर दृष्टि पथ पर आएल अछि जाहि आधार पर ई निःसंकोच कहल जाए सकैछ जे हार्डीक वेसेक्स सदृशे हुनक समस्त कथाक प्राण तत्व थिक गाम, ओकर संस्कृति ओ परम्परामे बाजारवाद, भोगवादक प्रभावेँ आएल दूषण, मानवीय मूल्यक अवमूल्यन, जनमानसक प्रकृति कोप ओ सामाजिक वर्चस्ववादी व्यवस्थासँ उपजल असंतोष आ संघर्षक भाव। प्रश्न उठैछ जे शिवशंकर जीक गाम कोन थिक

लोहना, पाही, भखराइन, नवटोल, राँटी, बनगाँव, महिषी, इसहपुर, नवानी, पचही आदि कोनहु मिथिलांचलक गाम? नहि, नहि... ओ त' टामस हार्डीक एकटा कोनहु क्षेत्र विशेषक गाम नहि अपितु समस्त भारतक दुःख-दैन्य, हर्ष-विषाद, संघर्ष ओ जिजीविषासँ आपूत ग्राम्य जीवन थिक, ग्राम्य संस्कृति ओ परम्पराक दर्शन थिक। कथा लेखक ओतहि रूढ़ भेल संस्कृतिक यौक्तिकरण (रेशनलाइजेशन)क प्रयास देखैत छथि (सिनुरहार), ग्राम्य ओ नगरीय जीवनक जीवन मूल्यक स्तर पर पार्थक्य देखबैत छथि (गुण कथा, मनुक्ख नदी थिक) परम्पराक संघर्षसँ उद्भूत सामाजिक चेतना (सहरजमीन), मानव सुलभ दमित रति भाव (जमुनियाँ धार), वस्त्र रति (रुमाल)केँ अदभुत कौशलक संग उपस्थापित करैत छथि। मुदा, गामक दुःख, यंत्रणा, परिताप हुनक कथा साहित्यक स्थायीभाव अछि आ एकर चित्रणमे कथा वस्तुक एकतानता, यथार्थताक उदघाटन, सृजित पात्रक विश्वसनीयताक लेल अधुनातन साहित्यिक प्रविधिक, यथा, दूर मनोदृष्टि (फ्लैशबैक), मनोवैग्यानिक प्रतिरक्षण परक (डिफेंस मेकेनिज्म) तकनीकक उपयोग अत्यंत सूक्ष्मताक संग करैत छथि।

अंग्रेजी साहित्यमे विक्टोरिया कालीन प्रसिद्ध कथा रचनाकार चार्ल्स डिकेंसकेँ 'चरित्र सृष्टि कर्मक महान वणिक' (ग्रेट कैरेक्टर मोंगर) किछु आलोचक कहल अछि। मैथिली कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासक कथा सभहिक, यथ—*गुण कथाक अंजनी देवी, दक्षिणाक काशी, सहरजमीनक बलदेव, रूमालक बड़ा साहेब, रसक अर्थक जयप्रकाश वर्मा, अनुरागक बुच्ची दाइ, मनुक्ख नदी थिकक श्याम जी, महतोक बहुरियाक गुलबिया, जमुनियाँ धारक सलमा,* कथानायकक पत्नी आदि केर चरित्रक विलक्षणता, ओकर संघर्ष ओकर मानवीय स्वरूप पर जँ सूक्ष्मतासँ विचार करब त' विदित होएत जे चरित्र सृजनमे ओ केहन अप्रतिम वणिक चातुर्यक परिचय देल अछि। कदाचित से चार्ल्स डिकेंसहुक पात्र सभसँ उपर प्रतीत होएत। अंजनी देवीक प्रगतिशील, परम्परा ओ वैग्यानिकताक समन्वयात्मक स्वरूप, काशीक आर्थिक अकिंचनता, अंधविश्वाससँ उद्भत पराभव, बलदेवक सामाजिक संघर्ष गाथा, बड़ा साहेबक वस्त्र रति, गामक रस ओ आनन्दक रसक व्याख्याता जयप्रकाश वर्मा, बुच्ची दाइक संस्कृति ओ संबंध मोह, श्याम जीक नव संस्कृतिवादसँ उत्पन्न मोनक विषण्णता, गुलबियाक जीवन संघर्ष ओ अवसाद, यौवन, सौंदर्य, उन्मुक्त झरना, जमुनियाँ धारक उद्दाम प्रवाहक प्रतीक बनलि सलमा जे उपेक्षिता रहलहुँ सन्ताँ 'खुल्ला करयबा'सँ परहेज करैत कथानायकक रति भावक उद्दीपन बनैछ आ हुनक अपन पत्नी लग क्षतिपूरक व्यवहारक कारक बनैछ उत्तम चरित्र सृजनक उदाहरण थिक। हमरा एहन लगैछ जे स्त्री चरित्र निर्माणमे कथाकारक प्रतिभा पुरुष पात्रक गढ़निक तुलनामे बेसी निखरल प्रतिबोधित होइछ जे हुनक मैथिलत्वक परिचायक थिक। 'जमुनियाँ धार', 'मनुक्ख नदी थिक', 'रुमाल', कथाक मनोवैज्ञानिक अनुशीलन कयलासँ मानव मोनक बहुतो दमित ओ अग्यात पक्ष उद्घाटित होइछ। जमुनियाँ धारमे पात खड़ड़निहारिक प्रति मानव सुलभ रति भाव, मनुक्ख नदी थिकमे माताक जीवन दशाक स्थितिमे मातृ रति (इडिपस कम्प्लेक्स)क अग्यात प्रेम भाव प्रदर्शनक संकेत, रुमालमे परोक्ष रूपेँ परिलक्षित बड़ा बाबूक पत्नीक बनाओल रुमालमे वस्तु रतिक भाव असाधारण मनोविश्लेषणक विषय बनैत अछि आ से मैथिली कथाक विकास द्योतित करैत अछि। तहिना, सिनुरहारमे नवयौवनाक वैधव्यक विषम ओ दुर्वह स्थितिमे जड़ बनल संस्कृतिक बुद्धि वैशद्यसँ यौक्तिकरणक पुनर्विवाहक मार्ग प्रशस्त करब ओ तकरा सामाजिक स्वीकृति प्रदत्त करब मैथिली कथा साहित्यक बहुत पैघ उपलब्धि थिक। कथाकारक वैशिष्ट एहि कथामे ई अछि जे ओ कतहु धर्म सुधारक अथवा समाज सुधारकक रूपमे ठाढ़ नहि छथि, मुदा, कथाक चरित्रक माध्यमे जे विषय वस्तु प्रस्तुत कयल अछि तकर अभिप्रेत लक्ष्य तँ सैह थिक। ओना इहो कहि सकैत छी जे एकटा मार्गक संधान कयल गेल अछि।

'गामक लोक' कथा संग्रहमे कथाकार अपन वक्तव्यमे कहनहुँ छथि : 'घटना घटैत अछि। ओहि घटनाकेँ हम अपन इच्छा तक ल' जाइ छी। जे रस्ता घेरल छै, ओहि रस्ताक ढ़ाठकेँ हटा रस्ता बनब' चाहै छी। ओहि पर विचार भ' सकैए। विचार करू।...'

शिवशंकर जीक कोनहु कथा लेल जाए ओहिमे दूर मनोदृष्टि (फ्लैशबैक)क तकनीकी प्रविधिक उपयोग अनिवार्यतः होइतहि अछि। एकर उद्देश्य मात्र चरित्रकेँ विश्वसनीय बनाएब थिक, व्यतीत घटना, परिस्थितिकेँ सोझाँ आनि कथ्यक एकात्मकताकेँ सिद्ध करब थिक जे कथाकारक कौशल कहाओत।

एहिमे संशय नहि जे वर्तमान मैथिली कथा साहित्यमे कतोक उल्लेखनीय गुणक कारणें शिवशंकर श्रीनिवासक कथा रचना विरल अछि। हुनक रचना सत्यतः आडम्बर ओ छद्मरहित अछि, पाठकक मोन मस्तिष्ककेँ झकझोरैत अछि।

•

अगिला अंकक आकर्षण—

- अशोक
- सुभाष चंद्र यादव
- नचिकेता
- विद्यानंद झा
- सुकान्त सोम
- उदय चंद्र झा विनोद
- धीरेन्द्र प्रेमर्षि
- सुस्मिता पाठक
- पंचानन मिश्र
- कृष्णमोहन झा
- रमेश रंजन
- लक्ष्मण झा सागर
- निक्की प्रियदर्शिनी
- अभिलाषा
- डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा
- रघुनाथ मुखिया
- विकास वत्सनाभ
- दुर्गानन्द मंडल

एवं अन्य...

मैथिली-संताली संस्कार गीतमे समता मूलक ओ प्रगतिशील भाव

डॉ. अशोक अविचल

रहुआ संग्राम, मधेपुर, मधुबनी
सम्पर्क : 9006056324

कोल्हान विश्वविद्यालय चाइवासा झारखण्डक कुलानुशासक आओर प्रवक्ता आ मैथिली एडवाइजरी बोर्डक संयोजक डॉ. अशोक अविचलक साहित्य साधनाक यात्रा बड़ पैघ छनि। मैथिली, हिन्दी आओर संतालीमे 16 गोट पोथी प्रकाशित छनि। मैथिली त्रैमासिक पत्रिका *कचोट, झारखण्डक सनेस* आ *झारखण्ड वाणी* हिन्दीक सम्पादक रहि चुकल छथि। फिलहाल मिथला सांस्कृतिक परिषद द्वारा प्रकाशित *संस्कृति* पत्रिकाक सम्पादक छथि। *इस्पात भारती सम्मान* 2013, *विदूषक सम्मान, भाषा रत्न सम्मान* 2014 आओर *साहित्य सेवी सम्मान* 2011सँ सम्मानित छथि।

मैथिली भाषाक अभ्युदय देशिल वयनाक रूपमे भेल अछि लोक भाषाकेँ साहित्यिक स्वरूप प्रदान करवाक प्रथम सुनियोजित प्रयास मिथिलामे भेल। संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान राजमंत्री, विद्यापति ठाकुर जखन देशिल वयनाक रूपमे अवहट आ मैथिलीमे काव्य रचना प्रारम्भ केलैन त' तत्कालीन विद्वत समाजमे निन्दनक शिकार भेलाह। मुदा ओ देशिल-वयनाक विकासक प्रति प्रतिबद्ध रहलाह। परिणाम स्वरूप मैथिलीये टा नहि अपितु, बंगला, उड़िया, असमी, हिन्दी आदि लोक भाषामे साहित्य रचनाक प्रवृति पनपल। विद्यापति उदघोष केलनि जे— *बालचंद विज्जावई भाखा/दुहुन सग्ग गइ दुर्जन हासा/ओ परमेसवर हरि सिर सोहइ/इणिच्चइ ना अर मन मोहेइ।*

तात्पर्य जे विद्यापतिक भाखा आ द्वितीयाक' चान अर्थात बालचंदके दुर्जन लोकनिक निंदास कुनू अवधात नहि हेतैक। ई दुनू आगा बढ़िते जेतै कियेत द्वितीयाक चान परमेश्वर महादेवक माथपर विराजैत अछि आ विद्यापतिक भाषा निच्चइ अर्थात आमजनक मनकेँ मोहबाक क्षमता रखैत अछि।

मिथिलामे लोक साहित्यक प्रशस्त परिपाटी अछि। लोक साहित्य लोक जीवनक प्राण होइत अछि। संस्कृतिक रक्षा आत्माभिव्यक्ति, स्वाभिमान आदि विषयकेँ समेटने ढ़ेर रास गीत उपलब्ध अछि। उत्सव प्रिय मिथिलामे प्रायः सोलहो श्रृंगारक गीत उपलब्ध अछि। जाहिमे समाज संस्कृतिक परिष्कारक विमर्श भेटैत अछि। मिथिलामे एकटा कहवी अछि विवाहसँ विधि भारी ई प्रायः एहि कारणे अछि जे विवाह आ उपनयनक कैकटा उप विधान अछि। ओहि निमित लोक संस्कारक गीत भरल परल अछि। महाकवि विद्यापति लोक व्यवहारक संस्कार गीत लेल प्रसिद्ध अछि। संस्कार गीत सभ तत्कालीन समाज आ संस्कृतिक प्रगतिशील तत्व केँ सरियबैत अछि।

विवाह संस्कारसँ सन्दर्भित हुनक गीत सभ महादेव आ पार्वतीक विवाहक बहन्ने अनमेल विवाह पर प्रहार करैत अछि। मजगुतीसँ एहि समस्याकेँ स्वर दैत अछि आ समाजकेँ सोचबा लेल विवश करैत अछि। नारद राजाक बेटी पार्वतीकेँ विवाह जंगलमे रहनिहार अवधुत महादेवसँ क' दैत छनि ई अनमेल विवाह गौरीमाइ मानाइनकेँ किन्नहुँ स्वीकार नहि छनि। ओ घटक नारदकेँ अवाच कथा कहय लगैत छथि, हुनक मन तामसे माहुर भ' गेल छनि आ विद्यापतिक शब्दमे मिथिलाक संस्कार गीत मुखर भ' उठैत अछि— *नारद बड़अजगुत अहाँ कैलहुँ/धीया ले केहन वर खोजलहुँ ना/धीया जुगुत वर कतहु नहि भेटल/घर धुरि चलि अबितहुँ ना/नारद बड़ अजगुत अहाँ कैलहुँ ना/सम्पतिमे सम्पति छन्हि बुढ़वा बरदबा/मृगछाले टा ओढ़नमा ना/नारद बड़ अजगुत अहाँ कैलहुँ/धीया ले केहन वर खोजलहुँ ना।*

कनिया मायकेँ मन रहैत छैक जे हमर बेटीकेँ नीक घर-वर होय मुदा समाजमे कैक प्रकारक कुप्रथा प्रचलित अछि। बुढ़ वरक विवाह कम बरखक कान्यसँ होइत छल मुदा जन चेतनाक एकटा भाग एकर विरोधमे छल ओ एहि प्रथाक उन्मूलन करै चाहैत छल ओ मुदा विवसता छलैक बेटीक मायसँ बेसी बेटीक मोनक गप आरके बुझि सकैत छल आ गौरीक मायक मुहे गौरीक व्यथा फुटि परल— *गे माइ हम नहि आजु रहब अहि आँगन/जौं बुढ़ होयत जमाइ गे माइ/एक त' वैरिन भेल विध-विधाता/दोसर धियाकेँ बाप गेमाइ/तेसर*

वैरिन भेल नारद ब्रह्मण/खोजि आनल बुढ़ जमाइ/गे माइ हम नहि आजु रहब अहि आँगन/जौं बूढ़ होयत जमाइ/गे माइ अरिपन नीपल पुरहल फेकल/फेकल चौमुख दीप आगे माइ धियालय/मनाइन मंदिर नीपल जुनि कियो /गाबू गीत, गे माइ।

कनियाँक माइयेटा नहि सखि-वहिनपा परिछन करैक छैक। ओहो सब डेराइत अछि। आ अनमेल विवाहक विरोधमे कनियाँक मायक भावनाक संग ठाढ़ होइत अपन स्वर मिलबैत अछि— *वहिना गे कोनाकेँ परिछब गौरीकेँ बूढ़ वर गे/ होइये हमरा डर गे ना/वर के चादरो न धोती एकटा बान्हल छै लंगोटी/वहिना गे सौंसे देहमे साँप छै सहरल/ गे होइय हमरा डर गे ना.../वर के भूत-प्रेत वरियाती/देखकेँ धरकैय छाती/वहिना गे जटासँ वहै गंगा जी के धार गे/होइय हमरा डर गे ना/वरकेँ चोटकल-चोटकल गाल, बुढ़वा देखैमे कमाल/वहिना गे सौंसे देहमे भस्म छै लेपल गे/होइय हमरा डर गे ना/वहिना गे कोनाकेँ परिछब गौरी के बुढ़ वर गे/होइय हमर डर गे ना।*

दहेज प्रथा समाजिक कोढ़ि अछि मुदा लोक प्रतिष्ठाक वले ई सर्वत्र चतैर आ पसैल गेल अछि। मिथिलाक संस्कार गीत विवाहक विविध अवसर पर व्यंग्यक स्वरमे गाबि उठैत अछि। एतय लोक धाराक प्रगतिशील भाव प्रत्यक्ष भ' उठैत अछि। संस्कार गीतक माध्यमे वरक बापकेँ बाप द्वारा बेचबाक प्रति सजग करैत अछि— *वर यौ मिथिलामे आबिकेँ बिका गेलौं यौ/अहाँकेँ माय पियेलक दूध/अहाँक जोड़लक सबटा सूद/अहाँक बाप बरद बनाकेँ/ हाट चढ़ाकेँ बेच लेलक यौ/बर यौ मिथिलामे आबिकेँ बिका गेलौं यौ/अहाँ चौक पर रोकलौं गाड़ी/तखन लड़की केलौ पुछाड़ी/हम बेटी बला लचारी/नहित भरि खुअबितौ यौ/बर यौ मिथिलामे आबिकेँ बिका गेलौं यौ/अहाँकेँ ससुर भेल बाप/पूरेलक अहाँक मनक पूरा आस/अहाँ अपने छी कने नीक/नै त' जेल भेजवैतौं यौ/अहाँ माय बापसँ नाता तोरि लिअ यौ/वर यौ मिथिलामे आबिकेँ बिका गेलौं यौ।*

मिथिलाक संस्कार गीतमे वसुधैव कुटुम्बकमक भाव बेस प्रभावी अछि। प्रयोजन कुनू हो ओकर प्रारम्भ सुभक गीतसँ होइत अछि। जाहिमे सर-समाज, देव-पितर सभक शुभ अर्थात नीक कल्याणक कामना कएल गेल अछि— *एलै शुभके लगनमा शुभे हे शुभे/आजु मंगलके दिनमा शुभे हे शुभे/आजु दशरथ अंगनमा शुभे हे शुभे/शुभे बोलू आजन शुभे बोलू वाजन/शुभे बोलू, नगरक लोक/एलै शुभके लगनमा शुभे हे शुभे /उपर देव लोक शुभे निचे पितर लोक शुभे /सब सखि मिल कहियौ माइयो शुभे/सब सखि मिलि कहियौ शुभे हे शुभे/एलै सुभके लगनमा शुभे हे शुभे।*

संताली संस्कार गीतमे समता मूलक ओ प्रगतिशील भाव

संताल समाज प्रगतिशील समाज अछि। लोक चाहे संताल समाजकेँ अविकसित तथा अशिक्षित कहौ मुदा सत्य त' यैह अछि जे समाजक संस्कार-गीत आ समतामूलक व्यवहार तथाकथित सभ्य आ शिक्षित समाजसँ बेसी प्रगतिशील अछि। पूरा देशमे जखन बाल-विवाहक परीपाटी छल तखनो संताल समाजमे एकर प्रचलन नहि छल। बाल विवाहक निषेध छल। जाहि समाजमे हजारों साल पहिनेसँ बाल विवाह निषेध हो ताहि समाजक सामाजिक विचारक प्रगतिशील तत्वकेँ सहजे अकानल जा सकैत अछि। अहुना संताल समाजमे लड़काक बाप लड़की तकय अछि अपना बेटा लेल। एतय वरकेँ दहेज नहि अपितु कनियाँक मायकेँ वधु मुल्य देल जाइत अछि। कनियाँकेँ मायकेँ दूध पीबा लेल गाय और बापकेँ खेती लेल वरद देल जाइत अछि। अहिना संताल समाजमे जन्म संस्कार बेटा-बेटी दुनूकेँ कएल जाइत अछि। जखन कि प्रायः सभ्य समाजमे बेटे टाक संस्कार होइत अछि बेटीकेँ नहि।

अवैध संतानक कुनू भावना संताल समाजमे नहि अछि। बच्चाकेँ इश्वरीय देन मानल जाइत अछि। जौँ कुनू कुमाइर कान्याकेँ संतान भ' जाइत छैक ओकर जन्म संस्कार माझीकेँ नाम से करा देल जाइत अछि। जेना ओ तथाकथित सभ्य समाजकेँ मुह दुसैत कहैत हो माय बापक अबैध कर्मक सजा संतानकेँ किएक। माय बापक सम्बन्ध अबैध भ' सकैत छैक। बच्चा कतहु अवैध होइ? ओ त' इश्वरीय देन अछि।

संताल समाजमे बाल विवाह नहि होइत अछि। एहि अवसरक गीत कुड़ी गेल ओक्तेयाक सेरेञ कहल जाइत अछि। कन्या देखवाक समयक ई गीत थिक। पूर्वहि उल्लेख भ' चुकल अछि जे वर पक्ष कनियाँ तकवाक लेल जाइत अछि एहने सन एकटा वरागत कुनू गाम पहुँचल छथि। कुनू लड़कीकेँ देखवाक लेल। जाहि लड़कीक ओ देखबाक लेल आयल छथि ओ वयसमे छोट अछि। संताल परम्पराकेँ अनुरूप एखन विवाह योग्य नहि अछि। घर पर अवयस्क कनियाँकेँ देखवाक लेल कुटुम्बक आगमनसँ कन्याक पिता आ घरक लोक चिन्तामे परिजाइत अछि। दू प्रकारक चिन्ता छैक। एतेक छोट वयसमे विवाहक लेल हँ नहि कहल जा सकैत अछि। आ नहि कहि आगत पाहुनक अपमान करू इहो संस्कार विरुद्ध गप, त' बीचक रास्ता निकालल जाइत अछि। तेँ गीतद्रिमे बेटीकेँ कहल जाइत अछि जे अंगनाकेँ बहारि ले आ बाहरन कुड़ा-कड़कट आ चुल्हाकेँ छाउड़ दलान पर जाकेँ फेक आ। पाहुँन अपने बुझि जेतै जे अपसगुन भ' गेल आब विवाह नहि हेतै। प्रस्तुत अछि एहने प्रगतिशील भावक संवाहक कान्या निरीक्षनक समयक एकटा गीत— *काटिज चुलूं गिद्रां पेड़ा को लागावेन/चेका लेका तेलां वां आकोवा/राचा माय जोगमे तोरोज माय गिडिमे/सागुन वाड़े माय आलो हुयूक्।*

संताल समाज एकटा उदार समाज अछि एतय लड़का-लड़की दुनूकेँ अपन प्रेम प्रकट करबाक अधिकार छैक पिता भाइकेँ लेल कनियाँ ताकय जाइत छैक भाइकेँ ई ज्ञात होइत

छैक त' ओ घबरा जाइत अछि आ गीतहिमे कहै अछि जे आब हम की करू बाबा कनियाँ ताकए गेल छथि हमर त' नदीक ओइकात एकटा लड़कीसँ प्रेम अछि। ओकरासँ विवाह करबाक अछि। बाबा जौ गिर' बान्हि देतै त' हम की करबै। एहिना कोनो लड़कीक भाइ काज करबाक लेल पहाड़ पर गेल छैक घुरला पर ओ बहिनसँ एक लोटा जल देबाक लेल कहैत अछि मुदा लड़की कहैत अछि जे आब हम पैन की दी दादा हमरा नाम पर गिर' गाँठे लगा गेल अछि। आब अहाँकेँ पैन के देत कहियौ दादाकेँ जे गिर' खोलि दैथि, किएक त' हमर प्रेमी त' गामेमे छथि– *वुरु खोनिज आंइगो येन दो/देसे हुडिज माय लोट ते दाक/इज जुतूम दादा गिरा को तोल केग आ/ओकोय एकाम दादा लोटाले दाक/तोल गिरा दादा राड रुवाड़ काग पे/इञिग जूरी गाते आतु रेगे।*

निष्कर्ष– मैथिली आ संताली दुनू ठामक संस्कार गीतमे समता मूलक आ प्रगतिशील भावना संबहित अछि। संपूर्ण समाजक सहभागिता सभ संस्कारमे छैक हरिया पिबासँ ल' क' नाच तक सामुहिकताक द्योतक अछि।

शोधक संभावना–

संस्कार गीत समाजिक भावनाक प्रतिनिधित्व करैत अछि। एहिमे समाजक सुख-दुःख, करुणा, राग-विराग, प्रेम-घृणा सभ किछु रहैत अछि। एहि विषय पर शोधक असीम संभावना अछि। एखनो संताली आ मैथिलीक लोक गीत आ संस्कार गीत लोककंठमे छिरियायल अछि। जकर संग्रहण आ विश्लेषण नव सांस्कृतिकेँ आयाम सभकेँ सम्मुख आनि सकैत अछि। ढ़ेर रास सांस्कृतिक तत्व फरीछ भ' सकैत अछि। एहि लोक गीत आ संस्कार गीत सभमे नुकायल ज्ञान-विज्ञान प्रकृतिक प्रेम, पर्यावरण चिन्ता आदि शोधक कतेको बाट प्रशस्त क' सकैत अछि।

•

गजल

वीरेन्द्र कुशवाहा
+974 77309253

आब तँ तूको अहाँ बेतूक कए देलियै
अगोरा-पछोरा थूके-थूक कए देलियै

जानिये गेल लोग नाँ-गाँ अहाँ केर
गीला बनाक' फेर रूख कए देलियै

अहीँ छी धामी आर अहीँ छी डाहि
धामी बनिक' झार-फूक कए देलियै

नहिए किछ भेटत ग' बाँइ-बाँइ कएने
हम अपना जनते मुह चुप कए देलियै •

सुच्चा कविता

बिनय भूषण
9331990871

कोनो सुच्चा कविक लेल
कविता लिखब
भ' जाइत अछि सहज
सहज अत्यंत सहज

कारण
ओ कवितामे
ताकैत रहैत अछि
मनुक्ख, समाज आ प्रकृति

कोनो सुच्चा कविकेँ
नहि देखाइत अछि
प्रशस्ति, पुरस्कार आ सम्मान

कारण
ओ अपमानक लेखिनीकेँ
उपेक्षा आ हाकरोसक मोसिमे
बोरैत रहैत अछि बेरि-बेरि

मस्तिष्कक तनायल नश
उदरमे धधकैत जठरानल
हृदयक तीव्र धकधकी
अभाव आ कुपोषणसँ
ठठरी बनल काया
आक्रोश, आवेग आ आवेशमे
थरथराइत रहैत अछि आपादमस्तक

काँपैत हाथसँ
थरथराइत आंगुरसँ
पकड़ैत अछि लेखिनी
गढ़ाइत अछि आखर

लोककेँ बूझाइत अछि
ई थिक जीवनक गीत
शायद
इएह छियैक कविता
कविता
एकटा सुच्चा कविता।

•

रेलक पटरी पर छिड़िआएल रोटी!

ईशनाथ झा
नरुआर, झंझारपुर, मधुबनी
सम्पर्क : 8709510817

कला एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकारसँ वरिष्ठ अध्येता फेलोशिप सम्मान प्राप्त ईशनाथ झा कथा आ आलेख लिखैत छथि। लखनऊ विश्वविद्यालय जॉर्नलमे अंग्रेजी शोध-पत्र प्रकाशित छनि। वृत्तियें एस. एन. एम. कॉलेज, भैरवस्थान, मधुबनीमे अंग्रेजीक विभागाध्यक्ष छथि।

चीनक वुहान प्रांतसँ जनमल कोरोना नामक वायरस (कोविड19) समूचा संसारकेँ दलमलित कयने अछि। मानवक अस्तित्व घोर संकटमे अछि। विश्वक समृद्ध एवं चिकित्सकीय सुविधासँ सम्पन्न देश यथा– अमेरिका, इटली, फ्रांस, इंग्लैंड आदि एहि महामारीसँ त्रस्त अछि। भारतमे एहि महामारीक आगमन यद्यपि भेल त' विदेशिए पर्यटक सभसँ लेकिन दिल्ली, मुंबइ, अहमदाबाद, सूरत, इंदौर, पुणे आदि पैघ शहरमे ततेक जल्दी पैर पसारलक जे सामान्य जीवन अस्त व्यस्त भ' गेल। ई महामारी सगर संसारकेँ अकल्पनीय परिस्थितिमे धकेलि देने अछि। संसारक सभ देश, विशेषतया धनिक देश सुनियोजित तरीकासँ अबाध गतिसँ प्रगतिक पथ पर बढ़ि रहल छल। लेकिन सबटा भौतिक संपन्नताक प्रतीक चिन्ह सभ धरले रहि गेल। हजारक हजार लोक मरि रहल अछि। सत्ता असहाय देखि रहल अछि। नोबेल विजेता औषधि वैज्ञानिक सब हड़बड़ीमे छथि। कोरोना वायरसक दबाइ भेटबामे विलंब भ' रहल अछि।

विश्व भयभीत अछि। महामारी हमर सभक व्यवहार आ जीवन शैली बदलि देलक। मनुक्ख, मनुक्खकेँ देखि डरा रहल अछि। गाम-शहरक चहल-पहल बला बाट-घाट सुनसान अछि। एहि निर्जनताक परिणाम एतेक अकथनीय-भयंकर अछि कि सोचला पर मार्मिक पीड़ा होइत अछि। हम सभ देशक विशालता आ विविधताक गप करैत रहलहुँ सब दिन। ई नहि सोचने छलहुँ जे विविधताक अर्थ पीड़ा-यातना आ असहायताक विविधता सेहो होइत अछि। हम सभ सदैव कोटि-कोटि जनक बात करैत छी, आब ई बुझबामे आबि रहल अछि जे कोटि-कोटि जनक पीड़ा आ कष्ट सेहो कोटि-कोटि तरहक होइत छैक।

कोरोना महामारीक विषाणु जे हमर सभक माथक एकटा केशसँ आठ सौ गुना छोट अछि, स्वाभाविक रूपसँ अदृश्य अछि। एहि अदृश्य यमराजसँ भारतमे जे वर्ग सर्वाधिक प्रभावित भेल ओ अछि श्रमिक वर्ग। उच्च वर्गीय अभिजात्य श्रेणी द्वारा हवाइ मार्गसँ आनल गेल महामारी तबाह केने अछि निम्न आयवर्गक लोककेँ। करोड़ोक संख्यामे जे देहारी मजदूर अपन गामसँ हजारो किलोमीटर दूर पलायनक दंश संग जीबाक लेल मजबूर अछि, ओकर त' सर्वस्व लूटि लेलक ई रोग। दिल्ली, मुंबइ, पूणे, बंगलूरू आदि शहरमे बड़का-बड़का उद्योगपति सभक उद्योगमे परिश्रम करैत, झुग्गी-झोपड़ीमे कहुना क' गुजर करैत लोक सब एकाएक बेरोजगार भ' गेल लॉकडाउनक फलस्वरूप आ तखन शुरू भेल जीवित रहबाक लेल गाम दिसक यात्र।

दृश्य एतेक मार्मिक अछि जे लाखो, अपितु करोड़ो लोक जाहिमे आठ मासक गर्भवती महिला, दुधपिबा बच्चा सब पैदल यात्र क' रहल अछि। ट्रेन, बस, टेम्पू– सभ यातायातक साधन बंद अछि। सरकार द्वारा लेल गेल अनचोकेमे कंप्लीट लॉकडाउनक निर्णय गरीब लोक पर भारी पड़ि रहल छै। जेबीमे बिस्कुट, मोटरीमे गहूमक रोटी, माथ पर किछु समान, नङटे पएरे बच्चा-बूढ़-जवान सब चलल जा रहल अछि। कतय रूकत, कतय की

खायत, केना सूतत, कतय पिटैत, लाठी, गोली, गारि-मारि सहैत अनिश्चितताक स्थितिसँ निश्चित गंतव्य! कियैक? कियैक त' जीबाक प्रबल इच्छा! अदम्य जीजिविषा। पुलिस आ प्रशासनक डरे हेंजक-हेंज मनुक्ख रेलवे पटरी धरैत अछि, आगू बढ़ैत अछि। सगर दिन चलैत रहलाक बाद थाकिकेँ निसभेर पटरिए पर सूति रहैत अछि। रातुक गहन अंधकार मे कोनो मालगाड़ी अबैत अछि आ सभकेँ पीचैत-कटैत चल जाइत अछि। भोरमे देखाइत अछि लेहूमे सोनायल माउसक लोथराक संग रेलक पटरी पर छिड़िआएल रोटी!

भूखसँ आक्रान्त माता भारतीक सहज संतान बाट-घाट पर कुहरि रहल अछि, मरि रहल अछि। कियो भूखसँ, कियो दुर्घटनामे, कियो अनिद्रा आ थकानस... सभ मात्र अखबारक पन्ना रंगबाक लेल लोमहर्षक समाचार मात्र बनैए भारतमे। की एहन हृदयहीनता आ असंवेदनशीलता कहियो देखल गेल छल भारतमे? ई महानिष्क्रमण 1947 केर भारत विभाजनसँ बेसी भयावह मानल जाइत अछि। गंभीर चिन्तनक धरातल पर अनुभवातीत एवं असह्य अछि जकरा लाखो श्रमिक सहि रहल अछि एवं हम सभ विवश देखि रहल छी। हमर सहानुभूति कतेक असहाय अछि। अफरा-तफरीक माहौल अछि सगरो। भूख, भय, लाचारीसँ प्रवासी मजदूरक दर्दनाक स्थिति, मृत्यु सनक दृश्य के अछि जिम्मेदार, के अछि अपराधी? कोरोनावायरस त' किन्नहु नहि! भूख, भय, विवशता, राजमार्ग, रेलवे पटरी या किछु मामलामे आत्महत्या ! निश्चित ई सब अति गुनहगार कियैक त' सरकार, पुलिस-प्रशासन दोषी केना भ' सकैत अछि? यदि सरकार भूखकेँ मृत्युक कारण मानि लेत त' *अकाल संहिता* मानि लेबाक भयंकर स्थिति उत्पन्न भ' जायत। भूखसँ बचबाक लेल पैघ स्तर पर पलायन आ लाचारी मृत्युक कारण मानल जा सकैत अछि। सरकारक एकटा अदूरदर्शी डेग आ हड़बड़ीमे लेल निर्णय कतेक विनाशकारी सिद्ध भ' सकैत अछि तकर छोट-छीन उदाहरण अछि ई सभ घटनाक्रम। कोविड19 पर दोष द' केन्द्र आ राज्य सरकार अपन पल्ला आसानीसँ झाड़ि लेलक। भ' सकैए एहि मजदूर वर्गकेँ 'लॉकडाउन शहीद'क दर्जा द' देल जाए चुनावक समयमे। लेकिन हालातक भयावहता गंभीर प्रश्न ठाढ़ करैत अछि।

अपन आजीविका गमाकेँ भूखसँ बचबाक लेल घरमुँहा चलल दिहाड़ी मजदूरक कष्ट कियो पतियेनिहार नहि भेटल। 11 मइ तक सरकारी आँकड़ाक हिसाबे पाँच सैसँ ऊपर लोक लॉकडाउनक कारणे जान गमा चुकल छल। लॉकडाउन जखन जीबाक जरिया अर्थात् काजे छीन लेने छैक, तखन भविष्यक भूख विचलित करैत छैक सबकेँ। 'न्यु इंडिया'क भयावह चित्र थिकै ई, जाहिमे भारत आ इंडियाक बीच बढ़ैत खाधि पैदल चलैत मजदूरक पैरक छाला जकाँ कष्टप्रद अछि। भारत अर्थात् साधनहीन तबका जे कोनो संकटमे सबसँ पहिने भूख आ बेरोजगारीक सामना करैत अछि, आइ ठकैल महसूस क' रहल अछि।

मजदूरक बढ़ैत विरोध एवं राजनैतिक दबाब पर केन्द्र सरकार एक मइकेँ श्रमिक स्पेशल ट्रेन चलबैक घोषणा केलक। एक ट्रेनमे सोशल डिस्टेंसिग देखैत 1200 मजदूरकेँ पहुँचेबाक व्यवस्था भेल। लेकिन एत्तहु टिकटक नाम पर जब्बह भेल मजदूरे। विभिन्न राज्य सरकार किराया देबाक बात त' केलक किन्तु रेलवे सभ मजदूरसँ वसूली करैत रहल निर्बाध। केन्द्र एवं राज्य सरकारक बीच वार्ता चलैत रहल आ बीचमे घून जकाँ पिसैत रहल गरीब श्रमिक। कतेको ट्रेन रस्ते भोतला गेल। प्रायः सब ट्रेन अपन गंतव्य स्थान पर उतारैत रहल किछु लहाश जे हारि चुकल छलाह अपन जीवनसँ युद्ध। कोविड19 संपूर्ण मानव जातिक लेल चुनौती थिक। हम सभ एहि बातसँ मन नहि मना सकै छी जे अमेरिका, इटली, फ्रांस सन विकसित देश किछु नहि क' पाबि रहल अछि त' हम सब की करू? विशाल जनसंख्या बला अपन ई देश महान तखने बनल रहि सकैए जखन एक दोसरक प्रति सब सहानुभूति, करुणा, दया आ स्नेहक भावनासँ काज करैत रहब। अनिश्चितताक एहि वातावरणमे संयत बुद्धिसँ सोचि-विचारि एहि महामारीसँ लड़य पड़त। लॉकडाउनसँ उत्पन्न बेरोजगारीकेँ दूर करबाक लेल ठोस उपाय करय पड़त। भय एवं भूखकेँ शमन करबाक लेल विचार-विमर्श कय कोनो निर्णय लेबय पड़त। एक-दोसर पर दोषारोपण कए हम सभ अपन उत्तरदायित्वसँ बचि नहि सकैत छी। ई समय परस्पर कटुता, द्वेष एवं इर्ष्याक नहि अपितु समावेशी सहभागिताक संग आगू बढ़बाक समय अछि।

•

महासंकटक एहि विकलांग दौरमे मोन पड़ैत छथि 'अष्टावक्र'

रूपेश त्योंथ
त्योंथागढ़, बेनीपट्टी, मधुबनी
सम्पर्क : 9903852485

मैथिलीक सुपरिचित युवा कवि रूपेश त्योंथ स्तम्भकार ओ सम्पादक छथि। हिनक मूल नाओ रूपेश कुमार झा छनि। ई मैथिलीमे *'नव कृष्ण ऐहिक'* पेननेमसँ सेहो लिखैत छथि। वृत्तिसँ आइटी प्रोफेशनल रूपेशजीक *एक मिसिया* (कविता) *खुरचनभाइक कछमच्छी*(व्यंग्य संग्रह) प्रकाशित एवं चर्चित छनि। *फेलोशिप अवार्ड* 2015, *नवहस्ताक्षर पुरस्कार* 2017, *नवआयाम प्रतिभा सम्मान* 2019 आदि प्राप्त छनि। मिथिमीडियाक संस्थापक सम्पादक रूपेशजी आइकाल्हि कलकत्ता प्रवासमे छथि

छोट-छोट समस्या, बाधा, अवरोध आदि अबिते हम सब विचलित होमए लगैत छी। सामान्य मनुक्ख एहिना करैत अछि। एखन समूचा विश्व कोरोना महामारीसँ त्रस्त अछि। ई संकट छोट नहि अछि, हम सब एहिसँ जूझि रहल छी। घोर दुखक स्थितिमे लोक पहिने निराश आ फेर हताश भ' जाइछ। आशासँ संसार चलै छै आ से जखन टूटैत छै त' सब किछु छिड़िआ जाइत छै। मिथिला छिड़िआएल वस्तुकेँ समेटबाक पर्याय रूपमे जानल जाइछ। एहि ठाम एकटा प्रचलित प्रसंग मानस पर अबैत अछि, जखन मिथिलाक राजा एकहकटा अन्न स्वयं बीछैत देखल गेल छलाह। आशाक बून्न-बून्न समेटब आ हरखक ओरियाओनमे लागब हमरा लोकनिक सहज स्वभाव रहल अछि।

लोकसाहित्य पर एकटा फेसबुक लाइव सेशनमे तारानन्द वियोगी अपन विचार राखि रहल छलाह। हुनक कहबाक अभिप्राय यएह छलनि जे हम सब उपरे-उपर करैत रहैत छी, संस्कृतिक त'हमे बड़-बड़ गुण, बड़-बड़ बात सब छै...ओकरा ठीकसँ बुझल जाएब एखनो शेष अछि! सत्ते मिथिलाक संस्कृति जीवनकेँ पोषित करैत अछि, खनहन करैत अछि। एहि घोर निराशाक समयमे जखन हम सब विकलांग दौरसँ गुजरि रहल छी। घर-घर हाथ-पाएर समेटि बैसल छी। एहनामे हमरा अष्टावक्र मोन पड़ैत छथि!

मिथिलाक ज्ञान परम्परामे अष्टावक्रक एकटा निजगुत स्थान छनि। हुनक स्मरण मात्रसँ केहनो अपतकालमे लड़बाक शक्ति अर्जित कएल जा सकैत अछि। एहि कठिन समयमे हम मिथिलाक एहि मनीषीक किछु प्रसंग एहि ठाम शेयर करब जे रोचक त' अछिए, संगहि सोचबाक एकटा नव एंगल सेहो फोलैत अछि।

अद्वैत वेदान्त केर महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'अष्टावक्र गीता'क रचयिता ऋषि अष्टावक्र केर शरीर आठ ठामसँ टेढ़ छलनि। असलमे हिनक नामकरण केर आधार हिनक एहन विचित्र विकलांगता छल। एतेक शारीरिक विकृतिक बादो अपन प्रतिभाक बल पर जग समादृत विद्वान बनलाह। जखन ई गर्भमे छलाह त' अपन पिताक कोप-भाजन बनलाह शापित शरीरक संग जन्म धारण केलनि।

पिता गर्भहिमे किए देलनि सराप?

बेस रोचक किन्तु आश्चर्यजनक प्रसंग अछि ई। उद्दालक ऋषिकेँ अपन शिष्य कहोड़ केर प्रतिभासँ बेस प्रसन्नता छलनि। कहोड़ जखन सम्पूर्ण वेदक ज्ञान हासिल करबामे सफल भेलाह त' ओ अपन रूपवती एवं गुणवती कन्या सुजाता केर विवाह अपन प्रिय शिष्य कहोड़सँ करा देलनि। समय बीतल आ कहोड़क पत्नी गर्भवती भेलीह। किछु मास उपरान्त कोनो दिन कहोड़ अपन गर्भवती पत्नी लग वेदपाठ क' रहल छलाह। तखने सुजाता केर गर्भस्थ बालक बाजि उठल 'अहाँ वेदक गलत पाठ क' रहल छी।'

कहोड़ बेस गौर केलनि जे बीच-बीचमे के एना टोकैत अछि, ओ पित्ते लाल भेल गेलाह। जखन निजगुत भेलाह जे केओ आओर नै, सुजाताक गर्भस्थ शिशु वेदपाठमे अवरोधक बनि रहल अछि, हुनक तामस आओर बढ़ि गेलनि। जे गर्भहिसँ पिताक सोझाँ एहन दुस्साहस क' रहल अछि ओ बादमे की करत! कहोड़ कुपित भ' सराप द' बैसलाह। अपनहि पुत्रकेँ सराप दैत कहोड़ बजलाह– 'गर्भहिसँ तोहर बुधि वक्र छौ आ तोँ हमरा अपमानित करबाक साहस केलह अछि, तू आठ स्थानसँ वक्र देह नेने जन्म धारण करबह।'

एहि घटनाक कुछ दिन बाद कहोड़ मिथिलाक राजा जनकक दरबारमे बंदी नामक एक पंडितसँ शास्त्रार्थ करबाक लेल गेलाह। ओतय हुनका पराजित होमए पड़लनि। शास्त्रर्थ केर जे नियम छल, ओहि अनुसार कहोड़केँ जल-समाधि लेबए पड़लनि। एहि घटनाक बादे अष्टावक्र केर जन्म होइत अछि।

अपन नानाकेँ बुझैत रहलाह पिता, फेर एक दिन...

बालक अष्टावक्र जन्मक बादेसँ पिता प्रेमसँ वंचित भ' गेल छलाह। एहनामे ओ अपन नाना उद्दालककेँ पिता आ मामा श्वेतकेतुकेँ बड़का भाइ बुझैत रहलाह। एक दिन हुनक मामा हुनका बुझएबामे सफल रहलाह जे ओ जिनका पिता बुझैत छथि से हुनक नाना छथि आ हुनक पिता घटनाक शिकार भेल छथि। बालक अष्टावक्र केर तन्नुक हृदय पर एहि यथार्थसँ बेस चोट लगलनि। ओ अपन मायसँ पिताकेँ ल' सम्पूर्ण बातक जिज्ञासा केलनि आ मामा संग मिथिलाक राजदरबार दिस विदा भ' गेलाह।

अष्टावक्र बंदीसँ शास्त्रर्थ करबाक लेल सोझे राजा जनकक यज्ञशालामे पहुँचलाह। द्वारपाल लोकनि जखन हुनका नेना बूझि रोकबाक चेष्टा केलनि त' अष्टावक्र तर्क देलनि जे पाकल केश आ उम्र भेने केओ काबिल नै भ' जाइछ। जकरा वेदक ज्ञान हो, जे बुद्धिमान हो, वएह पैघ होइछ। हुनक उमेरकेँ नै देखैत हुनक ज्ञानकेँ सम्मान करैत राजा समक्ष हुनका जाए देल जेबाक चाही। एकर बाद ओ राजा जनक केर सभामे प्रवेश पबैत छथि आ बंदीकेँ शास्त्रार्थ लेल ललकारैत छथि। मुदा नान्हिटा बालक अष्टावक्रकेँ देखि सभासद लोकनि जोर-जोरसँ हँसए लगैत छथि।

अपन पांडित्यसँ सबकेँ केलनि मुग्ध

अष्टावक्रकेँ देखि सभासद लोकनि लगातार हँसि रहल छलाह। हुनका लोकनिक हँसी रुकबाक नाओ नै ल' रहल छल। असलमे आठ ठामसँ टेढ़ अष्टावक्रकेँ चलैत देखि ककरो हँसी छूटि सकैत छल। सबकेँ हँसैत देखि अष्टावक्र सेहो हँसब शुरू केलनि।

ओ अपन विकलांगताकेँ अपन कमजोरी कहियो नै बुझलनि आ एहन व्यवहारकेँ सहज लैत रहलाह। सभासद अष्टावक्रकेँ देखि हँसि रहल छलाह आ अष्टावक्र सभासद सबकेँ हँसैत देखि हँसि रहल छलाह। राजा जनक सेहो अपन हँसी रोकि नै सकलाह। बड़ा विचित्र दृश्य भ' गेल छल। एहन स्थितिमे राजा जनक अष्टावक्रसँ पूछैत छथि– बौआ! सभासद सब जे हँसैत छथि, तकर अर्थ त' लगैत अछि, मुदा अहाँ किए हँसि रहल छी?

मात्र बारह वर्षक बालक अष्टावक्र राजा जनककेँ जे जवाब देलनि से सबकेँ सोचबा लेल मजबूर क' देलक। पूरा सभाकक्ष एकदम शांत भ' गेल। अष्टावक्र कहलनि 'हमर हाड़-माउस केर वक्रता पर हँसनिहार लोकनिक वक्र-बुद्धि पर हम हँसि रहल छी। ई सब चाम देखि एतेक रास प्रतिक्रिया द' रहल छथि जाहिसँ ई निजगुत होइछ जे ई लोकनि ज्ञानी नै, चामक विपणन केनिहार (चमार) जकाँ छथि। हिनका लोकनिक मानसिक वक्रता पर हमरा एकरत्ती हँसा गेल, आओर नै किछु!'

बालकक बड़का-बड़का बात पर राजा जनक अपनाकेँ संयमित करैत बजलाह, 'अगत्ती बालक! तोहर अभिप्राय की छौ?' अष्टावक्र जवाब देलनि, 'ई लोकनि चाम चिन्हबामे माहिर छथि, हिनका नजरिमे ज्ञानक कोनो महत्व नै! मन्दिर जओँ टेढ़ छै, तखनो ओतय पूजन होइते छै। घैल फुटने मेघ नै फूटैत छै। मेघ निर्विकार अछि आ ज्ञानी मेघ सदृश निर्विकार होइत छथि। हमारा होइत छल जे मिथिलाक ई सभा ज्ञानी लोकनिसँ सुसज्जित होएत मुदा...!

राजर्षि जनक नेनाक लेलनि परीक्षा

एहि प्रकरणक बाद राजा जनक अष्टावक्र केर स्वयं परीक्षा लेलनि। अष्टावक्र बेस गंभीरतासँ हुनक एक-एक प्रश्नकेँ चकित करएबला जवाब सब देलनि। एहि मध्य बंदी जे हुनक पिताकेँ शास्त्रर्थमे पराजित क' दण्डित केने छल, अष्टावक्रक सोझाँ नतमस्तक भ' गेल। बंदी जखन हारि मानि लेलक त' अष्टावक्र राजासँ निवेदन केलनि जे हुनक पिताक जे गति कएल गेल छल, तेहिना बंदीकेँ सेहो दण्डित कएल जाए, ओकरो जल-समाधि देल जाए!

बंदी प्रणाम निवेदित करैत अष्टावक्रकेँ कहैत छथि जे ओ वरुण देवताक पुत्र छथि आ ओ पराजित ब्राह्मण (ज्ञानी) लोकनिकेँ जल-समाधि द्वारा वरुणलोक पहुँचओलनि अछि, हुनका सबकेँ आपस बजाओल जाएत। किछु क्षण बाद बालक अष्टावक्रकेँ पिता कहोड़सँ भेंट होइत छनि, ओ असीम हर्षसँ परिपूर्ण भ' जाइत छथि।

बादमे पिता हुनका समंगा नदीमे स्नान क' शारीरिक विकलांगताक शाप मुक्तिक बाट दैत छथि। राजा जनक ज्ञानी त' छलाह मुदा आत्मज्ञान केर शिक्षा अष्टावक्रसँ लेलनि। अष्टावक्र केर कथा हमरा लोकनिकेँ धैर्यवानक संग-संग गुण-आग्रही बनबाक सीख दैत अछि।

•

‘कोरोना’ मानव जातिक अस्तित्व लेल संकट

रामबाबू सिंह
मधेपुर, कलुआही, मधुबनी
सम्पर्क : 9971499504

मैथिली साहित्य सम्मेलनक महासचिव, मैथिली भाषा अभियानी *राम बाबू सिंह कथा कानन*क सम्पादक छथि। हिनक आलेख आओर कविता विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहैत छनि। दिल्ली प्रवासमे रहैत छथि।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) कोरोना वायरसकेँ वैश्विक महामारी घोषित कएलक अछि। एहि वायरसक प्रभावसँ समस्त विश्व त्रस्त अछि। एहन अदृश्य आसुरि शक्ति अछि जकरा समक्ष दुनियाँक विकसित आ विकासशील देश पानि भरि रहल अछि। विवशता एहन जे अछैत सभ साधन संशाधनक अपन जनताकेँ प्राण नहि बचा पाबि रहल अछि। अपनहि सोझा मृत्युक नित नव कीर्तिमान स्थापित होयत हाथ मसोरि कै मात्र देखबाक लेल विवश छथि।

एहि वायरसक नाम कोरोना किएक राखल गेल

वैज्ञानिक परीक्षण संगहि वायरससँ लड़बाक लेल टीका, दबाइ आदिक लेल एकर नामाकरण आवश्यक अछि आ दोसर वायरोलॉजिस्ट आओर वैज्ञानिक समुदायक समेकित प्रयाससँ ‘इंटरनेशनल कमिटी ऑन टैक्सोनॉमी ऑफ वायरस (ICTV) द्वारा नाम राखल जाएत अछि।

लैटिन भाषामे कोरोना शब्दक अर्थ क्राउन अर्थात मुकुट होयत अछि। कोरोना प्लाज्माक एकटा आभाकेँ सेहो कहल जाएत अछि जे सुरुज आओर सिताराक चारूकात विद्यमान रहैत अछि। वैज्ञानिक एहि वायरसकेँ इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपसँ जखन देखलक त’ ओ गोल आ सुरुजक क्राउन सदृश ओकर किरण पुंज चारूकात पसरल देखल गेल ताहि कारणसँ एकर नाम ‘कोरोना’ राखल गेल।

N cov19/Covid19 वायरसक अर्थ

विश्व स्वास्थ्य संगठन एहि वायरसक नाम, CO(कोरोना) VI (वायरस) D(डिसीज) 19 (2019 साल) आओर नव होयबाक कारणे एकरा नोबल कहल गेल। अर्थात नोबल कोरोना वायरस रोग 2019।

एकर लक्षण

एहि वायरससँ संक्रमित रोगीकेँ बेसी सामान्य लक्षण बोखार, खोंखी, थकावट(शारिरिक आ मानसिक), माथ दुखाएब, आँखि उठि आएब, दस्त, सुगन्ध व स्वादक अनुभव नहि करब, त्वचा पर खरोंच आ हाथ पएरक आँगुरक रंग बदलब आदि अछि मुदा जँ छातीमे दरद, सांस लेबमे तकलीफ, निमोनिया आ गप्प-सप्प करबामे आ चलबा-फिरबामे तकलीफ अछि तँ ई कोरोनाक गम्भीर लक्षण कहल जाएत अछि जतय रोगीकेँ बिनु समय खरापा कएने अविलंब डॉक्टरसँ सम्पर्क करबाक चाही। रहस्यमयी वायरससँ प्रभावित रोगीक जांच परख करबामे एक हप्तासँ दू हप्ता धरि लागि जाएत छैक। देखबामे प्रभावित रोगी एकदम स्वस्थ हिष्टपुष्ट रहैत अछि आ ताहि क्रममे ओकर शरीरक वायरस एकसँ अनेक लोककेँ संक्रमित क’ गुणात्मक बढ़ोतरी करबामे सफल भ’ जाएत अछि। एहि वायरसक खतरनाक प्रभावसँ आइ समस्त संसार संकटग्रस्त अछि। ई चाइनाक वुहान शहर तहस-नहस कएलाक बाद आइ विश्वक 213 देशमे आफद मचौने अछि।

कोरोना वायरसक सन्दर्भमे बहुत रास मतभिन्नता अछि। चाइना प्राकृतिक आपदा कहि वैज्ञानिक सभकेँ चमगादड़ पाछाँ लगा देलक मुदा वुहान लैबमे काज क’ चुकल जापानी वैज्ञानिक एकरा लैबमे तैयार कएल जैविक वायरस अर्थात हथियार पुष्टि कएलक अछि। तेँ एहि वायरस पर उच्च तापमान वा निम्न तापमानक कोनो प्रभाव नहि पड़ैत अछि।

चाइनाक वुहान शहरमे दिसंबर 2019मे कोरोना वायरससँ संक्रमित पहिल रोगी भेटल छल। एकर दुष्परिणाम चाइनाक सभटा कुचक्र बिगाड़ि देलक। एहि जान मारुक वायरसक तथ्य गुप्त रखबाक प्रयास कएल गेल जाहि कारणे अमेरिका विश्व स्वास्थ्य संगठनक क्रियाकलापकेँ सार्वजनिक तौर पर संदेहास्पद कहलनि। वायरसक सन्दर्भमे जँ

पहिने तथ्यात्मक सत्य सोझा रखने रहितैक तँ मानवजातिकेँ अतेक पैघ संक्रमण आ कालक ग्रास होयबासँ बचाओल जा सकैत छल। ओ तँ संक्रमित रोगी आ मृत्युक संख्या धरि गलत रिपोर्ट सार्वजनिक कएलक।

विश्वमे कोनो एहन देश नहि जतय कोरोना वायरस नहि पहुँचल! आधुनिक चिकित्सीय सुविधा, अस्पताल, इलाजमे जे देश सर्वोच्च मानल जाएत छल आ जे दुनियामे जतेक आर्थिक रुपेँ सशक्त देश छल ओकरा ओतेक पैघ आघात देलक अछि। की विकसित आ की विकाशशील, सभक होश उड़ा देल अछि। चीनसँ शुरू भ' इटली आ अमेरिकाकेँ सामाजिक मानसिक आर्थिक रूपेँ चकनाचूर करैत शेष विश्व दिस अजेय जकाँ बढ़ल जा रहल अछि।

एहि महामारीक वैश्विक आधार पर एखन धरि अमेरिका सर्वोच्च स्थानकेँ गसिया क' धएने अछि। भरत एखन एगारहम स्थान पर अछि। दुनियामे करीब 55 लाख संक्रमित रोगीक संख्या संग एखन धरि 3.50 लाखसँ बेसी लोक एहि कालक गालमे समा चुकल अछि। केवल अमेरिकामे संक्रमित रोगिक संख्या 17 लाख पार क' चुकल अछि जाहिमे मृतकक संख्या 99 हजारक पार अछि। नित नव संक्रमित रोगीक संख्या सेहो कएक हजारमे अबैत अछि। सम्प्रति रसिया सभ देशकेँ पछाड़ैत करीब 3.27 लाख संक्रमित रोगीक संख्या संग दोसर स्थान पर आछि। स्पेन 2.83 लाख संक्रमित रोगी, यूके 2.58 लाख, ब्राजील 3.45 लाख, इटली 2.30 लाख, फ्रांस 1.83 लाख, जर्मनी 1.81 लाख, टर्की 1.56 लाख, इरान 1.36 लाख आओर भारत 1.34 लाख।

भारतमे एहि महामारीक केंद्र

भारतमे केरला एकर केंद्र रहल। वुहान शहरसँ चाइना न्यू इयर उत्सव मना एकटा छात्रा 30 जनवरी 2019 क' गृहराज्य केरला अएलीह आ अपना संगहि ल' अएलीह चाइनाक रक्तबीजकेँ। ओतहिसँ फेर 3 फरबरी क' 2 गोट आओर छात्रा अएलीह। ओकरामे सेहो कोरोनाक लक्षण पाओल गेल। 4 फरबरी क' ओहिमेसँ दू गोटेक मृत्युक उपरांत राज्यापदा घोषित क' सरकार गम्भीरतापूर्वक मंथन करय लागल। राज्यक 5 गोट हवाइ अड्डाकेँ जिला अस्पताल, एम्बुलेंस आओर आपातकालीन सेवा संग जोड़ि देल। एक हप्ताक उपरांत जिला नियंत्रण कक्ष स्थापित कए देल। मास्क, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण अर्थात PPE किट्स आदि खरीद करब शुरू कए देल गेल आ जिला अस्पतालमे आइसोलेशन वार्ड बनाओल गेल। ओहि सभक एक दोसर संग समन्वय बना क' कोरोना महामारीक पसार पर रोक लगाओल गेल।

अहि सभ घटनाक्रम मध्य देशक राजधानी दिल्ली विधानसभा चुनावक महाभारत पर एकाग्रचित छल। जतय देशक एकटा राज्य केरला, कोरोना महामारीसँ जान मालक सुरक्षा हेतु जंग लड़ि रहल छल ओतय केन्द्रीय सत्ताधारी दल सीमा विस्तार करबाक सपना सँजोगि कौरव जकाँ सगरो त्राहि- त्राहि मचा रहल छल। दिल्लीक चुनाव जाहि तरहेँ लड़ल गेल, एना किनसाइते इतिहासमे कहिओ लड़ल गेल हएत! की की नहि देखओलक दिल्ली! गारि-गंजन, गोली, बम, पिस्तौल, दँगा-फसाद आदि जतेक नीचताक प्रदर्शन संभव छलैक सभटा देखओलक दिल्ली जे साइते कहिओ केओ देखने आ सोचने हएत! मुदा दिल्ली गम्भीरतासँ सबहक कर्मक लेखा जोखा करैत रहल जकर साक्ष्य रहल चुनावक परिणाम जे आशानुरूप रहल। कौरव पर पांडवक विजय, अधर्म पर धर्मक विजय, अनीति पर नीतिक विजय, फूसि फटक्का पर सत्यक विजय जँ एहि ऐतिहासिक परिणामकेँ कहल जाए तँ अतिश्योक्ति नहि। खैर जेना तेना अहंकार अंधविश्वासक अकाससँ सत्ताधारी दल जमीन पर पएर रखबाक प्रयास कएलाह।

फेर स्मृतिमे अएलनि कोरोनाक विध्वंसक प्रभाव! ता धरि वायरस अपन रौद्ररूप धारण क' सगरो तांडव शुरू क' देने छल। तत्पश्चात प्रिंट मीडिया, सोसल मीडिया, टीवी चैनल, छुटभैया नेता, लतखोर चमचा-बेलचा, खुर-पुजारी आदि सभक गैंग तैयार करब शुरू कएल गेल आ वायरससँ बचबाक मूर्खतापूर्ण बाट सभ ताकय लागल, जेना तबलिकि जमात, मुसलमान आदि। तबलिकि जमातमे बाहरसँ विदेशी कोना आएल आ लॉक डाउनमे करीब 1500 जमाती कोना एकठाम जमा भ' गेल? वायरसकेँ संक्रमणक जिम्मेबार केवल तबलिकि जमात आ मुसलमान कोना? देशक शासन प्रशासनक भूमिका की संदिग्ध नहि अछि? खैर बादमे जमाती बला विषय जखन सरकारकेँ उनटा स्वयंकेँ चरित्र-चित्रण करय लगलनि आ मुस्लिम देश सभसँ सेहो दबाव पड़लनि तखन ओ जमातिकेँ बकसि देलाह मुदा ता धरि सगरो जहानमे सरकारक सम्प्रदायवादी मानसिकता प्रदर्शित भ' चुकल छल। खैर जे से...

कोरोनाक कराल कालमे किछु शब्द यथा— 'क्वारंटीन' आओर 'आइसोलेशन' अनायास शब्दकोशक हुजूममे मृतप्राय पड़ल, सम्प्रति समस्त मानवजातिक स्मृति पटल पर एकटा अमिट छाप उकेर देलक अछि! दुनूमे अंतर केवल ई अछि जे संदिग्ध रोगीकेँ कमसँ कम 14 दिनक 'क्वारंटीन'मे राखल जाएत अछि आ जँ रोगी जाँचमे पॉजिटिव पाओल गेल तँ ओकरा 'आइसोलेशन'मे राखि इलाज कएल जाएत अछि। क्वारंटीनमे घरमे असगरे रहब, दोसरसँ 6 फीटक दूरी राखब, बाथरूम साझा नहि करब, बाहर बिना मास्क नहि जाएब, साबुनसँ हाथ धोइत रहब आदि आओर आइसोलेशन बला रूममे संक्रमित रोगी लग अकारण नहि जएबाक अछि, ओ अस्पताल नहि जा सकैत अछि, जँ साँस लेबामे असहज होय, तँ डॉक्टरकेँ फोन पर सूचित करैत अछि, मनमर्जी दबाइसँ परहेज संगहि ओकरा लेल सभ तरहक यात्रा वर्जित अछि।

सोशल डिस्टेंसिंग अर्थात सामाजिक दूरी। ई शब्द सेहो एखन खूब प्रचलनमे अछि। अपन सामान्य जीवनक दिनचर्यामे लोक घर-परिवारसँ फराक अनेकानेक लोकक सम्पर्कमे अबैत अछि। बाजार, दफ्तर, समारोह, यात्राक समय कएको लोकसँ भेंटघाट होयत अछि जाहिसँ सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक आदि सम्बंध समृद्ध होयत अछि। एहने सभक सम्बंधसँ विच्छेद अर्थात दूरी बनएबाक अर्थ अछि

'सोशल डिस्टेंसिंग'।

'लॉकडाउन' अर्थात तालाबंदी, अर्थात समस्त संसार जे कहिओ 'ग्लोबल विलेज' अर्थात वैश्विक गाम छल से कोरोनाक कहरक कारण देश आओर नगरकेँ एक दोसरसँ काटि चुकल अछि। एकर अर्थ जे केओ बाहर-भीतर नहि क' सकैए। लॉकडाउन आपातकालीन व्यवस्थाक नाम अछि जे कोनो महामारी वा प्रकृतिक आपदाक समय सरकारक निर्णय होयत अछि। एहन स्थितिमे घरसँ बाहर केवल अन्न-पानि, दबाइ- इलाजक परिस्थितिमे बाहर जएबाक अनुमति होयत अछि।

लॉकडाउनक प्रभाव

प्रथम चरण : 25 मार्च 2020 सँ 14 अप्रैल 2020 (21 दिन)क लेल निर्णय लेल गेल। मुदा एहिसँ पहिने लोककेँ छाती मजगूत करबाक लेल 22 मार्च रविदिन भोरक 7 बजेसँ साँझक 9 बजे तक जनता कर्फ्यू लगाओल गेल। एकर मूल मंत्र छल जनता द्वारा, जनता लेल जनता कर्फ्यू। फेर साँझमे 5 बजे 5 मिनट धरि ताली-थाली पिटबाक आदेश छल, जकरा पूरा करबाक लेल पूरा देश एकनिष्ठ भ' पालन कएलक। एहि उत्सवक ठीक अगिला दिन मध्यप्रदेशमे कोंग्रेसकेँ 15 महीनाक सरकारकेँ बागी कोंग्रेसी आओर धनबलसँ तख्ता पलटि क' बीजेपी सरकार बनओलक। तकर अगिला मंगलदिन मंगलकामनाक संग राति 8 बजे देशक नाम संबोधनमे चारि घण्टाक उपरांत यथा रात्रि 12 बजे 25 तारीखसँ 21 दिनक लेल पहिल चरणक लॉकडाउनक घोषणा क' देलाह। नहि कोनो नीति नियम, जे जतय छल ओ ओतहि ठमकि गेलाह। जँ केओ कतहु बाट घाट देखल गेलाह तँ पुलिस लाठी भांजि खेहार' लगलनि। सभसँ बेसी प्रभावित रहल जे नित खत्ता खोदि पानि पिबैत छलाह। किछुए दिनक बाद एकर रुझान सोझा आबय लागल। तत्पश्चात 5 अप्रैल रविदिन सांझ 9 बजे, 9 मिनट धरि अपन घरकेँ गुप्प अन्हार क' दरबज्जा आ गैलरीमे दीपोत्सव मनएबाक दोसर टास्क जनताकेँ देल गेलनि। लोक धूमधामसँ दीपोत्सवमे छुरछुरी, अकासतारा, हायड्रोजन बम, फुलझड़ी सभ जमिक' छोड़लक। मतलब साहेबक एक-एकटा टोना-टोटकाक पूर्णतया पालन कएल गेलनि। सभटा सरकारी निर्णय आ ओकर अनुपालन होयत देखि यथार्थमे नवका भारतक अनुभूति करा देलक आ ताहि सभ उत्सव आ उत्साह संग पहिल चरणक लॉकडाउनसँ देश मुक्त भेल।

पुनः 14 तारीख 8 बजे साहेब अगिला निर्णय सुनबैत द्वितीय चरण : 15 अप्रैल 2020 सँ 3 मइ 2020 (19 दिन)क लेल सीमा बढ़ा दैत अछि। मुदा फेर कतहु कोनो तरहक अबाजाही नहि। बड़का आफद, मजदूर आब करत की? पेट कतहु कोनो वायरससँ डरलैए? ओकरा लेल ताबड़तोड़ घोषणा होमय लागल। लाखोलाख लोकक भोजन आवास आदिक सुविधा, वेतनमे कटौती एकटा अक्षम्य अपराध, किरायादारक किराया सरकार वहन करतैक आदि कोनो प्रकारक असुविधा दिहाड़ी मजदूरकेँ नहि होमय बला। मुदा केवल आ केवल घोषणा देखल गेल, किनको भरोस नहि भेलनि। लोक भुक्खल दुक्खल कहिया धरि पड़ल रहत! तेहनमे विद्रोह होयब स्वाभाविके, आ तहिना कतेको स्थान पर भेल। आ ताहि तरहेँ अपन दोसर चरणक लॉकडाउनक अंत भेल।

फेर साहेब तेसर चरण लेल 3 तारीख राति 8 बजे देशक नाम संबोधन करैत अगिला दू हप्ता लेल आओर बढ़ा देल। तृतीय चरण : 4 मइ 2020 सँ 17 मइ 2020(14 दिन)क लेल। आब सभसँ बेसी दयनीय स्थितिमे दिहाड़ी मजदूर, रेडी पटरी ठेला खोमचा रिक्सा टेम्पो बलासँ ल' क' निम्न वर्गीय निजी कम्पनीमे कार्यरत लोक भेल। ओकर सभक बटुआ नहुँ नहुँ साफे खाली भ' गेल। कतहुसँ कोनो भरोस बला निस्सन उपाय नहि, केवल भाषण तुकबंदी बला नमरल-नमरल गप्प- सप्प। लोकक धैर्य जबाब देमय लागल। किरायादारकेँ कतेको स्थान पर भगाओल गेल आब ओ सभ बाल बच्चा संगहि पएरे हजारो हजार किलोमीटर यात्र लेल विदा भ' गेल। बाट पर पुलिसिया लाठी भांजि डेंगाबय तँ रेलगाड़ीक पटरी ध' यात्र शुरू कएलक। केओ साइकिल तँ केओ स्कूटर, तँ केओ रिक्सा जकरा जएह भेटलनि सएह ल' विदा भ' गेलाह।

फेर शुरू भेल राजनीति उठापटक। श्रेय लुटबाक होड़ लागि गेल। काजक नाम पर केवल तुकबंदी बला काव्यमयी भाषण, सरकारक दरिद्र दृष्टिकोणक दृष्टांत उजागर भेल। भूख पिआससँ बेहाल मजदूर, दुर्भाग्यकेँ अपन नियति मानि घरमुहा हयब केवल आत्मरक्षा बुझलनि आ तेँ कोनो जतनसँ ओ सभ केवल घर दिसि जएबाक जी तोड़ परिश्रम करय लागल। मुदा एहि सभ प्रसङ्गसँ इतर केंद्र सरकार वायुसेनाकेँ सेहो कोरोना योद्धाक सम्मानमे पुष्पवर्षाक टास्क देलनि, आ ओ हेलीकॉप्टरसँ पुष्पवर्षा क' कोरोना योद्धाक सम्मान कएलनि। एहि तरहेँ शोक आ उत्सव संग समापन भेल तेसर चरणक लॉक डाउन आ फेर 17 तारीख रविदिन 8 बजे देशक नाम संबोधन क' चारिम चरणक लॉकडाउन 18 मइ 2020 - 31 मइ 2020(14 दिन)क घोषणा क' देलाह जे एखन देश भोगि रहल अछि।करीब दू महीना लॉकडाउनक होम' जा रहल अछि। पहिने भरोसा देल गेल जे 16 मइ धरि कोरोनाक रोगीक संख्या लॉकडाउनक कारण शून्य भ' जाएत जखन कि आओर गुणात्मक रूप धारण क' रक्तबीज जकाँ सगरो पसरल जा रहल अछि। जँ गरीब-गुरबा जन-मजूरक दृष्टिकोणसँ देखल जाए तँ एखन धरि कोरोना महामारीसँ लड़बाक लेल सरकारक प्रयास केवल प्रवचन रहल अछि। नीक-नीक शब्द शिल्प कथ्य लक्षणा व्यंजनाक मेलसँ बनल काव्यमयी शब्दजालसँ लोककेँ सम्मोहन करबाक प्रयास, मुदा 'भूखे भजन कहिया धरि कएल जा सकैए' तेँ देशमे सगरो अराजक स्थिति सिरिजन भ' गेल अछि। भूखल लोकसँ खतरनाक आओर किछु भए नहि सकैए! सरकारी अव्यवस्थासँ व्यथित गरीबक आँखि सावन भादो भेल अछि मुदा खद्दरधारी लोकनिक आँखि मरुस्थल जकाँ सुखा गेल अछि। वेदना-संवेदना भावनाक सँग हुनक आत्मा सेहो मृतप्राय भेल मूकदर्शक बनल अछि।

•

हुनक आत्मामे बसल रहनि काव्य आ कला

केदान कानन
किसुन कुटीर, सुपौल (बिहार)
सम्पर्क : 9471062706

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, सुखासन, मधेपुराक प्राचार्य पद पर कार्यरत मैथिली साहित्यक ख्याति प्राप्त लेखक, अनुवादक एवं सम्पादक केदार काननक मैथिली कविता संग्रह *आकर लैत शब्द* बेस प्रशंसित कृति छनि। हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला, पंजाबी एवं तेलगुमे अनुवाद प्रकाशित छनि। कय दर्जन पोथीमे अपन अमूल्य सम्पादन सहयोग देने छथि। सम्प्रति *संकल्प* आ *भारती मंडन*क सम्पादक छथि।

स्कूलसँ घुरलाक बाद, घरमे पोथी पटकि, भगैत रही टोल दिस। ओतय संगतुरिया सभ एक-दोसराक बाट तकैत रहैत छल। स्कूल ड्रेस सन कोनो चीज नहि छल, रंग-बिरंगी कपड़ामे स्कूल जाइ। वैह अंगा-पैंट घरहुमे आ स्कूलोमे। घरक पछुऐतमे एकटा छोट सन मैदान। ओहि मैदानक एक छोर पर फूसिक एकटा छोट सन घर। ओहि घरमे कचहरी जयबासँ पहिने आ कचहरीसँ अयलाक बाद मुख्तार साहेब बैसैत छलाह। संगमे दू-तीन टा मोकील, अपन-अपन फाइल आ कागत-पत्तरक संग!

मुख्तार साहेबकेँ हम सभ छट्टू काका कहैत रहियनि। ओहि घरमे एकटा पुरान सन टेबुल-कुरसी आ एकटा चौकी राखल रहैत छल। बांसक खुट्टा सभकेँ पकड़ि हम सभ झूलि जाइ गोल-गोल आ चौकी पर उछल-कूद करी। साँझ-साँझ धरि खेलाइत रही— कबड्डी, नुक्का-चोरी, गुल्ली-डंटा आरो की-कहाँदन। किनसाइत छट्टू काका बदमासी करैत, हुनक चौकी पर रड़धुम्मस करैत जँ हमरा सभकेँ पकड़ि लेथि तँ पेटक चाम पकड़ि तेहन ने बिठुआ काटथि जे हमसभ माय गै-बाप रौ कहैत छटपटाइत पड़ाइत रही। मुदा हमहूँ सभ हुनका बेदम कयने रहियनि। ओ थोड़ेक झखाइत छलाह। अजित, राजीव, सुधीर, शंकर, मन्नीक अतिरिक्त आरो एकाध संगी। कहियो क' टोलसँ बाहरोक संगी सभ खेलय लेल आबि जाय। ओ सभ नीरज, शुम्भू, लाल, परमा, किशोरी आ हरेराम आदि रहैक। हम सभ आठम-नवम वर्गक छात्र रही आ सुपौलक विलियम्स हाइस्कूलमे पढ़ैत रही। ई 1971-72क गप थिक।

ओहि दिन अकस्मात एकटा नव लोककेँ छट्टू काकाक कुरसी पर बैसल देखलहुँ। भव्य व्यक्तित्व, पैघ-पैघ आँखि, ताहि पर चश्मा, नमगर, गहूमा रंग, बेलबॉटम पहिरने। कुरसीक कातमे एकटा अटैची राखल छल। के छथि ई? किनकर पाहुन? तत्काल किछु पता नहि लागल। आइ हम सभ ओहि घरमे नहि खेला सकैत छी। मैदानेमे खेलाइत रहलहुँ। ओ कुरसी पर बैसल-बैसल हमर सभक बाल-क्रीड़ा देखैत रहलाह।

बादमे राजीव कहलक—हमरे ओतय आयल छथि। फूल दायक संग हिनक विवाहक गप चलि रहल छैक। पटनामे रहैत छथि आ सहरसा अबैत-जाइत छथि। नाम थिकनि ललित कुमुद।

ओहि समयमे जतेक ज्ञान छल, ताहिमे ई नाम थोड़ेक अलग तरहक बुझायल। बढ़िया लागल। कानकेँ नीक लगलै नाम, आँखिकेँ नीक लगलै हुनक चेहरा। मुदा तकरा बाद हुनकासँ हमरा कोनो भेंट नहि, से अनेक बर्ख धरि।

♦

पटनामे जखन नामांकन कराओल तँ हुनकासँ भेंट-घांटक अनन्त क्रम शुरू भेल। आ से जखन शुरू भेल तँ हमर आनन्दक पारावार नहि। हुनका ओतय जाइ तँ इस्ट बोरिंग रोडक हुनक पूरा घर काव्यमय आ चित्रमय लागय। घरक देबाल सभ पर हुनक बनाओल अनेक आकर्षक पेंटिंग टाँगल रहैत छल। एकटा अलग कोठली छल, जाहिमे बैसिस ओ चित्र बनबैत छलाह। अनेक प्रकारक रंग आ ब्रश। सभ अलग-अलग, सजल-सजाओल राखल। तैल चित्र बनयबाक ओ रंग सभ बड्ड महग होइत छल। कैनवास सभ फ्रेममे टाँगल-ठोकल रहैत छल। हमरा लेल ई अद्भुत दृश्य छल, एकटा नव दुनिया छल। एक कलाकारक कक्ष, स्वयं अपनाकेँ परिभाषित करैत।

ओ कविता, गीत आ गजल लिखैत छलाह। मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषामे। हुनक भाषा आलंकारिक होइत रहनि। राग, ताल, छंद, रस, अलंकारसँ सुसज्जित हुनक गीत सभ मोन पड़ैत अछि। ओ तेहने सुन्दर गबितो रिहथि। कंठ एतेक सधल रहनि जे अहाँ हुनक सुर-साधनामे हेरा जयबा लेल विवश भ' अइतहुँ। कोनो एक व्यक्तिमे एतेक रास गुण भ'

सकैत अछि, तकर ओ साक्षात उदाहरण छलाह। मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजीक अतिरिक्त ओ बंगला आ उर्दू सेहो जनैत-पढ़ैत छलाह।

ओ आवाजक जादूगर छलाह। हुनक आवाजमे एकटा विरल किसिमक आकर्षण रहनि। सधल स्वरमे बजैत हुनका देखि लगपासक लोक चौंकि उठैत रहथि। जे हुनक आवाज सुनने रहथि से तँ बिनु हुनका देखनहुँ कहि सकैत रहथि जे ई स्वर ललित कुमुदक थिकनि। हुनक सम्बोधनमे, हुनक सम्बन्धीमे, हुनक मैत्रीमे, हुनक व्यवहार आ आचार-विचारमे, हुनक संस्कारमे प्रेम आ अनुशासनक एकटा मेंही प्रेमिल लहरि तरंगायित होइत छल। एहि लहरिकेँ पकड़ि, धीरे-धीरे जहाँ हुनका भीतर, एक उत्क्रष्ट कलाकार, एक महान शब्द-शिल्पीक आँगनमे प्रवेश क' सकैत छलहुँ... बेरोक-टोक। हुनक स्वरमे ठीके एक आकर्षण छल, सम्मोहनक आकर्षण, अपना दिस खैंचि लेब' बला आकर्षण...।

ओ बाजथि तँ लगैत छल जेना आकाशमे सप्तरंगी इन्द्रधनुष पसरि गेल हो। एहइन चित्ताकर्षक जे अहाँक मोन मोहि लेअय। ओ बाजथि तँ लगैत छल जे ई बजिते रहथि अनवरत... हुनका सुनब प्रिय लगैत छल। एहन सधल स्वर, स्वरमे लय, लयमे मधुर कम्पन, रोमांच। ओह! ठीके भव्य, ठीके दिव्य...।

♦

1983क एकटा घटना मोन पड़ैत अछि।

ओ प्रायः दस दिनुक लेल अपन सासुर, माने सुपौल आयल रहथि। संयोगसँ तखन हमहूँ गामहि रही। हम बेसी काल हुनके लग बैसल गपशप करैत रही। खूब मोन लागय। ओ अपन बहुत रास संस्मरण सभ सुनबाथि। साहित्यक गुर सिखबथि, कविता आ गीत पर गप करथि। मैथिली भाषाक गप करथि। हम श्रोता रही आ निरन्तर हुनका सुनैत रही।

एक दिन ओ कहलनि जे किछु 'बॉयोलोजी पेपर' आनू, संगमे किछु रंग-बिरंगक स्केच सेहो ल' लेब। हम बजारसँ ल' अयलहुँ। ओ दू टा आधुनिक स्केच बनौलनि आ हमरा समर्पित करैत नीचाँमे अपन हस्ताक्षर क' देलनि। हुनक हस्ताक्षरो कलात्मक रहनि। हम हुनका कहलियनि जे यात्री जीक स्केच बना दिय'। ओ लगले दू एंगिलसँ बाबाक स्केच बना देलनि। एहि चारू स्केचमे हुनका दसो मिनटसँ कमे समय लगलनि। हम तँ अवाक भ' गेलहुँ। हुनक हाथ ततेक सधल रहनि, जेना मोनक गतिसँ स्केच पेन चलैत होनि। चेहरा आ भाव-भंगिमा कलमसँ होइत कागत पर जेना साकार भ' जाइ।

हमरा लग किछु आओरो फोटो छल, जकर पुनरूद्धार बहुत जरूरी छल। ओहिमे प्रमुख छल हमर एक आजन्म ब्रह्मचारी पित्ती बम्भोला झा, जनिका हमसभ 'बाबू' कहैत रहियनि। हुनक एकमात्र फोटो, जे आब धूमिल भेल जा रहल छल। हमर नाना ओ दादाक फोटो, ओहो समयक संग धूमिल भेल जा रहल छल आ बड़की दीदी (प्रो. मायानन्द मिश्रक माता श्रीमती दुर्गा देवी)क फोटो, जे संयोगवश हम उपलब्ध कयने रही।

ओ उपलब्ध भेल छल आकस्मिक रूपें पटोरी गाममे। हमर दीदीक अन्यतम सखी श्रीमती विश्वेश्वरी देवीसँ। हुनक नैहरि हमरे टोलमे छलनि। ई सहरसाक पहिल महिला विधायक सेहो भेल छलीह। हुनक पति राजेन्द्र लाल दास, पटना स्थित सुलभ शौचालयक मुख्य कर्त्ता-धर्त्ता छलाह आ ओहि संस्थाक मंत्री सेहो। गाँधी मैदान लग सुलभ शौचालयक 'आदि कार्यालय' छल आ दलदली रोडमे हुनक आवास। प्रखर स्वतंत्रता सेनानी, सम्पूर्ण गाँधीवादी– अपन आचरण आ जीवन दुनूमे। ओ दीर्घजीवी भेलाह आ मृत्युपर्यन्त बिनु चश्माक सभ काज करैत रहलाह। खादीक गंजी आ हाफ पैंट पहिरने, खुरपी लेने बाड़ी-झाड़ीकेँ साफ करैत, सदैव व्यस्त रहयबला कर्मयोगी। अपना काजमे मगन। अध्ययन-मनन आ निरन्तर श्रम। हुनका अनेरे बैसल कखनो नहि देखलियनि। अवकाश प्राप्तिक बाद ओ गामेमे रहैत छलाह आ आवश्यक भेला पर पटना जाइत छलाह। हम हुनका पीसा जी कहियनि। हम पटना स्थित हुनक कार्यालयमे सेहो भेंट करैत रहियनि। सुलभ शौचालयसँ सम्बन्धित दू टा अंग्रेजीक किताब ओ हमरा सस्नेह अपन आशीर्वचनक संग देने रहथि।

तँ एक दिन हठात विश्वेश्वरी दीदी पटोरीमे हमरा कहलनि– रौ केदार, तोँ अपन दीदीकेँ देखने छही? मायानन्दक मायकेँ? हम कहलियनि– नहि, हुनक स्मृति तँ भाइजी (रमानंद मिश्र)केँ सेहो नहि छनि, तँ हमरा कतयसँ रहत? फेर हमरा कहलनि, देखबही अपन दीदीकेँ? हमरा आँखिमे एकटा चमक आयल। अधैर्य होइत हम कहलियनि– दीदी, तोरा लग छहु हुनकर फोटो? हम अविश्वाससँ भरल छलहुँ। ओ कहलनि– थम्ह, अबैत छियहु। आ ओ विदा भेलीह अपन कोठली दिस। एकटा पुरान सन बाकस खोलि, प्लास्टिकसँ झाँपल एकटा ग्रूप फोटो अनलनि। बहुत रास पुरान लोकक एक संग फोटो छल। ओहिमे एकटा फोटो दिस इशारा करैत कहलनि, यैह थिकहु तोहर दीदी दुर्गा। एकरा कातमे हम छी। हमसभ बहिना रही। आब ई दुर्लभ फोटो हमरे टा लग अछि। चकित भेलहुँ जे एखनो ओ ग्रूप फोटो सुरक्षित आ संरक्षित छल। जोगा क' राखल गेल छल।

हम ओहि छोट सन फोटोसँ फोटो बनबौलहुँ। ई फोटो हम बहुत अनुरागसँ रखने रही, जे आनठाम कतहु नहि छल। आइ ई लिखैत काल पटोरी वाली दीदी आ पीसा जी मोन पड़ैत छथि, हुनक अपार स्नेह आ आशीर्वाद मोन पड़ैत अछि, हुनका सश्रद्ध नमन।

ओही दीदीक जेठ बेटा बीरेन्द्र भाइ ललित जीक जेठ साढू रहथि। वैह ललित जीक विवाह सुपौल करौने रहथि।

ओ सभ फोटो हम पाहुन (ललित कुमुद)केँ उपलब्ध करौलियनि। अपन ससुर जी शैलेश बाबूक फोटो सेहो देलियनि। ओ फोटोकेँ आगाँमे राखथि आ तीन-चारि मिनटमे ओहि फोटोक हूबहू स्केच तैयार। अपितु कखनोंकेँ लागय जे मूल फोटोक एहन प्रतिरूप ठीके अविश्वसनीय छल। ओ आधा घंटामे सभटा फोटो स्केच बनाक' हमरा द' देलनि। आइयो ओ स्केच सभ हमरा लग उपलब्ध आ सुरक्षित अछि।

ओहि स्मृतिसँ जुड़ल एकटा घटनाक उल्लेख करय चाहैत छी। दुर्गा दीदीक स्केच जखन तैयार भेल तँ स्टूडियो जा क' ओकरासँ एकटा पैघ फोटो बनबाओल आ शीशाक फ्रेमिंग करबा क' सहरसा गेलहुँ– भाइजीकेँ ओ फोटो समर्पित करबाक लेल। फोटोकेँ भाइजीक हाथमे दैत हम कहलियनि– भाइजी, ई दीदीक फोटो छियैक। ओ फोटोकेँ हाथमे लेलनि आ बड़ी काल धरि चुपचाप निहारैत रहलाह, जेना ओ अतीतमे हेरा गेल होथि। प्रकृतिस्थ भेलाह तँ कहलनि जे मायक अत्यन्त क्षीण स्मृति अछि, नहिये जकाँ। फेर भाभीकेँ सोर कयलनि, अत्यन्त उत्साहमे फोटो देखबैत बजलाह– लिय' केदार आनलक अछि।

ओ सभटा कथा पुछलनि। हम विस्तारसँ कहलियनि। ललित कुमुद जीक नामसँ ओ पूर्ण परिचित रहथि। कहलनि– हुनका हमरो दिससँ धन्यवाद कहि दिहें, ओ बड़ पैघ उपकार कयलनि हमरा लेल।

दीदीक फोटो ने हमरा ओतय छल, ने भाइजीक ओतय। आइयो भाइजीक ओतय ओ फोटो देबाल पर टाँगल अछि।

दोसर, जखन सुसरजीकेँ हुनक फोटोक स्केच देखय देलियनि तँ ओ अचंभित रहि गेल छलाह। हमरा एखनो हुनक मुखमुद्रा मोन अछि। ओ कहलनि जे ई तँ हूबहू उतारि देलनि आ ई हमर सभसँ सुन्दर फोटो थिक। हुनका अपन ओहि स्केचसँ बड्ड मोह रहनि।

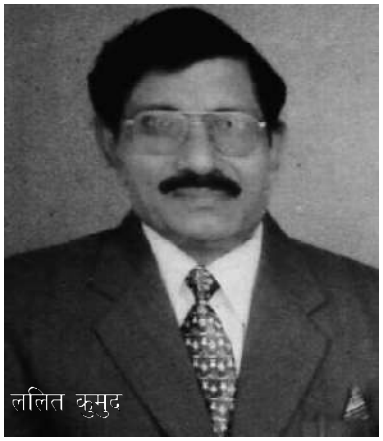
ललित कुमुद

तँ ई छल ललित जीक सृष्टि। आध घंटामे ओ एहन-एहन स्केच हमरा लेल बनौलनि जे हमरा लेल धरोहर सिद्ध भेल। ओ तँ सदैव हमरा पर कृपा करैत रहलाह। हमरा प्रति जे राग हुनका भीतर रहनि, तकरा शब्द देब संभव नहि अछि।

♦

1982क घटना थिक।

हुनका ओतय एक दूपहर बैसल रही तँ वैह कहलनि जे किसुन जीक एकटा तैलचित्र हम बनाक' देब अहाँकेँ। हमर तँ जेना मोनक बात ओ छीनि लेने रहथि। हम उत्साहपूर्वक बाबूजीक दू-तीन टा पासपोर्ट साइजक फोटो हुनका उपलब्ध कराओल। ओ तैलचित्र बनायब शुरू क' देलनि। तैलचित्र बनिक' तैयार भेल मुदा हमरा देलनि नहि। कहलनि जे एकर फिनिशिंग टच बाँकी छैक। मुदा समयक दबाव वा अन्य कोनो कारणे ओ तैलचित्र हमरा नहि द' सकलाह। से अन्ततः नहिये भेल। बाबूजीक ओ दुर्लभ फोटो सभ सेहो नहि रहल हमरा लग। एहि बातक अफसोच हुनको रहनि, हमरा तँ सहजहिं। मुदा आब ओ तैलचित्र उपलब्ध हैत, तकर कोन भरोस...।

♦

ओहि दिन रवि रहैक। हुनको अवकाश रहनि। हमसभ भोजन क' लेने रही। गपशप करैत रही तावत एक व्यक्ति एकटा बैग लेने कोठलीमे उपस्थित भेलाह। ललित जी उठिकेँ हुनक अभिवादन कयलनि आ हाथ पकड़ि हुनका बैसोलनि। फेर हमरासँ परिचय करौलनि– ई छथि प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन। मौन जीकेँ नामसँ तँ जनैत रहियनि मुदा देखने नहि रहियनि। मौन जी ओहि दिन बहुत रास गपशप कयलनि। स्नेहिल आ मिलनसार। हुनक किछु लेख हम पढ़ने रही। ओहि दिन ओ एकटा पांडुलिपि अनने रहथि।, ललित जीकेँ देखयबाक लेल आ ओहि पर विमर्श करबाक लेल। गपशप शुरू भेल आ कखन साँझ भ' गेल, से जखन बिजली-बत्ती जरल, तखन थाह लागल। मौन जीकेँ जयबाक रहनि। ओ जखन विदा भेलाह तँ हमहूँ विदा भेलहुँ महेन्द्रू दिस।

तकरा बाद तँ कमसँ कम सात-आठ वेर मौन जीसँ ललिते जीक ओतय हमरा भेंट होइत रहल। बादक समयमे हुनकासँ पत्राचारो भेल आ भारती मंडन लेल ओ रचनो सभ पठबैत रहलाह। अपन मृत्युसँ किछु मास पहिने ओ हमरा गछने छलाह जे फणीश्वर नाथ रेणु, राजकमल चौधरी, किसुन जी आ जीवकान्त जीक बहुत रास पत्र अछि, तकर जेरोक्स करबा क' पठायब।

हम बहुत आशान्वित रही। मुदा से संभव नहि भ' सकल। ओ पत्र सभ अलक्षिते रहि गेल।

ललिते जीक ओतय एक दिन महेशनारायण सिंह भारतीभक्तसँ भेंट भेल। हुनका देखिते हमरा 'सोनामाटि' (मैथिलीक पहिल डाइजेस्ट) मोन पड़ल। चारि वा पाँच टा अंक पटनासँ प्रकाशित भेल छल। अपना समयमे ई पत्रिका कीर्त्तिमान रचने छल। ओकर छपाइ-सफाइ, रचनाक चयन आ गुणवत्ता अद्‌भुत छल। भारतीभक्त जीक ओहि सम्पादकीय दृष्टिकेँ प्रणाम करबाक मोन होइत अछि। ओहि समयक जतेक प्रभावशाली लेखक रहथि, सभक रचना ओहिमे छपैत छलनि। भारतीभक्त जी हुनका ओतय बरोबरि अबैत रहथि। ओ बरैल (सुपौल) ग्रामवासी रहथि। बादमे ओ जखन गाम आबथि, हमरो ओतय आवि हमरा उपकृत करथि। सोनामाटि-कालक कतेक रास गप ओ हमरा कहने रहथि।

ललिते जीक ओतय हम जानल जे 'सुनो बलाहक' नामक एक कविताक पोथी प्रकाशित भेल अछि, जकर रचनाकार बरूआरी (सुपौल)क रहथि, भरिसक उपेन्द्र नारायण सिंह। ओहि पोथीक एक प्रति ललित जी हमरा देने रहथि। ओ मूल काव्य संग्रह छल वा अनुवाद– से एखन मोन नहि पड़ैत अछि।

हुनका ओतय आरो अनेक रचनाकार लोकनिसँ भेंट-घाँट होइत रहैत छल।

♦

1982मे जखन किसुन रचनावलीक तीनू खंड-क्रमशः, स्वयंवर आ वैचारिकीक प्रकाशन पटनासँ भ' रहल छल तँ ओहि

समय मैथिली अकादमीमे योगानन्द झा निदेशक छलाह। ओ पुत्रवत स्नेह करैत छलाह आ हमर आर्थिक स्थितिक अनुभव करैत मैथिली अकादमी पत्रिकामे निरन्तर हमर रचना प्रकाशित करैत छलाह। ओतय पारिश्रमिकक व्यवस्था रहैत छल। अकादमीक अनेक पोथीक प्रूफ सेहो देखबा लेल ओ दैत छलाह। योगा बाबूक ओहि स्नेहकेँ बिसरब कहिन अछि। किसुन रचनावलीक तीनू पोथीक मुखपृष्ठ ललित कुमुद जी बनाबथि, एक दिन से अनुरोध हम हुनकासँ कयल तँ ओ सहर्स स्वीकृति देलनि। ललित जीसँ पहिनहि गप क' लेने रही, ओहो तैयार रहथि। बाबूजीक एकटा फोटो हम हुनका उपलब्ध करा देने रहियनि आ लगले ओहि पोथीक मुखपृष्ठ तैयार क' देलनि। किसुन रचनावलीक तीनू खंडक अक्षरांकन समेत हुनके द्वारा तैयार कयल मुखपृष्ठ छपल। योगा बाबू सेहो मुखपृष्ठक प्रशंसा कयने रहथि। सुरूचिपूर्ण काज लेल हम ललित जीक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कयल।

एम.ए. कयलाक पछाति हम अपन शोधप्रबंधक निबंधन कराओल। गाइड रहथि गुरुदेव आनन्द मिश्र। लिखब शुरू कयल आ जखन ओ पूर्ण भेल तँ ओकरा टाइप करयबाक छल। मुदा टाइप करयबाक सुविधा हमरा लेल संभव नहि छल। किछु दिन तँ ओहिना छोड़ि देल मुदा से कहियाधरि? आइ ने तँ काल्हि ओकरा टाइप करावहि पड़त। किछु फुराइत नहि छल। एक दिन संयोगवश ललित जीक ओतय बैसल रही तँ अनायास शोधप्रबंधक प्रसंग गप शुरू भेल। ओ हमर स्थितिसँ परिचित रहथि, थोड़ेक काल गुम्म रहलाह। फेर हुनक चेहरा पर एकटा चमक अयलनि, कहलनि जे अहाँ हाथेसँ कियैक ने फेयर क' लैत छी? अहाँक हस्तलिपिमे थीसिसक चमक बढ़ि जयतैक। अहाँ आनन्द बाबूसँ पुछियनु जे हाथक लिखल जमा भ' सकैत अछि वा नहि? ओ जँ हँ कहि दैत छथि तँ थीसिसक कवर हम तैयार क' देब।

हमरा भरोस भेल। आब मोन कनेक उछतगर बुझायल। एक दिन भोरमे आनन्द बाबू लग जखन ई प्रश्न रखलियनि तँ ओ स्नेहपूर्वक कहलनि, हँ, कियैक नहि? शुद्ध-शुद्ध आ साफ-साफ लिखू। जँ अहाँक शोधप्रबंध हस्तलिखित रूपमे पटना विश्वविद्यालयमे जमा होयत तँ ई एहन पहिले थीसिस होयत। इहो एकटा रेकर्ड होयत।

हमर उत्साहक सीमा नहि रहल। जेना-जेना थीसिसक सादा कागत लेल आ करिया रोशनाइ बला कलमसँ तीन सय पृष्ठक थीसिस तैयार कयल। ललित जी ओकर आवरण तैयार कयलनि— अद्भुत आकर्षण छल ओहिमे। जहिया आनन्द बाबूक प्रमाणपत्र आ हस्ताक्षर लेल गेल रही तँ ओहो चमत्कृत भेलाह। उनटा-पुनटाकेँ स्नेहपूर्वक देखलनि। हुनक टोर पर मुस्की पसरि गेलनि। बहुत प्रशंसा कयने छलाह— हमरो आ ललित जीक सेहो।

1982मे आयोजित भेल नवतुरिया लेखक सम्मेलनमे ओ दुनू दिन सपत्नीक उपस्थित भेल रहथि, से मोन पड़ैत अछि। चेतना समिति वा अन्य कोनो साहित्यिक गोष्ठीमे दुनू गोटेक उपस्थिति अनिवार्य छल। अपना घरहु पर ओ एहि प्रकारक आयोजन करबैत रहैत छलाह जाहिमे लग पासक साहित्यकार बंधु उपस्थित होइत रहथि।

गामक सम्बन्धसँ ओ हमर जमाय रहथि। हमर अनन्य मित्र राजीव कुमार वर्माक ओ तेसर बहिनोइ रहथि। हमहूँ हुनका पाहुने कहैत रहियनिन। एक दिन तँ हद भ' गेल। जहिना हुनक बोरिंग रोड बला डेरामे पैसलहुँ तँ अकस्मात ओ झुकिकेँ हमर चरण स्पर्श करय चाहलनि। ज्ञात नहि, कोन भावावेगमे ओ ओहि दिन आबि गेल रहथि। हम चोट्टे हुनक हाथ पकड़लहुँ, कहलियनि— पाहुन, हमरा लज्जित नहि करू। ओ रूकि गेलाह मुदा कहलनि, तुलसीपत्र छोट वा पैघ, थिक तँ ओ तुलसीये कि ने?

ओ हमरासँ पन्द्रह बर्ख जेठ रहथि।
ओ प्रत्येक स्तर पर हमरासँ श्रेष्ठ रहथि।
मुदा, हुनका सन विनम्रता हम कतयसँ आनी...।

♦

ललिते जीक कारणे हम पहिल बेर अन्हरा ठाढ़ी (अन्धरा) गामसँ परिचित भेलहुँ। बादमे पंडित सहदेव झाक कारणे सेहो ओहि गामकेँ जानल। आ पंडित सहदेव झाकेँ अपन मित्र तारानन्द वियोगीक माध्यमे जानल।

ललित कुमुद जीक सम्पूर्ण परिवार विद्यानुरागी रहल अछि। हिनक पूरा नाम छलनि— ललित नारायण कर्ण। ओ ज्ञानसागर, अग्निमित्र, विक्रम जीक नामसँ सेहो लेखन कयल। पारिवारिक सूत्रानुसार हुनक जन्म माघ शुक्ल सप्तमी 1944केँ भेलनि। हुनक पिता प्रख्यात चित्रकार आ शिल्पी, उच्च विद्यालयक प्रतिष्ठित शिक्षक कुलानन्द लाल दास 'कुंद' छलाह। ओ पटना कला एवं शिल्प महाविद्यालय (जे ओहि समय पटना आर्ट स्कूल कहबैत छल)क संस्थापक छात्र राधामोहन एवं पद्मश्री उपेन्द्र महारथीक अनन्य सहयोगी रहल छलाह। ओ ललित कलाक अतिरिक्त लेदर, वुड एवं मेटल क्राफ्टक विशेषज्ञ रहथि। हिनक माता श्यामा देवी सेहो मिथिला लोकचित्रमे महारत हासिल कयने रहथि आ बिहारक राज्यपाल द्वारा सम्मानित भेल छलीह।

ललित जीक आरंभिक शिक्षा-दीक्षा माता-पिताक प्रेममय संरक्षणमे भेल छलनि आ हुनके सभक प्रेरणासँ हुनका कलाक प्रति आत्यंतिक जुड़ाओ भेलनि। ओ मिथिला आ बंगालक चित्रकलासँ प्रभावित छलाह। ओ मिथिला शैलीमे अनेक नव प्रयोग कयलनि आ से प्रयोग सफल रहलनि। काव्य आ कला हुनक आत्मामे बसल रहनि आ जीवनभरि ओ एहि दुनूमे डूबल रहलाह।

बादक शिक्षा पटनाक कला आ शिल्प महाविद्यालय, पश्चिम बंगालमे भेलनि। सत्य मुखर्जी, पद्मश्री राधा बागची, पद्मश्री उपेन्द्र महारथीर, पद्मश्री एम.आर. अचिरेकर आ पद्मश्री श्रीधर महापात्रक स्नेहिल सान्निध्य हिनका प्राप्त रहनि। 1969मे अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलन राजगीरमे भेल छल, जाहिमे हिनक पहिल चित्र-प्रदर्शनी लागल रहनि। ओहि सम्मेलनमे बिनोवा भावे, यू.एन. देवर सहित

अनेक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व हिनक चित्रक प्रशंसा कयने रहथि।

जयप्रकाश नारायणसँ सेहो हिनक जुड़ाओ रहनि। हुनके आग्रह पर ललित जी 'बुद्धसँ गाँधी धरि' चित्र-शृंखला बनौलनि, जकर ओ बहुत प्रशंसा कयने रहथि। तत्कालीन पत्र-पत्रिकामे एहि चित्र-शृंखलाक अत्यधिक चर्चा भेल रहैक। चंपारणमे बिहार सरकारक सौजन्यसँ बनल 'गाँधी स्मारक स्तूप'क अंतिम प्रारूपमे सेहो हिनक योगदान रहल छनि।

'ममता गाबय गीत'मे ई विशेष सहयोगीक रूपमे काज कयने छथि। हिन्दी फिल्म 'सिंदूर का बंधन', 'ज्वाला दहेज की' मे कला निदेशकक संग परामर्शदाता रहलाह। किछु फिल्ममे हिनक डबिंग आ गीत सेहो छनि।

डॉ. जगन्नाथ मिश्रक घर एवं कार्यालयमे, दिल्लीक रेल भवनमे हिनक अविस्मरणीय प्रोट्रेट देखबा योग्य अछि। दक्षिण भारतक उद्योगपति श्रीनिवासनक पूजाघरमे मिथिला शैली पर आधारित भव्य फ्रेस्को चित्र सेहो अविस्मरणीय थिक। चेन्नैमे जयप्रकाश नारायण आ प्रभावतीक संयुक्त चित्र ललित जी आ अंजूक देन थिक। पंडित राजकुमार शुक्लक कोनो चित्र नहि छलनि, से हुनक तैलचित्र ओ बनौलनि, जकर बहुत सराहना कयल गेल। भारती शंकर स्मारक मंडपक लेल योजना सचिवक माध्यमसँ काँची कामकोटिक शंकराचार्यक अनुरोध पर भारतमे सर्वोदयसँ सम्बन्धित चित्रक प्रदर्शनी एवं निर्देशन लेल हिनक सराहना कयल गेलनि। पटना उच्च न्यायालय, एलएन मिश्र सामाजिक आर्थिक संस्थान, सदाकत आश्रम एवं शहीद योगेन्द्र शुक्ल संस्थान अदि स्थान पर हिनक अनेक चित्र आ कलाक उत्कृष्ट नमूना देखल जा सकैत अछि।

ओ 30 अगस्त 2004केँ प्रावैधिक आरक्षी सेवा, बिहारसँ प्रभारी वरीय वैज्ञानिक पदाधिकारी पदसँ सेवानिवृत्त भेलाह। ओ 1960सँ 1972 धरि अखबारनवीसी, दवाफरोशी, गुरुजियाइ, मोजाइक टाइल्सक सुपरवाइजरी, हैदराबाद आयरन एंड स्टील कम्पनीक विज्ञापन प्रचार पदाधिकारी आ सहरसाक ग्राम स्वराज अभियानक सक्रिय कार्यकर्त्ता सेहो रहलाह।

हुनक प्रकाशित कृति थिक 'मैथिली वाङमय आ कर्ण कायस्थक सारस्वत साधना' तथा हिन्दीमे 'मेरे हिस्से की धूप-छाँह'। मैथिलीक गीत, गजल, निबंध आ वार्त्ता आदि अप्रकाशिते छनि। हिनका अनेक सम्मान प्राप्त भेलनि, जाहिमे प्रमुख थिक– साहित्यश्री, साहित्यकला रत्नाकर, कला मयंक, शिखर पत्रकारिता, मिथिला विभूति, शाद अजीमाबादी साहित्य सम्मान, डॉ. हरिवंशराय बच्चन गीति साहित्य सम्मान, सांस्कृतिक सद्भावना साहित्य कला सम्मान, साहित्य साधना कॉमुदी सम्मान, आइआइसीआर, मुम्बई द्वारा एक्सट्रा ऑरडिनेरी क्रिएटिविटी अवार्ड आदि।

♦

फूलदाय, माने अंजू ललित जीक साहचर्यमे रहि कलाकारितामे पारंगत भ' गेल छलीह। ओ वास्तविक अर्थमे एक कवि, संवेदनशील आ विलक्षण कलाकारक पत्नी होयबाक योग्यता रखैत छलीह। पतिक मार्ग पर चलि, पतिक सहधर्मिणी होइत, पतिक गुणकेँ अपना भीतर उतारि लेने छलीह। ललिते जी जकाँ फूलदाय हस्ताक्षर करैत छलीह– अंजू ललित कुमुद। हुनक काजमे बढ़ि-चढ़िक' भाग लैत छलीह। ललित जीक हस्तलिपि विरल छलनि, हुनक हस्ताक्षरो मोनकेँ मोहैत छल। ठीक तहिना फूलदायक हस्ताक्षर आ हस्तलिपि भ' गेल छलैक। अद्भुत साम्य छल दुनू गोटेमे। ओ एक समर्पित पत्नी छलीह।

मुदा विधिक विडम्बना। 1998मे, अल्पायुमे फूलदायक निधन भ' गेलनि। ओ ललित जी समेत एक पुत्री आ दू पुत्रकेँ छोड़ि अनन्त यात्रा पर विदा भ' गेलीह।

फूलदायक असामयिक निधनक बाद ललित जी बहुत अशान्त रहय लगलाह। हुनक जीवनक तार छिन्न-भिन्न भ' गेल छलनि। ओ नितान्त एकसर भ' गेल रहथि। एकटा संवेदनशील कलाकारक आत्मा औनाइत रहल, बौआइत रहल।

♦

अपन अवकाश प्राप्तिक आठ वर्षक बाद 4 अप्रील 2012केँ पटनाक आइजीआइएमएसमे गंभीर बिमारीक कारणे ललित जीक प्रणान्त भेलनि। हुनक निधनसँ साहित्य आ कलाक क्षेत्रमे अपूरणीय क्षति भेल। सरकार दिससँ घोषणा कयल गेल छल जे कला एवं शिल्प महाविद्यालयमे ललित जीक प्रस्तर मुर्त्तिक स्थापना कयल जायत, हुनक नाम पर कला-संस्कृतिक उक केन्द्र स्थापित कयल जायत मुदा ई घोषणा आश्वासन जकाँ एखनो हवामे हेलि रहल अछि।

ओहि महान कलाकारक प्रति हमहीं सभ की क' सकलहुँ– ई प्रश्न तँ अछिये। विश्वास नहि होइत अछि जे ओहन निष्णात आ कला-मर्मज्ञ आब लगले हमरा सभकेँ भेटि सकत। आइ हुनक अनेक-अनेक मधुर स्मृति हमरा भीतर छिड़िआयल अछि, ओ स्मृति सभ आ ललित जी मोनमे बसल रहताह अनन्त काल धरि... ओह! पाहुन, कतेक जल्दी छल अहाँकेँ? जयबाक एहन हड़बड़ी कियैक... मोनकेँ रिक्त-तिक्त क' चलि देलहुँ अकस्मात... ठीके मोन भारी भेल जाइत अछि...।

•

स्वाभिमानकेँ ढ़ाहिक' माङल ताज नामंजूर अछि
जीह बेचिक' खरिदल मिठ आवाज नामंजूर अछि
घुटुर-घुटुर घुटरैत सदा हम पोसी प्रेमक पड़बा, तेँ
कोनो रूपमे कतहु उड़ए, से बाज नामंजूर अछि

– धीरेन्द्र प्रेमर्षि

मैथिली रंगनायक दयानाथ झा

डॉ. प्रकाश झा

नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, न्यू दिल्ली
सम्पर्क : 9811774106

सुपरिचित रंगकर्मी एवं शोधार्थी डॉ. प्रकाश झा 40सँ बेसी नाटकक निर्देशन क' चुकल छथि। *महेन्द्र मलंगियाक सात नाटक* एवं *महेन्द्र मलंगिया : व्यक्तित्व आ कृतित्व* सम्पादित आ *रजिया सुल्तान,* मैथिलीमे अनूदित पोथि छनि। *बिहार सम्मान, अरुण सिंहा स्मृति सम्मान, मिथिला विभूति सम्मान* एवं *युवा रंगनिर्देशक सम्मान*सँ सम्मानित छथि। सम्प्रति राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नव दिल्लीक नाट्यशोध पत्रिका *रंग प्रसंग*क सहायक सम्पादक एवं सुप्रसिद्ध रंग संस्था *संभव,* दिल्लीक अभिनेता छथि।

एहि सत्यकेँ मिसियो भरि नकारल नहि जा सकैत अछि, जे वरिष्ठ रंगपुरोधा दयानाथ झा आब हमरा सबहक बीच नहि रहलाह। ओना त' दयानाथ झा नामक व्यक्ति मिथिलामे कतेको भेल हेताह आ वर्तमानोमे हेबे करताह, मुदा आइ जाहि दयानाथ झाक हम चर्च क' रहल छी से एकदम फराक व्यक्तित्व छलाह। ओ वर्तमानमे पंचतत्वमे विलीन भ' चुकल छथि, मुदा तइयो हमरा सभ लेल, मैथिली रंगमंच लेल, ओहिना उपस्थित छथि, जेना पहिने छलाह।

स्व. दयानाथ झाक संबंधमे हमर परिचय पहिने हुनकर मैथिली रंगयोगदानसँ भेल, बादमे हुनकासँ व्यक्तिगत भेंट-घाँट आ संवाद स्थापित भेल। हमरा जहियासँ मैथिली रंगमंचक बोध भेल आ कोलकाताक मैथिली रंगमंचक संज्ञान हुअ' लागल तहियासँ ल' क' आइ धरि दयानाथ झा जीक संग मात्र दू दिनक सानिध्य प्राप्त भेल अछि। हँ! बीच-बीचमे हम दुनू गोटे फोनपर गप्प सप्प करैत छलहुँ, बस एतबे परिचय।

मुदा, एहि बीच जतेक रंगकर्मीसँ भेंट-घाँट, रंगमंच चर्च-वर्च, कोलकाताक मैथिली रंग योगदान, पत्र-पत्रिकामे छपल आलेख आदिसँ जनतब पाब' लगलहुँ– हम दयाबाबूकेँ अपन अंतरमनमे गुनैत रहलहुँ, अनुभूति लैत रहलहुँ, तैं ओ कहिओ हमरासँ दूर नहि रहलाह। सोसल नेटवर्किंगसँ हमरा वा हमरा सबहक सूचनाकेँ ग्रहण करैत आशीर्वादक लेल प्रायः प्रथम फोन हुनकहि अबैत रहल। नाटक 'गोरक्षविजय'केँ बाद हमर कान ओहि फोनक इंतजारे करैत रहल, मुदा ओ अपनत्व भरल मधुर ध्वनि नहि सुनि पयबाक कचोट रहिए गेल। संगहि किछु अनिष्ठक शंकाकेँ सत्य क' देलक। किछुए दिन बाद अभिशप्त सूचना प्राप्त भेल, जे श्रीमान् अहि क्षद्म रंग लोकसँ प्रस्थान क' चुकल छथि। सरकेँ मैथिल रंग सैल्यूट...।

मैथिली रंगमंचपर बिरले कोनो व्यक्ति एहन हेताह, जे मैथिली रंगमंच लेल अपन योगदानक चर्च कम करथि होथि आ वर्तमान मैथिली रंग परिदृष्य पर विशेष चर्चा करथि होथि से व्यक्तित्व छलाह दयानाथ झा। हमरा नहि लगैत अछि, जे कोलकाताक मैथिली रंगमंचपर जतेक असरि दयानाथ झाक छनि ततेक असरि दोसर किनको हेतन्हि। एकर पाँछा बहुत रास कारण छैक। पहिल त' ई, जे ओ कहियो अपनाकेँ लोकप्रिय होबाक लेल काज नहि केलन्हि।

साल 2011 ई.क गप्प थिक। मैलोरंग द्वारा मैथिली रंगमंचक संवर्धन हेतु लगातार नव-नव प्रयास कयल जाइत अछि। एहि क्रममे मैथिली रंगमंचपर जीवनपर्यंत योगदान हेतु 'ज्योतिरीश्वर रंगशीर्ष सम्मान' प्रारम्भ कयल गेल। पहिल सम्मान वर्ष 2010 ई.मे श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' (माँ)केँ प्रदान कयल गेलन्हि। मैथिली रंगमंचपर महिलाक उपस्थितिकेँ निरंतरता प्रदान करबाक लेल हिनका ई सम्मान देल गेल छलन्हि। आब दोसर वर्ष उपर्युक्त सम्मान लेल चयन समिति बनाओल गेल छल। एहिबेर मुख्य विन्दु छल मैथिली रंगमंचक स्वर्णिम शुभारंभ स्थान कोलकाताक सम्मान करब। कोलकाताक मैथिली रंगमंचक चर्च होइते दूटा नाम हमरा सबहक आगू ठाढ़ भेलाह, जाहिमे पहिल नाम छल श्री दयानाथ झा जीक आ दोसर नाम स्व. श्रीकांत मण्डल जीक । श्रीकांत मण्डल स्वर्गीय भ' गेल छलाह, ई सम्मान जीवित रंग पुरुषकेँ प्रदान करबाक प्रावधान अछि। स्व. श्रीकांत मण्डल जीक नाम पहिनहि हटाब' पड़ल।

'ज्योतिरीश्वर रंगशीर्ष सम्मान' ग्रहण करैत दयानाथ झा

मुदा, हिनकर योगदान अप्रतिम छन्हि तेँ मैलोरंगक अध्यक्ष श्री महेंद्र मलंगिया जीक आदेशानुसार मैलोरंग दिससँ एकटा नव सम्मान युवा रंगकर्मी लेल प्रारम्भ भेल, जकर नाम राखल गेल 'स्व. श्रीकांत मण्डल युवा रंग सम्मान'। तेँ ई कहबामे कनियों संकोच नहि जे 'स्व. श्रीकांत मण्डल युवा रंग सम्मान' संचालनमे सेहो दयानाथ झा

जीक अप्रत्यक्ष सहयोग छन्हि। संगहि श्री दयानाथ झा जीक सत्प्रयाससँ मैथिली रंगमंच कोलकातामे अपन स्वर्णिम ध्वजपताका फहरौलक। तेँ दोसर 'ज्योतिरीश्वर रंगशीर्ष सम्मान'सँ सम्मानित करबा लेल श्री दयानाथ झासँ बेसी उपयुक्त रंग व्यक्तित्व दोसर कियो नहि छलाह। सर्वसम्मतिसँ एहि सम्मान लेल श्री दयानाथ झाक नामक घोषणा कयल गेल। अस्तु ...

सम्मान आयोजनक दिन लगीच आबि रहल छल। तहिया मैलोरंग आर्थिक रूपेँ समृद्ध नहि छल। श्री आनंद झा ताहि समय मैलोरंगक सहयोग करैत छलाह। श्री दयाबाबू हैदराबादसँ सपत्नीक दिल्ली आबि रहल छलाह। दिल्लीमे हिनक ठहरबाक व्यवस्था कोन ठाम कयल जाय से हमरा सभ लेल अति महत्वपूर्ण छल। एहि सभ विन्दु पर हमसभ विमर्श करिते रही कि श्री आनंद जीक फोन आयल। साँझमे भेंटक स्थिति बनल। हुनकर आग्रह छलन्हि 'दयाबाबू जाधरि दिल्ली रहताह ताधरि हुनकर आतिथ्यक भार हमरा देल जाय, हुनका हम अपना घरमे रखबन्हि।' ई सुनि हम सभ किंकर्तव्यविमूढ़ भ' गेल रही। कारण, दुनूमे ने कोनो संबंध आ ने कोनो पूर्व जान-पहचानाक भान छल। तखन मात्र मैलोरंगकेँ सहयोग करबाक लेल हुनक ई आग्रह बुझायाल छल।

'सर! श्री दयाबाबू सपत्नीक दिल्ली आबि रहल छथि, एहिठाम कतेको सज्जनकेँ हुनकासँ भेंट-घाँट करक हेतन्हि, हमर रंगकर्मी लोकन्हि सेहो हुनकर सान्निद्ध पाब' चाहैत छथि। स्वयं दयाबाबूकेँ सेहो कतेको स'र-संबंधीसँ भेंट-घाँट करक हेतन्हि। जँ ओ अपनेक घर ठहरता त' ई सब प्रक्रिया बाधित भ' जायत। तेँ एहि बेर दयाबाबूक लेल हमसभ नीक होटलमे व्यवस्था केने छियन्हि, जाहिसँ किनको कोनो प्रकारक व्यवधान नहि हेतन्हि। दोसर, श्रीमानकेँ दिल्ली अयला बाद हुनका जतय सुविधा हेतन्हि ओहि ठाम व्यवस्था क' देल जेतन्हि।'ई प्रस्ताव हमसभ देलियन्हि, जे आनंद जीकेँ सेहो नीक लगलन्हि।

श्री दयाबाबूसँ हमर पहिल दर्शन 2011 ई. क' निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर भेल जखन हम हुनका रिसीव करबा लेल गेलहु। कद काठीमे जाहिना हम छोट तकर विपरीत ओ लंबा-चौड़ा, हृष्ठपुष्ट, सुदर्शन व्यक्तित्वक हमरा सामने ठाढ़ रहथि। गोर लगलियन्हि। होटल पहुँचलहु। ओ अपन रूममे व्यवस्थितो नहि भेल रहथि कि हुनकर आ हमर दुनू गोटेक मोबाइल घनघनाय लागल। सबहक एक्के गप्प जे दयाबाबू पहुँचलाह, हुनकासँ कखन आ कोना भेंट भ' सकत? हमर छगुनता बढ़िते गेल, जे दिल्लीयोमे हिनकर शुभेक्षुक संख्या एतेक कोना छन्हि? जिनके पुछियन्हि तिनके लग कोनो ने कोनो संस्मरण छलन्हि। अस्तु ...

साँझमे श्री आनंद झा सपत्नी होटल अयलाह। नमस्कार-पाती भेल। चाहक संग आनंद जी गप्प प्रारम्भ केलन्हि। 'सर! हमर नाम भेल आनंद झा, अपने हमरा नहि जनैत होयब। मुदा, हमरा अपनेसँ एक बेर भेंट भेल अछि कोलकातामे... एतबे नहि सर, हम अपनेक ओहिठाम एक साँझ भोजनो कयने छी...।'

'कहिया? बहुत पहिनेक गप्प होयत।' दयाबाबू अपन स्मृतिपटल पर जोर दैत बजलाह। आद्र आँखिए आनंद जी अपन स्मृतिकेँ जीवंत क' र' लगलाह। 'सर! कोलकातामे हावड़ा रेलवे स्टेशनपर हम निःसहाय ठाढ़ रही, जीवनक सभटा बाट बंद भ' गेल छल। बुझू आत्महत्ये एक मात्र रास्ता बँचि गेल छल। जेबीमे एक्कोटा टाका नहि बँचल छल। दू दिनसँ भुखल रही। कनीए दिन पहिने अपनेक घरक पता कियो देने छलाह, ओ पुरजी निकालल आ हम बिना कोनो जान पहचानकेँ अपनेक बासा पर पहुँचल रही। एकटा मैथिल युवा होयबाक नाते अपने हमरा अपना घरमे बैसेलहुँ, हमर स्थिति बुझने बिना भोजन करेलहुँ आ अगिला दिन दू सय टाका द' क' बिदा सेहो कयलहुँ। अपनेक सहयोग आ सकारात्मक सोचसँ हम एतेक प्रभावित भेलहुँ जे हाबड़ा स्टेशनसँ गाम घुमि जेबाक बदला हम सीधे दिल्ली अयलहुँ आ निरंतर मेहनत करब प्रारम्भ कयल। आइ दिल्लीमे हम स्थापित व्यवसायीकेँ रूपमे ठाढ़ छी सर। ओहि दिनक अपनेक स्नेह हमर जीवन बदलि देलक सर।'

ई कहैत आनंद जी आ हुनकर पत्नी भभा क' कान' लगलीह। दयाबाबू हुनका कान्ह पर हाथ दैत स्नेहसँ डबडबायल आँखिए देख रहल छलाह। होटलक एहि कमरामे हम आ हमर संगी सभ अचंभित भ' एहि आत्मीय दृश्यक मौन प्रेक्षक बनल आलोकित होइत रही। एहन छलाह रंगयोद्धा दयाबाबू आ हुनकर रंग व्यक्तित्व। एहन महान व्यक्तिकेँ 'मैलोरंग' काल्हि सम्मानित करतैक से सोचि हम सब गदगद भ' रहल रही।

ज्योतिरीश्वर रंग सम्मानसँ सम्मानित होइतकाल दयाबाबू आद्र छलाह। अपन स्वीकृति वक्तव्यमे एहि बातक अत्यंत दुःख छलनि जे– 'रंग संस्था सब किछु नव सृजनात्मक कार्य कम करैत अछि आ आपसी कटुताकेँ प्रश्रय बेसी दैत अछि। उम्रक एहि पड़ाव पर आबि क' कोनो रंग संस्था मोन पाड़त आ सम्मानित करत तकर छूतियोभरि आस नहि छल। एकर त' आरो नहि जे दिल्लीक कोनो संस्था कलकत्ताक मैथिल नाटक करनिहारकेँ! एहन क्षण हमरा विष्मय संग आह्लादकारी अछि। जुग जुग जीबथु मैलोरंग'।

एकटा बात हमरो आश्चर्य करैत अछि जे– मैथिली रंगकर्मी वा साहित्यकार जिनकासँ गप्प करूँ हुनक कहब रहैत छन्हि जे मैथिली रंगमंच लेल दया बाबूक योगदान अप्रतिम छनि। कोलकाताक मैथिली रंगकर्मकेँ एक सूत्रमे संकलित केलाह... आदि आदि। मुदा जखन वैह लोकनि अपन लेखनीमे अबै छथि त' सब किछु बिसरि जाइत छथि। आ जखन कोलकातासँ एहन स्थित देखार होइत अछि त' आरो कचोट होइत अछि। हालहिमे यानी 2018 ई.मे एकटा पुस्तक 'नाटक आ रंगमंच प्रकृति आ प्रतिमान' प्रकाशित भेल अछि। एकर लेखक छथि कोलकाताक श्रेष्ठ रंग चिंतक डॉ. वीरेंद्र मल्लिक। कोलकाताक मैथिली रंगमंचक पाठमे दया बाबूक नामे मात्र एतबे सूचना अछि जे ओ मात्र चारिटा नाटक निर्देशित कयने छथि। यथा– 'मधुयामिनी', 'शेष नहि', 'आजुक लोक' आ 'मिथिला माँगय खून'। जाहिमे पहिल दूटा 'मिथि यात्रिक' संस्थासँ त' बाँकी दूटा 'मिथिला विकास परिषद' संस्थासँ। जखन कि हिनका बारेमे कहल जाइत छनि, जे अपन कि आन कोनो संस्थाक लेल नाट्य निर्देशन करैत छलाह। नाट्य निर्देशन त' बादमे पहिने कतेको नाटकमे अभिनय करैत रहलाह।

कोनो व्यक्तिक योगदानकेँ व्यक्तिगत संबंधसँ परे राखि निष्पक्ष भ' संयोजित करब आवश्यक। अन्यथा आगामी विकासक नींब कमजोरे रहि जायत आ ढनमनाइत देरी नहि लागत। अस्तु ...

•

होमो युगमे चुलबुल पांडेक विवाह

विभा रानी
ओशिवारा, गोरेगाँव, मुम्बइ
सम्पर्क : 8879770891

मैथिली आ हिन्दीक प्रसिद्ध लेखिका विभा रानी अनुवाद, नाट्य-लेखन, नाट्य व फिल्म कलाकार, फोक प्रेजेंटर, कॉर्पोरेट ट्रेनर आ मोटिवेशनल स्पीकर, अवितोको रूम थिएटर'क प्रणेता एवं फिल्म *'लाल कप्तान'*मे लाल परीक रूपमे तथा यशराज फिल्म्स– *मॉनसून, फुटबॉल, अनवांटेड* व अन्य फिल्ममे कार्यरत। आकाशवाणीमे नैमित्तिक उद्घोषक, ड्रामा वॉइसक संग-संग कविता, कथाक प्रस्तोता। एखनि धरि बाइस गोट किताब प्रकाशित आ साहित्य और रंगमंचमे निरंतर योगदानक लेल एखन धरि 20सँ अधिक सम्मान/पुरस्कार प्राप्त।

अहाँ सभ पतियाउ वा नहि, मुदा ई सत्य अछि जे चुलबुल पांडेक विवाह आ तकरा बादक घटना एक गोट अप्रतिम घटना अछि। अजुका समयमे जहन छौंड़ा-छौंड़ी सभ एक दोसरासँ प्रेम-राग साधबाक बदलामे अपनेमे प्रेम आशनाइक बीन बजब' लागल अछि, ओनामे चुलबुल पांडेक विवाह दास्तानगोइ कि नानी-दादीक खिस्सासँ अधिक रोचक नहि छै त' कोनो कम सेहो नहि छै!

चुलबुल पांडे नीक पढ़ल-लिखल छथि, तैं नीक नोकरीमे छथि, आ ताहूसँ नीक जे नीक पाइ सेहो कमाइ छथि। भगवती भरल-पूरल राखथु हुनकर घर- परिवारकेँ, जाहिमे हुनकर पढ़ल-लिखल माय-बापसँ ल' क' चार्टर्ड अंकाउंटेंट, माने सीए बहीन निशा छै। मल्टीस्टोरी बिल्डिंगमे आधुनिक साज-सम्हार' बला घर छै, मॉल आ मल्टीप्लेक्स जायबला आदति छै, अंग्रेजीएमे सूत'-बैस' बाला कल्चर छै!

अहाँ कहि सकै छी जे तहन एहेन शहरी सूटेड-बूटेड अप-टू-डेट घरक चुलबुल पांडेक विवाह कोन अजगुत घटना भेलै? भेलै यौ! चुलबुल पांडे भने शहरी सूटेड-बूटेड अप-टू-डेट घरक छथि, मुदा सुंदर, गबरू जवान नहि छथि। किन्तु, ताहि से की? मरद लोक आओरकेँ रूप-रंग देखल जाइ छै! राजा जनक सेहो नहि देखलखिन्ह रामक पिंड श्याम रंग! ओ राजकुमार छलाह आ चुलबुल पांडे नीक रोजगारशुदा। परंतु, जमानाकेँ की कहबइ जे ओ कोना बदलि गेल छै! बड़-बुजुर्गक भने ई कहब होइ जे मरद सभ त' साठा पर पाठा होइत छथि आ बालक सभक सूरत नहि, सीरत देखल जाइत छै। मुदा अजुका छौंड़ी सभ हुनकर सभक ई कहब पर पानि फेर दै छै। ओहूमे अगिया बैताल जकाँ छै बाजार, जे आवश्यकताक पूर्ति नहि करै छै, आवश्यकता मात्र गढ़ै छै आ लोक आओर ओकरामे फँसि चकभाउर भेल घुमइत रहइ छथि।

जे-से, चुलबुल पांडे, चुलबुल पांडे छथि। हिन्दुस्तानक प्रत्येक जवान बालक चुलबुल पांडे होइ छै, जे अपन माय-बापक दुलरैता होइत छै, बहीनक रखवार होई छै, समाजक उद्धारक होई छै। मुदा एहेन जवान हिंदुस्तानी बालक चुलबुल पांडे अपने लेल अपन नहि होई छै। जवान भ' रहल चुलबुल पांडेक सभक आँखिमे इच्छाक तरेगन नहि टिमटिम करै छै, सोझे चान आ सुरुज बरकए छै। हुनक इच्छाक पसरइत, भफाइत आ खौलैत पानिकेँ माय-बाप सोझे- सोझे बर्फक सिल्ली बना दै छथि!

माय-बाप सोझे-सोझे बारि दैत छथि– 'बाऊ यौ! पूब जाऊ, पश्चिम जाऊ, उत्तर जाऊ, मुदा दक्षिण जुनि जाऊ!' तहिना 'बाउ यौ! मांस-मांछसँ ल' क' गाय-सुअर भने खाउ, जीन्स, जैकेटसँ ल' क' कारी केशकेँ लाल, हरियर, पीयर भने क' लिय' कि बेलमुंड भ' जाउ कि घोड़ाक पोंछी, माने पोनी टेल बना क' सगर विश्व घूमि लिय' मुदा बाउ यौ! बस! होनहार आज्ञाकारी बालक बनल रहू। एकरासँ आगाँ नहि बढ़ू! हम सभ अहाँक माय-बाप, गार्जियन, अल्ना-फल्ना, शुभचिंतक छी ने! संसारमे लड़कीक कोनो कमी छै? एकसँ एक सीता कि रंभा कि राधा कि शूर्पनखा धरि, जे कहब, तकरे पथार लगा देब।'

जवान चुलबुल पांडे आज्ञाकारी राजा राम बनि गेलाह आ पिता प्रेमिल दशरथ। मुदा एहेन राम आ दशरथकेँ विश्वामित्रक रूपमे नहि कोनो एहेन भेटलन्हि, जे हुनका जनकपुर ल' जैतियन्हि! राजा राम जेठ छलाह आ लोकक कहब छन्हि जे हुनकर एक गोट बहीन सेहो छलीह शांता नामसँ। मुदा नहि देखल-सुनल जे जौं ई बहीन छलीह त' हुनकर बियाह-दान लेल राजा दशरथ कि राजा राम कहियो कोनो फुफुरिया काटने होथि। मुदा

अजुका चुलबुल पांडेक माय-बापक पहिल प्राथमिकता चुलबुल पांडेक छोट बहीन निशा भ' गेलीह! सीए बहीन निशा! भेलहूँ यै निशा दाइ सीए, बड्ड नीक गप्प। मुदा, अपना जिनगीक झालरि अहाँ अपनेसँ बिनबाक दुस्साहस जुनि करूँ। हम सभ छी अहाँ लेल।

तैँ सीए निशा अप्पन प्रैक्टिस पर जुटि गेलीह। नीक, होशियार छलीह। सरस्वती अपन गेठ लक्ष्मी संग जोड़ि लेलीह। चुलबुल पांडे सेहो कमाइ छलाह। उमेर हुनकर सेहो भ' गेल रहन्हि। मुदा माय-बाउजी ल'ग यक्ष प्रश्न जकाँ ठाढ़ छलीह-सीए बहीन निशा।

'बाउ यौ! बिन ओकरा हटेने अहाँकेँ कोना पार-घाट लगाउ? लोक की कहत?'

लोक कहत कि नहि, पता नहि, कहलकै कि नहि- बूझल नहि! लोकक कहल ओ सभ सुनलन्हि कि नहि, सेहो मालूम नहि! ई अबस्से बूझ'मे आएल जे चुलबुल पांडे आ हुनक बहीनक लगन कोनो कन्हा कौआ बरगदक कोनो खोहरमे नुका आएल छै। सीए बहीनकेँ मुह-कान-आँखिकेँ माय-बाउजी तेना ने सीएकेँ राखि देलखिन्ह, जे ओहि मुहसँ कहियो ककरो लेल कोनो बकार नहि फुटलै, कानमे कहियो कोनो मधुर ध्वनि सुनबाक ताब नहि रखलकइ आ आँखिसँ ककरो देखबाक बदला ओ गांधारी सन पट्टी बान्हि लेलकै! ई हमर देशक अजुका पीढ़ी छै, जिनकामेसँ एखनो बहुत रास चुलबुल पांडे आ निशाकेँ अपनेसँ अपन जीवनसंगी चुनबाक अनुमति नहि छै।

चुलबुल पांडे माय-बापसँ फराक दोसर शहरमे नौकरी करै छथि। भिन्सरे उठि निकसि जाइ छथि ड्यूटी पर! भोरक जलखै आ दिनक भोजन त' ऑफिसक हवाले। मुदा, हिंदुस्तानक कोनो स्कूल कि ऑफिस कि संस्था कि कैंटीनक विकास स्वास्थ्यक आधार पर नहि होइत छै, जाहिमे खा क' लोक अपन स्वास्थ्यसँ निश्चिंत भ' अप्पन काम-काजमे लागि सकथु। चुलबुल पांडे एकर अपवाद नहि छथि। ऑफिससँ देर राति घुरैत छलाह त' किछु बनेबा-खेबाक होश नहि रहै छलै। माय-बाउजीक सदाव्रत उपदेश- कोनो भनसा कर'बालीकेँ राखि ले बौआ! हम सभ सदिखन त' तोरा ल'ग नहि रहि सकै छी।

माय-बाउजीक सदाव्रतक पालन करैत बौआ चुलबुल पांडे कैकटा भनसा कर' बालीकेँ राखै छथि, मुदा पनिछोछर दालि, टकटक तकैत बैगन आ खुदियाह भात ओकर रहलो-सहल भूखकेँ मारि दैत छलै। अंततोगत्वा जे सभक हाल, से हुनको हाल! बेमार पड़लन्हि। डाक्टर सभसँ पहिने बौआ चुलबुल पांडेकेँ सलाहक बिरबा पकड़ेलखिन्ह— 'टेक होम-मेड फूड!' चुलबुल पांडे ल'ग नहि होम छलै, नहि मेड आ नहि फूड! चुलबुल पांडे सोचलन्हि— 'अहिसँ नीक त' आर्मीए अफसर बनि गेल रहितहूं! होम, मेड आ फूड-तीनू उत्तम क्वालिटीक भेटतियन्हि! भ' सकै छलै जे होम मेड फूड बनाब' बाली सीता-सुन्नरि सेहो भेटि जयतियन्हि।

सीए बहीन निशा एक कंपनीसँ दोसर कंपनी घूम' लगलीह। कारण? मासे-मासे माय-बाउजी हुनका बजा लैत छलखिन्ह— आइ अहि गामक कुटुम आबि रहल छथि, काल्हि ओहि गामक। बर कलकत्तामे त' कलकत्ता जाउ, दिल्लीमे त' दिल्ली बउआउ! आजुक जुगमे, जहन शनि, रवि आ छुट्टीयोक दिनमे कंपनी अपना लोक सभकेँ दू घंटा बेसी सुत' नहि दै छै, ऐहेनमे के मासे-मासे हुनका छुट्टी दितियन्हि? नौकरी छुटि जाइ छलै। बहीन शून्य पर आबि जाइ छलीह! हृदय आ बैंक दुनू ठाँ शून्य बढ़ैत गेलै आ ओ शून्यक गोला ओकर मुह संगे दुनू आँखि पर चतरैत गेलै!

चुलबुल पांडेकेँ बूझ'मे नहि आबै छलै जे ई कोन समाज छै, जाहिमे लोक सभ लड़की देख'क लाथे दस-दस गोटेसँ आबए, दस-दस तरहक गप्प करए, दस-दस तरहक व्यंजन भकोसए आ दस-दसटा बहन्ना मारिक' टरि जाए! चुलबुल पांडे अनचोके निशा बनि जाइ छथि, निशा बनि ओकर दुख-दर्द बूझ' लागै छथि। चुलबुल पांडेकेँ 'दबंग' सिनेमाक संवाद मोन पड़ै छै 'थप्पड़ स े नहीं साहब जी! प्यार से डर लगता है।'

सत्ये चुलबुल पांडे प्यारसँ भय खाए लगलाह! किओ थप्पड़ मारितए त' ओहो ओकरा धुनि दितियन्हि! मुदा प्यार! माय-बाप अपना प्यारमे कियैक एतेक सानि लेलखिन्ह ओकरा दुनूकेँ? कियैक लोक-वेदकेँ सेहो सानि लेलखिन्ह! एहेन रूपमे, जे चुलबुल पांडे आ निशा दुनू महत्वपूर्ण होइतहु गौण होइत गेलाह! महत्वपूर्ण रहि गेलन्हि— लोक आ समाज आ हुनक बोलीक भय। समाज की कहत? लोक सभ की बाजत?

इएह लोक आ समाज सभमे एकबैक हुलबुल्ली मचि गेलै। माय पछारि खा क' खसि पड़लै! बापक कंठ बाझि गेलै! शहरक ओहि दिनुका सभटा अखबार बाबाजीक बेल भ' गेलै। अखबारमे चुलबुल पांडेक सद्य विवाहित फोटो छलै। मात्र चुलबुल आ हुनकर चुलबुलीएक नहि! निशा आ निशाक जिनगीक अन्हार कटैत प्रभाकरक सेहो! चारि कॉलमक समाचार छलै, मीडिया पर चुलबुल पांडेक इंटरव्यू छलै। की कहै छलाह चुलबुल पांडे? एह! अपना मोनसँ पूछियौ ने! हमरा अहाँ सभक मोनमे चुलबुल पांडे आ निशा बैसल छथि ओही मोनमे हुनक माय-बाप सेहो बैसल छथि!

यौ भाई! यै बहीनदाइ! सदिखन अपने मोनक चलेबै त' भेटत की? घड़ीघंट? चुलबुल पांडे होम मेड फूड लेल होम मेड उपाय केलन्हि आ होम मेड फूड बनाब' बाली ल' एलन्हि! फूड बनाब'वाली बाजार आ उपभोक्ता रूपकेँ कटइत खाली हुनके देखलकै। हुनकर कारी खटखट रंग आ बाँस जकाँ नाम एकछर देह आ आगाँ निकलल दू टा दाँत नहि देखलकै। ओ एहेन सख्त नारियलक भीतर स्नेह आ प्रेमक पानि आ फल पओलीह। ओ प्रेमसँ ओहि पानिकेँ अप्पन आँखि-माथसँ लगाब' लगलीह। दुइए मासमे चुलबुल पांडेक देह भरि गेलन्हि, कारीसँ गोर भ' गेलाह, नाम छरहरसँ भरल-पूरल लाग' लगलाह! भूखसँ उपजल जे रोग-ब्याधि सभ छलै, से सभ बिला गेलै!

चुलबुल पांडे निशाकेँ सेहो रोगी बन' स' बचा लेलन्हि! शाम्ब भाइ बनि अपन बहिन सामाकेँ बुझेलन्हि 'पढ़ल-लिखल छी। कमाइ छी! हिम्मत करू! आ नहि त' हमरा कहू!' भाइक भरोस

आ प्रेमसँ निशाक जिनगीमे भोरक उजास पसर' लागलै! निशा नामसँ निशा छली आ देहसँ भक-भक उज्जरि। तइयो घरक आ कुटुमाइत सभक नजरिमे माड़ी पड़ि जाइ छलै कि फूला! प्रभाकर नामसँ प्रभाकर रहितहु मुह-कानसँ पूर्ण अमावस छल! माय-बाप पहिल बेर चुलबुल पांडेकेँ सरापलन्हि- 'अपना त' गारामे फंसरी लगेबे केलक, बहीनोक गारामे फंसरी लगा देलकै। एहेन उनटल खापड़ि चुनि देलकै। हम सभ मरि गेल छलियै की?'

पहिल बेर चुलबुल पांडे दक्षिण दिशा गेलन्हि— 'माय! बाउजी! अहाँ जीवित रहू आ हमरा सभ पर अपन माथ-हाथ देने रहू। अहाँ सभक सद्प्रयासक कारणें आठ बरीसमे हम दुनू भाइ-बहीन पैंतीस आ तीसकेँ भ' गेलहुँ! हमरो जिम्मेवारी अछि। हमरो आओरक जिनगी अछि! हमरा सभकेँ आब अप्पन-अप्पन जिनगी जीब' दिय'। हमरो दुनूकेँ दक्षिण दिशा जाए दिय'! किछु गलत नहि होयत आ जौं होयबो करत त' तकर जिम्मेवारी हमरा दुनूक माथ पर।'

की अहाँ लग पहुँचल चुलबुल पांडेबाला अखबार? आइ ओ सभकेँ भोज सेहो खुआ रहल छथि। ज्वायंट पार्टी चुलबुल पांडे आ निशा... छोड़ू! निशा कहियो अपना नामक आगाँ सरनेम नहि लगेलीह! अहाँ आओरकेँ भय भ' रहल हुअए त' नहि जाउ अथवा कोनो कोन्टामे नुका रहू! आ यदि लागय जे अपना जिनगीकेँ अपना हिसाबे जीब' लेल काज केलन्हीए त' भरि मोन दुनूकेँ, दुनू नहि, चारूकेँ आशीर्वाद दियौ! माय-बाउजी आइ नहि त' काल्हि ऐबे करताह! जेता कत'?

आ हे, हे हे! यौ भाइ! अहाँ कत' चुपे-चुपे निकललहुँ? ओहोह! पहुँचि गेलाह गाम पर! पुछारी लेल! देखियौ! एम्हर चुलबुल पांडे विद चुलबुली आ निशा वर्सेस प्रभाकरक रिसेप्शनक भोज खा क' रमेसर, कमेसर, गुणेसर सभ बारी-बारीसँ पहुँचि गेलाह— कनेक मोनसँ आ बेसी बेमोनसँ माय-बापकेँ भरोस दियाब' लगलन्हि- 'की करबै! आइ-काल्हिकेँ धिया-पूता सभ अहिना बेकहल भ' जाय छै। आ बेटी सभ त' आओरो छान-पगहा छोड़ाब' लागै छै।' माय-बापक असली नोर पर ओ सभ कनेक अप्पन नकली नोरक फूंही छोड़लन्हि, धीरक हवा-मिठाइ पकड़ेलन्हि आ फेर आस्तेसँ कहलन्हि— 'हे! हमरा बड्ड खगता अछि! अहाँक बेटीक बिआह त' आब भइए गेल! पाइयो नहि लागल एक्कोटा! अपनेसँ केने रहितहूँ त' किछुओ नहि त' बीस लाखक धक्का त' लगबे करैत! आइ-काल्हि त' बेटोक बिआहमे चारि-पाँच लाख अपना दिससँ लागि जाइ छै! धरू जे पचीस लाख सोझे-सोझे बाचि गेल! की करब आब एतेक पाइ राखि क'? अहिमेसँ हमरा तीन-चारि लाख द' दिय'। कर्जे बूझि क'! बेटीक द्विरागमन कराबक अछि। जमाय आ ओकर घरवाला सभ फेर दू लाख के डिमांड केने अछि। ओकरा बिनु ओ सभ दिन नहि द' रहल छथि विदागरीक।'

•

धनमे धान आओर धन गाय
किछु-किछु सोन आर सब छाय
— डाक

फिरिस्त

चण्डेश्वर खाँ

राजनगर, मधुबनी
सम्पर्क : 8709249528

सिंचाइ विभागसँ अवकाश प्राप्त चण्डेश्वर खाँक पहिल लघुकथा *भाग्य* मिथिला मिहिर पटना 1983क जनवरी अंकमे प्रकाशित भेलनि। आकाशवाणी दरभंगासँ कतेको बेर कथापाठ कएनिहार खाँ साहेब प्राथमिक लेखन विद्यार्थीक नामसँ केलनि अछि।

कहिया ने ऑफिसमे सरकार दिससँ साफ आदेश आबि गेल रहैक, जे बान्हकेँ ठीकसँ मरम्मति क' देल जाय, जाहिसँ बान्ह नहि टूटए।

इन्जीनियर साहेब सभ पहिनेसँ तैयारे छलाह, रफ फिरिस्त बहुत पहिने बनि गेल रहैक, आब ओकरा फेयर कयल जयतैक।

बड़ा साहेब सभकेँ अपना चेम्बरमे बजाक' गोपनीय बैसार कयलनि, आ बजलाह— देखू हम सभ बड्ड समय बिता देलियैक, आब एकोरत्ती देरी नहि करू।

हँ! हम रफ फिरिस्त देखने छी, ओहिसँ काज नहि चलत। एहिमे कमसँ कम पचास परसेन्ट आओर बढ़ा दिऔ।

एकटा जे.ई. बाजल— सर ई कोना हेतैक? कियाक ने हेतैक, हमर राजधानी बाला घर अधूरे अछि, आ अहाँक बचियाक वियाहक उमेर बितल जा रहल अछि।

हँ! एहि बेर उपर धरि मोट लिफाफ पहुँचाब' परत, पछिला बेर चीफ साहेब हमरा पर बड्ड खिसियाल रहथि।

देखू अहाँ सभकेँ साफ-साफ कहि दैत छी, तीन दिनक भीतरमे फिरिस्त तैयार भ' जयबाक चाही, चारिम दिन हम अपनहिसँ सभ ठामसँ पास करा क' आनि देब।

बेसी छोट-छोट फिरिस्त बनायब, जे काज विभागीय स्तर पर हेतैक, बाद बाकी ठीकेदारी चलतैक।

एखनेसँ अहाँ सभ अपना-अपना काजमे लागि जाउ। बीचमे बैसल एकटा इन्जीनियर बजलाह— सर हमर बेटाक डोनेसनक इंतजाम नहि भेलासँ बैसले अछि।

हँ! अहाँ अपन माथ लगाउ आ कमलेश्वरी माताक पूजा करू, कबुला करू जे कहुना एहि बेर बान्ह टूटि जाय, तखन देखू ने एम्के बेरमे सभहक समस्याक समाधान भ' जायत।

•

पसाही

शिवशंकर श्रीनिवास
लोहना, मधुबनी(बिहार)
सम्पर्क : 9470883301

मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासजीक *त्रिकोण* (सहयोगी प्रकाशन) *अदहन, गामक लोक तथा गुण-कथा* कथा-संग्रह प्रकाशित छनि। *बदलैत स्वर* हिनक मैथिली कथाक आलोचनात्मक अध्ययन थिक। हिनक सम्पादनमे नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डियासँ प्रकाशित *मैथिली कथा संचयन* पोथी चर्चित ओ प्रशंसित अछि। एकर अतिरिक्त *कतेक दिनक बाद* ओ *परिचय शतक* पोथीक सम्पादन सेहो कयने छथि। किरण साहित्य पर हिनक कार्य उल्लेखनीय छनि। किरण साहित्य सम्मानसँ सम्मानित श्रीनिवासजी कथाक अतिरिक्त कविता, गीत ओ समालोचना सेहो लिखैत छथि। सम्प्रति कल्याणी मिथिला संस्कृत महाविद्यालय दीप(मधुबनी)मे उपाचार्य पद पर कार्यरत छथि।

मनमोहन पाठक अपन दलान पर बैसल कोनो पोथी पढ़ैत छलाह। दिनक तीनसँ ऊपर गर्मी मासक समय रहैक। रौद छलैक, किन्तु एक दिन पहिनिहि वर्खा भेल रहै तेँ ठंढ़ाउन समय लगै छलै।

तखनहि हुनका दलानक आगू कोनो आहट बुझेलनि आ ओ अपन मूड़ी उठाकेँ तकलनि— 'अरे नूरो दीदी।' नूरजहाँ सत्तारक बेटी छलि। सत्तार हिनक पिताक बालपनक संगी रहथिन आ ओ अपन अन्तिम काल तक तकरा निमाहलनि, हिनक पिता सेहो बड़ संग देने छलथिन। नूरजहाँ हिनकासँ थोड़े जेठ आ ई सभ दिन अपन सत्तार चच्चाक बेटीकेँ नूरो दीदी कहलथिन। गामक उच्च विद्यालयसँ दस साल पहिने अवकाश ग्रहण कयलनि अछि। एहि इलाकाकामे नीक विद्वानमे गिनती छनि। पढ़ैयो दिनमे खूब तेज छलाह। एहि गामक बहुतो हिनक विद्यार्थी रहलए। सभ हिनका गुरुवत सम्मान दैत छनि।

नूरो दीदी सभ दिन हिनका छोट भाइक स्नेह दैत रहलि। राखी बन्हैत रहलि, वैह नूरो दीदी दलानक बाहर ठाढ़ि छलि।

पाठक जी पुनः पुछलथिन— 'की बात छै नूरो दीदी?'

'नै बौआ, हम नूरो दीदी नहि, आब हम मुसलमाइन छी।'

—ओ उदासक स्वरमे बाजलि।

'एना किए बजै छेँ?'

'बौआ, पहिने हम एहि गामक बेटी रही, ककरो दीदी, ककरो मौसी मुदा सभ किछु...।' कहि कान' लागलि।

चौंकलाह पाठक जी, उठि क' ठाढ़ भेलाह आ पुछलनि— कहबो त' करबेँ, जे की भेलौए?

'बहुत किछु भेलए। अच्छा ई कह' बौआ दिल्लीक ओ जमाती सभ, हमर के लागत? ओ सभ ई कोरोना बेमारी फैलेलक तइमे हमर कोन दोख?

'ई रोग कोनो जमातियेसँ थोड़े भेलैए, मुदा ओकर सभक थोड़े गलतीक कारणेँ बेसी पसरलै। आरो-आरो बहुत कारण छै। मुदा तोरा की भेलौ?' पाठक जी कहलनि।

'तोँ इहो कह' कोनो हिन्नू जँ कोनो मुसलमानकेँ मारि देलकै, तइमे दोसर हिन्नूक कोन दोख?'

'केवल प्रश्ने पुछबेँ कि बातो कहबेँ जे एहि सभसँ की भेलहुँ? के की कहलकौ?'

'दाहुर दासक बेटी आइ दू-तीनसँ हमरा कहैए जे ई गाम हिन्नूक गाम छियै। तोँ एहि गामसँ भाग। तोरे जातिक कारणेँ ई बेमारी पसरलैए। हम गपकेँ हँसीमे ली। आइ भोरे-भोर गारि पढ़ि क' कहलक जे नै भगबेँ तँ भकसी-झोंकि मारबौ। की कहिय' ई नान्हिटा वण्ठा जतेकटा हमर पोता अइ, ओ तकर बाद की ने कहलक। हमहूँ कहलियै। ओ त' भल होअय सरयुग यादवकेँ, जे बीचमे ठाढ़ भेल। आइ जँ हमरो बेटा-पोता गाममे रहितय त' की ने भ' जेतै। से तोँ कह', की हम एहि गामसँ भागि जाउ? की ई हमर गाम नहि छी? गामो हिन्नू-मुसलमान होइ छै?'

—कहि कान' लागलि नूरो।

'के भगेतौ तोरा?' पाठक जी कहलनि—

'नै हम एक घरा छी ने?' नूरो पुनः कानि क' बाजलि।

'ई पूरा समाज सभ जातिक सभ धर्मक छै। कियो ने भगा सकै छौ तोरा, फेर हम सभ एहि गाममे की करै छियै?'

'से त' कते गोटय तखनहि वण्ठाकेँ कहलकै, मुदा की कहिय' बौआ, बुढ़बा त' आब बेसी नहि सकै छै मुदा किछु तरकारी-तीमन लगा लै छै से आब झिंमनी आ परोड़ फरब शुरू भेलैए। से ओहि टोलमे केओ नै लै छै। तखन कह' जे तरकारियो हिन्नू-मुसलमान होइ छै?'

'तखन की करै छीही तरकारी?'

'साँझ पड़ै छै त' फोचरन दासकेँ द' अबै छियै। ओ दाम खसाकेँ लै छै। की करतै ओ। ओकरो त' नफ्फा चाही।'

—नूरो बाजलि।

'ठीक छै। नूरो दीदी। हम तोहर छोट भाइ छियौ। हम गाममे रहब त' तोहूँ रहबेँ। चिन्ता नहि कर'। अबै छियौ। हमरो लेल थोड़े परोड़ रखिहेँ। पाठक जी ओकरा भेरोस दैत कहलनि।

'ठीक छै आब' चारि बजे बैसारो छै ओतै महावीर थानमे। हम ओतहि तोहर बाट तकब'...।' कहि विदा भेलि नूरो।

नूरो त' गेलि मुदा मनमोहन पाठक बहुत चिन्तित भ' गेल छलाह।

हिनका मोन पड़लनि सत्तार चच्चा। नूरोक पिता। बहुत नीक लोक। ओ हिनक पिता संगे पढ़नहुँ छलाह। दुनूमे बहुत प्रेम रहनि। ओ शाकाहारी छलाह किन्तु हिनक पिता माछ खाइ छलाह। हिनक पिता कहथिन— सत्तार, तोँ पूर्व-जन्म ब्रह्मण छलेँ। सेहो मिथिला-बंगालक नहि आन क्षेत्रक जत' लोक माछ नहि खाइए।'

सत्तार चच्चा हिनक पिता गप पर हँसय लागय। 'नै मुसलमान छी त' नमाज पढ़ै छी। माछ-मौस खयने थोड़े लोक मुसलमान होइ छै?'

सत्तार चच्चाक बड़ आदर करथिन हिनक पिता। हिनका सभ भाइ वहिनकेँ अपन पित्तीसँ बेसी सत्तारे चच्चासँ स्नेह भेटल छनि।

हिनका लेल ओ नारियल वला चॉकलेट जरूर अनथिन। हिनका रंग-विरंगक खिस्सा सुनबथिन।

हिनका गाममे एक्केटा मुसलमानक घर। लोक कहै जे एकर एक पीढ़िया वंश छै। सभ पुरुषामे एक्केटाक बेटा, किन्तु सत्तार चच्चाकेँ बेटा नहि मात्र एकटा बेटी, यैह नूरो।

नूरोक वियाह बड़ कठिनसँ कटमा गाम भेल रहै, कारण सत्तार मियाँक शर्त रहै जे नूरोक व'रकेँ घरजमैया भ' क' रह' पड़तै। से अन्तमे भेलै।

नूरोक पति इदरीश बहुत मिलनसार आ काजुल। भरि गामक लोक ओकरा पहुना मियाँ कहै छै। नूरोक ओहिठाम दाहा बनै। से कहाँदन पहिने एकर पर-बाबा आ कि बाबा दाहा एहि कारणेँ नहि बनबै जे ओ असगरे रहय। किन्तु, एहि गामक समाज जोर मारलकै— 'नहि सभ गामक मुसलमान दाहा बनबैए। तोँ किएक ने बनेबेँ? आ सभक सहयोगसँ बन' लगलै। हेमनि धरि बनै छलै। नहि जानि एहि बीच की भेलै? बन्न भ' गेलै।

किछु दिन पहिनेक बात छियै। ई नूरो दीदीसँ पुछलथिन— 'आँय गइ नूरो दीदी। तोहर दुनू बेटा-पुतोहु त' मुम्बइये रहै छौ?'

'हँ ओतै रहै छै, वैह सालमे बेरा-बेरी गाम अबै छै। आब त' दू टा पोतो नोकरी करैए। ओकरो शादी करेबाक छै।'

'आ जँ ओतै क' लौ।'

'से क' लेतै त' नीक, मुदा नै करतै आ एहि ठाम बड़का बखेरा कहै छै।'

'की?'

'आन गामक मुसलमान कहै छै, जे तोँ ओत' एक घरा छेँ। ओ हिन्नूक गाम छियै ओत' हम अपन बेटीक शादी कोना करायब? ओ सभ की जान' गेलै जे हम एत' कोना भाइ-बहिन भ' क' रहै छियै।' नूरो दीदी गर्वसँ कहने रहै।

से सोचैत मनमोहन पाठककेँ भेलनि जे आइ नूरोक एहि गर्व पर चोट पड़लैए। तेँ ओ एते दुखी छनि।

नहि रहल भेलनि मनमोहन पाठककेँ आ घर आबि कुर्त्ता पहिर विदा भेलाह त' पत्नी पुछलथिन— 'कत' जाइ छियै?'

पाठक जी पत्नीकेँ नूरोक सभटा खेरहा सुना देलथिन। गप सुनि पत्नी कहलथिन— 'एहन बात एहि कारणेँ थोड़े भेलै जे ओ मुसलमान छी? हमरा नैहरक नेङर चौधरीक बेटीक सासुरक परिवार सेहो अपन गाममे एक घरा छलै। ओकरा ततेक कयलकै जे उपटि क' दोसर गाम आबि बस' पड़लै।'

'अरे, से हमरा नहि बुझल छल। के ओ जकर सासुर वलाट रहै?'

'हँ, हँ एक बेर त' आयल रहय ककरो नाम लिखाब' अहाँक स्कूलमे।'

'ओ सभ कत' गेलै?'

'ओतहि कोनो गाम छै, जत' ओकर व'रक मातृक छलै।'

पत्नीक गप सुनि गुम्म भ' गेला पाठक जी। मनमे भेलनि जे समाजिक सद्भावक बीच ई स्वार्थी राजनीतिक पार्टी सभ तेना ने जाति आ धर्मक बीच द्वेषक पसाही लगा देलकैए जे सौहार्द भावकेँ जरा रहलैए। वन्धुत्व भाव भस्म भ' रहलै। एकहि धर्मक जातिक बीच जहिना ई पसाही लागल छै तहिना एक धर्म ओ दोसर धर्मक बीच। आखिर ई समाज कोना बचतै? के बचेतै? एहि आगिकेँ मिझेबाक लेल फेर एकटा युद्ध लड़' पड़तै। से जेना निश्चित लड़' पड़तै...। यैह सभ सोचैत मनमोहन पाठक ओत' पहुँचलाह।

ओहि ठाम महावीर-थानमे पंचैती भ' रहल छलैक। कि भ' गेल छल। सभ हिनके बाट तकै छल जे मास्टर साहेब औताह त' हुनका सुखद बात सुनेबनि।

ओहि ठाम जखन ई पहुँचलाह त' सभ ठाढ़ भ' गेल मुदा ई सभकेँ बैसबैत कहलथिन— अहाँ बैसै जाइ जाउ, मानल जे एहि

ठाम जतेक गोटय छी प्रायः सभ गोटय हमर छात्र रहल छी किन्तु एखन एहि महामारी कोरोनाक समय प्रणाम-पाती हाथे जोड़ि क' होअय।'

सभ हँसै लागल मास्टर मनमोहन पाठककेँ प्रणाम कएलक। सभकेँ आशीर्वाद दैत पाठक जी कहलनि– 'अहाँ सभ हमरे जकाँ गमछासँ मुँह बन्हने छी आ दूरी बना क' बैसल छी आनन्द भेल जे एहि गामक लोकमे कतेक नीक विचार भ' गेल छै।'

सभ मास्टर साहेबक गप्प सुनि हाथ जोड़ि हँस' लागल किन्तु मास्टर साहेब कहलनि– 'की कहू आइ हम नूरो दीदीक संग जे भेलैए ताहि ल' क' बहुत दुखी छी। एहि परोपट्टामे हमर गामक सामाजिक प्रेम-भावक चर्चा होइ छल। हमर गाम कएक रूपमे आदर्श गाम अछि। ताहि ठाम एहन बात हमरा दुखी कयलक।'

हिनक गप सुनि हीरालाल कामति ठाढ़ भेलाह ओ एहि गामक सरपंच सेहो छलाह ओ हाथ जोड़ि कहलनि– 'श्रीमान हम अपनेक विद्यार्थी छी। सरयुगे यादव ई पंचैती बैसेलनि हेँ नूरो दीदी नहि आ बुझू सरयुग यादव संगे ई पंचैती हम बैसेलहुँए।'

'की भेलै पंचैतीमे?' मास्टर साहेब पुछलनि।

'नूरो पहिने हमरा सभक दीदी छी। वण्ठा एकरा गारि पढ़ि सम्पूर्ण गामक सभ्यताकेँ चूनौती देलकए तँ वण्ठा पहिने नूरो दीदीसँ क्षमा मंगलकैए आ तकर बाद एकरा पाँच हजार दण्ड कयल गेलै मुदा वण्ठा बदला नूरो दीदीये कान' लागलि जे माफ क' दीऔ ओ हमर सन्तान छी। कहैत हीरालाल द्रवित भ' गेल।

गप सुनि बहुत आनन्द भेलनि मास्टर मनमोहन पाठककेँ। सभकेँ धन्यवाद आ आशीर्वाद देलनि आ नूरो दीदीकेँ कहलनि– 'की नूरो दीदी?'

नूरो हँस' लागलि।

तीन दिनक बाद ई अपन दलान बला कोठरीमे किछु करै छलाह तखने बाहरसँ नूरोक हाक सुनेलनि, बहरेला– 'की नूरो दीदी?'

'बौआ, लैह ई तोहर पहुना मियाँ तोरा लेल थोड़े परोड़ देलक' हे।

'वाह! कते हौ?'

'जोखने नै छियै आ जोखबो काज नै छै। हम थोड़े देलिय हे, तोहर पहुना मियाँक सनेस छियह।'

'ठीक छौ, बैस।'

'हँ, बौआ बैसै छी।' ओ दलान पर नीचे सीमेंटकेँ झाड़ि बैसि गेल।

'ओहि बेंच पर बैस ने।'

'नहि, ठीके छी। एकटा गप कह' अयलिहे।' नूरो बिहुँसैत बाजलि।

'की? कह ने।'

'आब लैह अपन गाम। आब हम तोरा गाममे नै रहबह। बेटीक असली गाम त' ओकर सासुर होइ छै। ओत' हमर डीह अइ। ओतै घर बनायब। एहि ठामक सभ किछु बेचि-बाचि लेब।'

'कहि फेर बिहुँस' लागलि।

मनमोहन पाठककेँ मोनमे भेलनि जे एतेक पैघ गप कहैत नूरो बिहुँसैत अछि किएक? पुछलनि– 'किए फेर केओ किछु कहलकौए?'

'की कहिय' परसू हम बजलियै जे आब जे होउ, ई काल समय बीतै छै त' हम एहि ठामक सभ किछु बेचि-बाचि सासुर चल जायब। तखनसँ कहै छियह। साँझ-भिनसर धरोहि लागि गेलैक लोकक, जे हम अपन सभ सम्पति ओकरा द' दीऔ त' ओकरा द' दीऔ। सभ एक-दोसक खिधांश करैत हमरासँ अपनैती बना रहलए। ओ वण्ठा जे गारि पढ़ने छल से अपन घट्टी मानैत कते बेर आयल। एखन दीदी कहैत ओकर मुँह टुटै छै।' अपन गप नूरो सभटा सहज भेलि कहि गेल।

'तोँ की कहलीही?'

'हौ बौआ, हम कहूँ जाइ, हम लोकक नेत देखलियैए। सभक मोनक थाह लेलियै। हौ कोनो जाति-धर्म नै, सम्पतिक आगू कथूक मोल नै।'

'त' फेर एत'सँ जाइकेँ नाम नहि ले।' कहि गेलाह मनमोहन पाठक। मनमे सोचलनि जे एखन ई नूरो दीदी जे कहय मुदा एहि जाति-धर्मक जे नीचा द्वेषक पसाही लागल छै ओ जँ नहि मिझायल जायत त' एहि धरतीक हरियरी नष्ट भ' जेतै। ई गुम्म भेल सोचि रहल छलाह। हिनक मोन जेना ओहि दिशामे उठि गेल छलनि।

'की सोच' लगल' बौआ? हम कतौ जाइ। हमर अब्बाक डीह पर ककरो ह'र कोना जोत' देबै। मारि खेबै। मारबै। आ एतै रहबै आ फेर एखनहुँ तोरा सभ सन, सरपंच आ सरयुग यादव सन लोक छै एहि गाममे। नूरो कहि हिनका दिश ताक' लागलि।

जेना मनमोहन पाठककेँ नूरो गपसँ ध्यान टूटलनि, बजलाह– 'हँ दीदी। कतौ जेबाक काम नहि छै। पहिने जो कल पर साबुनसँ हाथ-पैर धो आ...।' कहि आनन्दक टोनमे पत्नीकेँ सोर करैत कहलनि– 'हमरा आ नूरो दीदीकेँ चाह पीआउ।'

•

भोज

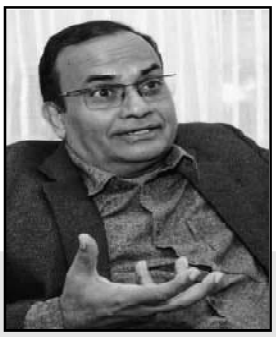

डा. सुरेन्द्र लाभ

देवी चौक, जनकपुरधाम, नेपाल

सम्पर्क : +977 9844051292

छात्र जीवनसँ मैथिलीमे कलम चलओनिहार डा. सुरेन्द्र लाभ त्रिभुवन विश्वविद्यालय अन्तर्गत रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे अर्थशास्त्र विषयक लगभग 40 वर्ष प्राध्यापन करओलनि। हिनक कथा-संग्रह *कथा यात्रा* एवं *नरकपालिका* (व्यंग्य-संग्रह) प्रकाशित आ चर्चित छनि। *मिथिलांचल* एवं *धधरा* नामक पत्रिकाक सम्पादन कएनिहार डा. लाभ *डा. धीरेन्द्र, विद्यापति* आदि पुरष्कारसँ पुरष्कृत छथि। सम्प्रति नेपाल सरकार द्वारा गठित थिन्क टैन्क 'नीति अनुसंधान प्रतिष्ठान'केँ बोर्ड मेम्बर छथि।

जंगलकेँ राजा अपन मन्त्रीसब संगे पार्टी मना रहल छल। एकटा बेचारा गदहा आबि निवेदन चढ़ौलकै– 'राजा साहेबकेँ जय हो। अपनेक राजमे सारा जंगलवासी असंतुष्ट अछि। किछु कयल जाउ सरकार!'

रक्तप्यालासँ एक घोंट खून पीबि सिंह ओहि गदहापर तमसाइत जबाब देलकै– अहाँ एहन गदहा पत्रकारकेँ खाली असंतुष्टिए नजरि अबैत अछि। कत' छै असंतुष्टि? सारा जंगलवासीकेँ प्रतिनीधि हमर सरकारमे अछि। दू तिहाइ बहुमत हमरा प्राप्त अछि आ अहाँ असंतुष्टि देखै छी? काल्हि धरि त' हमरे आगा-पाछा नाङरि डोलबैत छलहुँ आब बुझाइय' बिरोधी खेमामे चलि गेलहुँ। ततपश्च्यात अपन दूटा बघबाकेँ किछु संकेत कएलकै। दूनु बाघ आबि गदहाक डेन पकड़ि घिसियबैत जहलदिस ल' गेलै। पार्टिमे जोरस ठहाका फुटल।

दोसर दिन फेर जमघट प्रारम्भ भेलैक जकर नाम इसब मन्त्रीमंडल रखने रहैक। मंत्रणा प्रारम्भ भेलै। एकटा सियार मंत्री राजाक समक्ष अपन मंत्रालयकेँ रिपोर्ट प्रस्तुत कएलक– सरकार अपनेक शासनमे चारूदिस अमन-शान्ति अछि। आब समृद्धिक बात कयल जाओ। अपनेक बातेपर समृद्धि दौगल-दौगल चलि अएतै सरकार। सबमन्त्री स्वीकारोक्तिमे मुड़ी डोलबैत जयजयकार कर' लागल– जय हो! जय हो!!

राजा अति प्रसन्न भ' आज्ञा प्रवाहित कएलन्हि– 'आइसँ केयो गोटे आन कोनो बात नै करी, मात्र समृद्धिक बात करी। भाषणकेँ सुरुआत समृद्धिसँ करी, अन्त समृद्धिसँ करी आ बीचमे सेहो समृद्धिक बात करी।' मंन्त्रीमण्डल फेर जयजयकार कएलक– जय समृद्धि! जय समृद्धि!! खुशीयालिमे टेबुलपर गरीब सभक खून प्यालामे सजाओल गेल। सब मंन्त्रीगण अपन-अपन प्याला उठओलनि– चीयर्स!

कहिने, कोम्हरसँ फेर एकटा गदहा उपस्थित भ' गेल। सबकेँ माथ दुखाए लगलै। ओ फेर निवेदन चढ़ौलक– 'सरकार त्राहिमाम! पुरा जंगलमे आँगि लागल अछि। सब जीवजन्तु भूखसँ मरि रहल अछि। चारुभर अफरातफरी मचल अछि आ एत्त' अहाँसब मौज क' रहल छी?'

'हमसब मौज क' रहल छी? अरे हमसब त' समृद्धिपर चिन्तन क' रहल छी' एकटा मन्त्री जवाब देलकै। मुदा आइ गदहा मान' बला नै छल– 'ई नाटक सब बहुत भेल, आब विद्रोह हएत।'

विद्रोहक नाम सुनिते राजा गम्भीर भ' गेलाह आ मुस्कियाइत जबाब देलखिन– जुनि तमसाउ पत्रकार महोदय, सूचनाक हेतु धन्यवाद। अखने हम एकटा आयोगकेँ घोषणा करैत छी। ई आयोग जंगलभरिकेँ समस्या आ समाधानक पता लगाओत। आ सबसँ खुशीक गप्प एहि आयोगक नेतृत्व अहीँ करब महोदय!

गदहा खुशी-खुशी सरकार प्रति आभार प्रकट करैत बिदा भेल आ पार्टि अखनि धरि चलिए रहल अछि।

•

शंका संदेह

महाकान्त ठाकुर
8709961514

एकरे जाँचकेँ विज्ञान कहल जाइ छै
कोरोनाक प्रति दुनियाँकेँ
जगाओल जाइ छै

अहाँक शंका मुसलमान पर अछि
हमर शंका भगवान पर अछि
अमेरिकाक शंका चीन पर छै
सभटाक जाँच हेतै

किछु के शंका छै सरकार पर
लोकक उपकार पर
एहिसँ बेसी लोक मरै छै
सभ दिन, सभ साल, कहाँ होइ छलै हल्ला
अपन कमी नुकबहु लय
की हिन्दु मुसलमानकेँ लड़बै लय
ट्रंपकेँ जितबै लय
भ' रहल छइ
कोरोना, कोरोना, कोरोना

चीन बनौने हुए जैविक हथियार
विश्व पर करय चाहैछ अधिकार
शंकाक समाधान तकबै ने
कोरोना भेल की शंके अछि जँचेबै ने

मुदा नहि! किछु गोटेक जिद्द छै
अल्लाह पर नहि करक छै शंका
किछु गोटे पाथरे पूजि बजबय चाहैछ डंका

मुण्डे-मुण्डे मते भिन्ना
ककरो अपराधी देखाइ छै नेहरू आ जिन्ना
गांधी कि गोडसे
नहि रहला भगवानक भरोसे

पानि छूबि क' देखै छी
गरम की ठण्ढा
बुझलिऐ कथी
अण्डा!

कालक गति

विरेन्द्र कुमार झा
9934727073

साँझुपहर पछि्छम दिस
चानक आधा काटल
गुलाबी लाली
जेना बुझना जाइछ
खुरचनसँ कियो
दुइ फाँक नहि त' क' देलक

बुढ़िया सूत कहाँ काटि रहल अछि
समग्रतामे चान पर सूत कटैत बुढ़िया केर
एखुनका पहर
बड्ड असोकर्ज भ' जाइछ
भ' सकैछ बेसी आमदनीसँ
औरदा बैढ़ जा सकैछ

मुदा ई त' नियत थिक ब्रह्मांड केर
सब किछु एहने बनाओल गेल होयत
ई चान, सुरुज, धरती, तरेगन
अनेकानेक ग्रह, नक्षत्र रहस्यसँ भरल
इहलोक त' बुझल
मुदा परलोक?

आ ओहि परलोककेँ ज्ञानी
हेर रहल छथि
एहि मादे शिशु ज्ञानी छथि
जँ सब किछु नियत नहि होयत त'
दिन आ राति कोना होयत
घटना सब कोना घटत
काल कर्ममे परिवर्तन कोना बुझना जायत

इन्द्रिकेँ पकड़ केर अन्दर आ बाहर
जे बाहर अछि वएह त'
परलोकिक थिक
जे अन्दर अछि से लौकिक
परलोकिक कहियो लौकिक भ' जाइछ

ब्रह्मांड परलोकिकसँ भरल अछि
थोड़ मात्रमे इन्द्रि केर पकड़मे जे आयल
से लौकिक भ' गेल
करोना जे एखन परलोकिक अछि
से लौकिक अवश्य हैत
ज्ञानी ज्ञानबान छथि
नहु-नहु आगू बढ़ता

पुनः समग्रतामे चान उगत
बुढ़िया सूत काटत
दिन घुड़त
आमदनी बढ़त
चकड़ि चलैत रहत।

गजल

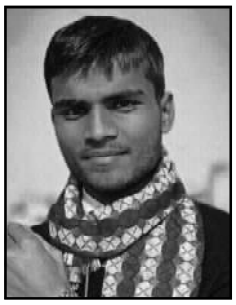

अशोक अमन
+977 9805900753

खटनी बिनु केओ सफल नै हेतै, बन्धु
दूध चढ़ओलासँ काँट कमल नै हेतै, बन्धु

पैघ-पैघ बेधुनि कवि-गजलकार देखलौं
खाली बहर सजओलासँ गजल नै हेतै, बन्धु

किछुओ ठाढ़ करबा लए नेहछोंह चाही
छड़े-सिमेन्टसँ ठाढ़ महल नै हेतै, बन्धु

जहिया धधकि उठतै हमरो ई करेज यौ
तहिया नेहकेर ओ दमकल नै हेतै, बन्धु

हुड़कन मारै माएबापक डबडबाएल नैन
आइ पैरमे दरद हेतै, चप्पल नै हेतै, बन्धु

खुरछाही काटैत मोन

पंकज कुमार
9331990871

बेर बेर
ठोकि दैत अछि अहाँक पीठि
कखनहुँ अमेरिका आ कखनहुँ रूस
किएक अहूँ भ' रहलहुँ अछि विकसित
मुदा अंतर एतबे थिक
अहाँ बढ़ि रहलहुँ अछि डेगा-डेगी कय
अंकगणितीय श्रेणी जकाँ
जेना कनाडाक उज्जर देवदारक गाछ
आ हुनक विकास छन्हि ज्यामितीय श्रेणी जकाँ
जेना हमर घरक देहरि परहक नारिअरक गाछ

नहि अछि सूडान जकाँ
कोनो सुदृढ़ लोकतांत्रिक व्यवस्थाक बेगरता
किएक पहिनेसँ भेटि गेल अछि पुरखाक ई मरौसी
तहन अहूँ किएक नहि करैत छी
युक्रेनक वर्तमान राष्ट्रपति पोरोशेंको आ प्रतिपक्षक नेता
जेलेन्स्की जकाँ मीडियाक माध्यमे
सगर राष्ट्रक समक्ष सोझा-सोझी गप
जाहिसँ बाँचि जेतैक एहि देशक गरीब-गुड़बाक पाइ
जे होइत छैक सुड्डाह चार्टर्ड विमानक ईंधनक नाम पर
काटल गेल छलैक कहियो ओकरे देहारीसँ
बिर्तिआ कर, आय कर, सेवा कर वा जीएसटी कहि

भदोहीसँ गाम आपिस आएल युवा सभहक माथ पर
बिखादक टेढ़ घोंच रेखा देखि
अतीव वेदनासँ सिदित भय
खुरछाही काटए लागैत अछि हमर मोन
तखन होइत अछि जे अहूँ छी श्रीहीन
तेँ अहूँ नहि द' रहल छीयैक
रोजगारक प्रश्न पर कोनो समीचीन उत्तर

सम्हरि जाउ नहि तँ
अहूँकेँ देमय पड़त जबाब कतेको प्रश्नक
आ बेगरता पड़ि सकैत अछि
रोबर्ट मूलर सन कोनो पैघ वकीलक
किएक एलिजाबेथ वारेन जकाँ मजगूत विरोधीक
जनमएमे नहि लागैत छैक बेसी देर
दहो बहो सीमा पर बहैत शोणितक मध्य
जखन अहाँ करैत छी घोषणा
बम बिस्फोट आ छओ गोटेक कतलक
कोनो अभियुक्तकेँ
एकटा गरिमामयी पद पर चुनाव लड़बा लेल
दाड़िम जकाँ फाटि जाइछ हमर हिअ
कतेक बदलि गेल अहाँक राजनीति
जाहिमे नहि बाँचल अछि कोनो नीति

कोनो बेजाय नहि कहल गेल अछि
जकर लाठी तकर महीस
मुदा धिआन रखबाक बेगरता अछि
जे फेर कोनो उधम सिंहकेँ
नहि बनय पड़य मोहम्मद सिंह आजाद
अहाँसँ बदला लेबाक लेल। •

निशाकरक दूगोट कविता

विविधताक वैरी

निशाकर
9534492142

हम अहाँ नहि
वएह बनबइए
सभटा नीति
वएह करइए
सभटा राजनीति
जे कहबइए
वैश्वीकरणक सूत्रधार

वएह घुमबइए
सकल ब्रह्माण्ड
वैश्वीकरणक धूरी पर

वएह अछि
विविधताक वैरी।
•

तय

काँट रोपब
तँ काँट भेटत
फूल रोपब
तँ फूल
घृणा करब
तँ घृणा भेटत
प्रेम करब
तँ प्रेम

काँट छैक विषाद
फूल हर्ष
घृणा छैक विध्वंस
प्रेम सृजन

मनुक्ख आ
मानवताक रक्षा लेल
चुनाओ तय
अहींकेँ कर' पड़त
ककरा चुनी
ककरा छोड़ी? •

दाइ, घूर आ ओ बसिया रोटी

बिन्देश्वर ठाकुर
+974 70032871

याद अछि कनी कनी
अपन जिनगीक एकटा पन्ना
जे भरल अछि केवल
नेह, सिनेह आपप ममत्वसँ

भोरे उठलाक बाद बिना मुँह धोनेही
घूरा लग बैसक'
कोरियबैत छलहुँ छाउर आ
ढ़ारैत छलहुँ नेप
से सत्ते
कोना हपसिक' धरैत छली दाइ
पोछैत छली आँचरसँ नोर
दैत छली नोन-तेल-रोटी
आ साटि लैत छली अपन करेजमे

ओएह बसिया रोटी खा
पहुँचैत छलहुँ प्रसन्नताक
चरम सिमानपर
गद-गद भ' जाइत छल मोन आ
खुशीसँ झुमि उठैत छलै
आसपासकेँ सरदियाएल मौसम

आइ अचानक
खाड़ीक एहि जंगलसँ
याद आबिगेल
दाइ, घूर आ ओ बसिया रोटी
मुदा
आब त' हमरा लेल
ने रहली ओ दाइ
ने रहल ओ जाड़ आ
नहिए रहल ओ करसी जरैत घूर
जत' खा सकी नोन-तेल-रोटी आ
पका सकी भोरे-भोर भुंभुरमे अल्लू। •

गामक आंगन

रोहित यादव
9958181154

जिनगीसँ प्रियतम केर गेलाक पछाति,
जे हालति प्रेयसी केर होएत हेतनि
ताहिसँ की एक्को मिसिया कम खराप
हालति हेतैक गामक आँगन केर हमरा बिनु?

जहिना ओहि प्रेयसीकेँ मोन पड़ैत हेतनि
अपना प्रियतमसँ कएल झगड़ा आ प्रेम'क बेर
तहिना त' गामक अंगनोकेँ मोन पड़ैत हेतैक
हम्मर बर्तन-बासन केर पटकब आ धाम-धूड़ाम?

नहि होएत हेतैक ओहि प्रेयसी जकाँ हमरो आंगनकेँ
रहितिएक हम आजीवन ओकरहिं कोरामे
जेना ता-उमेर प्रियतम केर मूड़ी अपना जाँघ पर
ल' बैसबाक इच्छा रहल हेतनि ओहि प्रेयसीकेँ

होएत त' अवस्से हेतनि ओहि प्रेयसीकेँ
किछु काल लेल सबूर, जखन सोचैत हेथिन
नहि अपना प्रियतम सनक मनलग्गू
त' मूरुते सनक ठाढ़
कोनहुँ पुरुष त' भेटिये जेतनि

त' की बाट तकैत हमरा आँगनकेँ सेहो
हेतकि हमरा मूरुतसँ सबूर
नहि भ' जेतैक आर सून आ उदास
जखन कोरामे खेलाओल कायाकेँ
मूरुत देखतैक अपनहि कोरामे? •

जनम अकारथ

मनीष झा बौआभाइ
9717347995

प्रसव पूर्व मुइल पौत्रीक जन्मसँ आहत
हाक्रोश करैत मखनाही बालीक विक्षिप्त दशा देखि
अस्पतालक बाहरी परिसरमे
सहटिक' लगीच अबै छथि मुरैठ बाली

सांत्वना देबाक क्रममे
स्वयंकेँ सेहो कोंढ़ फटबासँ नै रोकि पाबि रहलीह अछि
अपना आँखिक नोर संग
हुनका आँखिक नोरकेँ मिज्झर करैत
करेजकेँ शीतलता प्रदान करबाक चलैत उपक्रम मध्य
इमरजेंसी वार्ड दिससँ फटैत अछि एकटा तेसर ज्वालामुखी
आ किछु क्षणक वास्ते
पसरि जाइत अछि वातावरणमे शून्यता

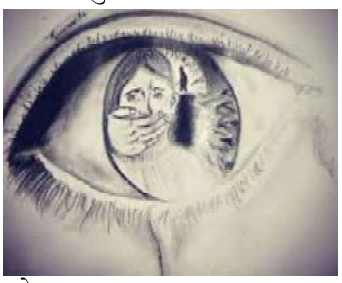

स्ट्रेचर पर मूँह झाँपल युवतीक लहास
जे तीन-तीन गोट प्रसव पीड़ाकेँ पीड़ा नहि
अपितु सुखक भंडार बूझि
हँसिक' सहि लेने छल दर्द
मुदा नै सहि पाओल तीन टा दैत्यक चाँगुरक चेन्ह
आ न्यायक मंदिरमे एक्कहि प्रश्नकेँ
घुमा क' तीस बेर मांगल गेल दलीलकेँ

मैथिल मुसलमान

अशरफ राइन
+974 30067838

हम महान हमर मजहब महान
माथ पर टोपी देहमे कुरता सान
तन मनमे मानवताक प्रेम भरल
छी हम ओ मैथिल मुसलमान

मन दिल मिथिलाकेँ नमन करैय
रगमे मिथिलाक सोणित बहैय
छी हमहु मैथिलिए बासी यौ
जय मिथिला मैथिल हृदय कहैय

नित दिन हमर होइत इद रहैय
हर राति दिवालीकेँ दीप जरैय
सब धर्मकेँ इज्जति करब जनैछी
छाती भीतर राम रहिम बसैय

जै माइटमे पलल-बढ़ल छी हम
क' सकै छी कोना गजदारी हम
भले राखु हमरासँ भेद-भाब अहाँ
मुदा बनि नै सकब आतंककारी हम

मन झुझुआन

पूनम झा 'मैथिली'
+977 9804864977

कतेक सहू
की किनका कहू
की शनि आ की रवि
के आलोकत हमर छवि, हे दैव!
जन्म लेलहुँ
जेना अपराध केलहुँ
की छोट वा की पैघ
चाकरी भेलहुँ, किया एलहुँ
ने गामक ठेकान
बनल अकान
किछु दिन एत' किछु दिन ओत'
हमर कत'
मन झुझुआन

सदरि सपनाइत
होइय छगुन्ता
पुरतै की कोना
मनमे सेहन्ता
भनहि बेगरता
अनेरे बिहुँसैत
कौखन हिचुकैत
खटैत-खटैत ने अछि पलखैत
मुदा सम्हरैत
भरि दिन बैसल रहैय
भेटैछ उपराग
मुह निहारैत सबहक
एकदम निरपराध

करैत अनुराग
सिखैत गुलाबसँ
सुगन्धक ओरिआओन
ओसक बुन्नसँ
रातुक पहिचान
सुन्दर विहान
सगरो पसरि गेल
की भूमि की अकाश
हमरेसँ विकास
तइयो निघास
सबठां आब बढ़ल
हमर वर्चस्व
कत' ने पसरल

मुदा एखनो लचरल
कोंखिएमे मोचरल
ब्रह्माकेँ कुशल तुलिकाक
कि हम नहि लेखा
सरस्वतीक वीणाकेँ
कि पुरुखे टा रेखा
तैं अनदेखा
युग बदलतै
कलयुग बदलतै
दुर्जनकेँ संहार लेल
फेर दुर्गे अओथिन
तैं सम्हर' परतै।

मृत्यु

विनीत उत्पल
9911364316

हम मरयसँ नहि डरैत छी
किये कि मृत्यु अछि शाश्वत
ई कोरोना कालमे त' आर नहि
काल जँ आबि गेल त' डरयकेँ कोन मतलब

मुदा हम डरय छी ओ हेल्थ रिपोर्टसँ
हमर मरलाक बाद जे लोकक सोझा आओत
आ सरकार कहत हुनकर मृत्यु कोरोनास नहि
कोनो आन बेमारीसँ भेल अछि

हम डरय छी ओ समाजिकतासँ
जखन हमर मुइल देहकेँ छुअ'सँ लोक डेरायत
ई सोचि जे जरूर हिनकर मृत्यु कोरोनासँ भेल अछि
आ दूर रहि क' हमर अंत्येष्टि क' देल जायत

हम डरय छी ओ पंडितजीसँ
जे कर्मकांड त' करत हमर
गरुड़ पुराण त' पढ़त
मुदा मनमे धुकधुकी लगौने राखत
जे किये ने एक्के दिनमे
सबटा पिंड द' देल जाय मृतककेँ

हम डरय छी ओ दियाद सभसँ
जे मृत्यु-भोज पर एक-एक क'र
खायत काल गारि देत हमरा
आ कहत जे मरबो कयल त' कोरोने कालमे
भोज नहि सुतरल नीकसँ

सत्य कहू त' हम डरय छी स्वयंसँ
कमाबैक लेल गेलहुँ दिल्ली-पंजाब
घुरलहुँ त' कोरोनाक संग
नहि समाजक हम छी आ नहि समाज हमर
प्रधान सेवक कहलक दू गजक दूरी राखू
मुदा जीवन आ मृत्युक दूरी कतेक
ताकि रहल छी अकाश दिस।

•

प्रश्नचिन्ह

सोनी नीलू झा
8920445915

किए बुझना जाइत अछि
अहाँकेँ हमर पियासल आँखि
जाहिमे अनुभव होइछ
वासनाक पिपासा

किएक
नहि देखैत छी अहाँ
ओहि आँखिमे हमर भाव
जे जोगओने अछि
मिसिया भरि आस
आदर आ सम्मानक

किए
नहि भए रहल अछि भान
अहाँकेँ आइयो वास्तविकताक
जे निंघारैत छी अहाँ
पाँच हाथक वस्त्रमेसँ
बित भरि उघार
पीठक रीढ़केँ
जे अदौसँ संघर्ष करैत
अपन घर-परिवारक
भार उठबैत
सभ्यता-संस्कृतिकेँ बचा कए
राखएमे पहिनेसँ भेल अछि
कतेक बेर उघार

किए
नहि बुझैत छी
अपन धिया
वा बहिनक सम्मान
किए भए जाइत छी
आँखि रहैत आन्हर
जे नहि देखि पबैत छी
ओहि आँखिकेँ
जकर पाँजरमे अहाँ
कोरा चढ़ि कए
भेलहुँ एहि दुनियाँमे पैघ

फेर किए
बिसरि गेल छी अहाँ
ओहि माइक छातीकेँ
जे अपन शोणित पिआ कए
पालन-पोषण कएलनि अछि अहाँक

आइयो कोनो स्त्री
देहक उभार देखिक'
जँ अहाँक पापी मोनमे
उठैत अछि
कोनो घृणित प्रश्न
तँ अहाँ स्वयं लगा रहलहुँ
अपन माइक ममता पर प्रश्नचिन्ह।

•

गजल

प्रियंका झा
+9779800880423

एक दोसरकेँ देखौत रही
एक दोसरकेँ जनैत रही

एक दोसर लेल व्याकुल मोन
बस नेहक ताग बुनैत रही

ने हम किछु सुनी आ ने अहीँ
बस एक दोसरकेँ गुनैत रही

बनि राधा-मोहन एहि जगमे
बस प्रेमक आखर गढ़ैत रही

भलहिँ ठोढ़ बन्द रहैक अपन
मुदा आँखिसँ भाव पढ़ैत रही

•

गजल

मनोज विद्यार्थी
8910618150

कखनो इजोत त' कखनो अन्हार छैक जिनगी
समयक फेरीमे पड़ल हम, नचार छैक जिनगी

नेनपन कोना ससरि गेलै बुझलियै नै दोस यौ
सुख कतहुँ नहि, ई दुखक बजार छैक जिनगी

मोन होइ छल हमरो जे मोटरसाइकिल चढ़ितौ
मैट्रिकमे फेल भेलहुँ केहन कपार छैक जिनगी

मोन हर्षित छल सुनि क' अभ्यागत अओता
जनता कर्फ्यू लगेलक, ई सरकार छैक जिनगी

मोनक गप्प एना कहियै नै ककरो मनोज
खन हयत सोर कहत व्यभिचार छैक जिनगी

•

गीत

अर्जुन प्रसाद गुप्ता 'दर्दीला'
+97709842824285

जो रे सुगवा जो रे सुगवा पिंजड़ासँ उड़ि जो
नाता बन्धन सब टुटि गेलौं पिंजड़ा तोड़ि जो

कतेक पढ़ेलियौ तोरा आइ धरि आब तँ अपनो पढ़ि ले
तोहर जीवनक किताब अपन अपनोसँ गढ़ि ले
कतेक रहबिही बन्द पिंजड़ामे आब तँ उड़ि जो

नयना बहलौं कतेक तोहर तखनो तों हँसिते रहले
पीड़ा नुकाक' दिलक तोहर दोसरक बोली पढ़िते रहले
मन खोलिक' तोड़ि पिंजड़ा हँसिते उड़ि जो

जो रे सुगवा जो रे सुगवा पिंजड़ासँ उड़ि जो
नाता बन्धन सब टुटि गेलौं पिंजड़ा तोड़ि जो

•

गीत

रामेश्वर निशांत
9572988588

बाबू छथि बैसल अतीतक दलान पर
हमारा झुलाबै लए ममताकेँ कान्ह पर
तोड़ि क' तरेगन ओ आनि देथि हमारा,
होइ छलनि हमरे लए, मायोसँ झगड़ा
हमारा रखैत छला सदिखन धेयान पर।
हुनका रहैत जेना किछु ने छुबैत छल
माथो दुखाय नोर हुनके बहैत छल
बाँहि पकड़ि संगे सुताबथि मचान पर।
मिज्झर हवामे सिनेह करथि तखनो
भूखल-पियासल रहैत छला जखनो
सिखबथि, भरोसा करैत रहब राम पर
दिन-उठल बिस्तर पड़ल जे रहैत छी
एखनो अहाँकेँ ई स्वर हम सुनैत छी—
जागू ने आबि गेला सुरजो बथान पर।
पैघ भ' जनमइए पैघ होइक लेल,
राखब भैयारीमे सुंदरसँ मेल
मरितो धरि रहलनि ई बात त' जुबान पर।
हम त' 'निशांत' ने बिसरि सकी कखनो
रखने छी गेंठ बान्हि बात अहाँक अखनो
भुखले रहब, मुदा रहबै ईमान पर।

•

जल-जीवन-हरियाली

डॉ. शुभ कुमार वर्णवाल
9430631411

जल-जीवन-हरियाली जगमे
स्वस्थ जिनगी केर आधार
अतिक्रमण जुनि करियौ भैया
पोखरि-डबरा-नहर-इनार।

जैव विविधता हो संरक्षण
स्वच्छ समृद्ध पर्यावरण
अछि जरूरी जन आंदोलन
हरित संपदा आवरण
पौध लगबियौ चास-वासमे
हरियाली वसुधा श्रृंगार।

भूमंडलीय तापन कारण
जलवायुमे भेल परिवर्तन
पौध सुरक्षा, बरखा जल केर
सोख्ता निर्माण हो संचयन,
जलसँ तृप्त होइ वन प्राणी
मानव जीवन सुख संचार।

पर्यावरणमे रहय संतुलन
जैव जगत लेल करी प्रयास
विक्टोरिया फॉल सूखि रहलए
ग्रीणलैंड बर्फ पिघलल खास,
फसल चक्र गड़बड़ा रहलए
धरा बचाबी करी विचार।

वेद-पुराण-शास्त्रमे पढ़ियौ
गाछ-वृक्ष केर गुण विस्तार
जीवन परंपरा संवाहक
प्राकृतिक अनुपम उपहार,
पुण्य काज ई पौधारोपण
पेड़ हमर संस्कृति संस्कार।

जनसंख्या पर होइ नियंत्रण
बाल विवाह होइ दहेज दूर
नशा मुक्त सगर समाज हो
जल हरियालीसँ भरपूर
पर्यावरण प्रदूषण मुक्त हो
कहि रहल अप्पन बिहार। •

साहित्य अकादेमीक बहन्ने चर्चा

जिनगीक ओरिआओन करैत

हितनाथ झा
हजारीबाग, झारखण्ड
सम्पर्क : 9430743070

इलाहाबाद बैंकसँ सेवानिवृत्त वरीय प्रबंधक श्री हितनाथ झाक *कोइलख*(ग्रामगाथा) पुस्तक बहुत चर्चित भेलनि। एहिसँ पूर्व *मैथिली इतिहासक रेखांकन*क संपादन सेहो कयने छथि। समसामयिक साहित्यिक टिप्पणी आ पाठकीय लिखब हिनक रुचि छनि। मैथिलीक अधिकांश पत्र-पत्रिकामे हिनक कविता, निबन्ध, समीक्षा आदि प्रकाशित होइत रहैत छनि। झारखण्डक साहित्यिक संस्थासँ सक्रिय रूपेँ जुड़ल छथि।

मिझायल सूर्यक नगर(2001), निछच्छ बताह भेल(2015) और जिनगीक ओरिआओन करैत(2017) कुमार मनीष अरविन्दक तीन कविता संग्रह एखन धरि प्रकाशित छनि। एकर अतिरिक्त दू कविता संग्रहमे सहयोगी कविक रूपमे हिनक कविता सेहो संग्रहित छनि। कविताक अतिरिक्त हिनक संस्मरणक पोथी 'शिखर पर जिजीविषा' आ 'मिच्छामी दुक्कड़म' सेहो छपल छनि, जे मैथिली साहित्यमे एक नव प्रयोग कयलनि आ से पाठकक बीच चर्चित आ खूब प्रशंसित भेलनि। कथाकारक रूपमे सेहो ई जानल-मानल जाइत छथि। 'चियाँकी राज बाबा' हिनक कथा संग्रह प्रकाशित छनि।

कुमार मनीष अरविन्द मूलत : कवि छथि, जल-जंगल-जमीन आ पहाड़सँ जुड़ल। तैं स्वाभाविक अछि, हिनक कवितामे मनुष्यक जीवनक संग पशु-पक्षी, जल-जंगल, पर्यवारणक प्रति चिन्ता, चिड़ै-चुनमुन्नीक निपत्ता भेलासँ जीवनक असंतुलन, आदिवासी समाजक संस्कार आदि हिनक कविताक विषय रहलनि अछि। हृदयसँ निकलल, जमीनसँ जुड़ल आ कविताक अनुशासनमे बान्हल, हिनक मनक कवि पाछू मुड़ि नहि देखलक आ तैं हिनक कविताक विस्तार मैथिली कविता-भण्डारकेँ समृद्ध केलक अछि।

जिनगीक ओरिआओन करैत हिनक तेसर कविता संग्रह छनि आ एहिमे 2012सँ लय मार्च 2017 धरिक कुल छप्पन कविता छनि। एहि पाँच वर्षक अवधिमे राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तरपर बहुत बेसी बदलाव अयलैक, विध्वंश आ हाहाकारक स्थिति उत्पन्न भय गेलैक, एहिपर नजरि तँ कविक छलनि, किन्तु हिनक जीवनमे एहिसँ बेसी संकट अयलनि, क्षय-रोग भेलनि, कर्क-रोगसँ ग्रसित भय गेलाह, जीवन-मृत्युक संघर्षमे विजयी भेलाह, ओहू अवधिमे साहित्य-सृजनसँ विमुख नहि भेलाह, अनवरत सृजनरत रहलाह, तकर सभसँ पैघ उदाहरण अछि, हिनक ई संग्रह। एहि संग्रहमे इलाजरत व्हीलचेयरपरक कविता भेटि जैत, नवजीवनक स्वागतक संग जिनगीक चिंतन आ चिन्ताक विषय आ मृत्यु-मुखसँ आपसीक, माँक कोड़ामे पड़ल, पितामहीकक दुनियाँसँ जैब, एहि हेतु नीक बुझयलनि,जे ई स्थिति देखि दादीक मनपर की प्रभाव पड़ितैक, से सभ त' एहि संग्रहमे भेटबे करत आ जेना पहिने कहलहुँ, अपन देशक पर्यावरण संतुलन हेतु सेहो अनेक कविता सहित रूस यात्रक क्रममे ओतुको सौंदर्यक, नदीक वर्णन आदि त' अछिये, मुदा कविक चिन्ता ओहू सरकारसँ छनि जे पर्यावरणक संरक्षण आ जीवनक चिन्ता सरकारक प्राथमिक क्षेत्रमे नहि छैक। एहि संग्रहक पहिल कविता, कालक मुँहसँ उबरि जखन पुनर्जीवन भेटलनि त' अपन जीवनक स्वागतमे इश्वरकेँ धन्यवाद दैत, परिवार, मित्र,आत्मीयक हर्षक संग जे नवजीवनकेँ स्वागत कयलनि, से देखल जाय– *ओ दुःखद स्वप्न/नहि रहय मोन/उत्फुल्ल हृदय केर/कोन-कोन/नित नवल खुशी केर जेर-जेर/स्वागत! नवजीवन बेर-बेर/आ तकर बाद/मृत्यु-मुखसँ आपसी केर गीत/हम गबै छी।*

मुदा ओ कष्टकेँ नहि बिसरि, मृत्युकेँ नजदीकसँ देखलाक बाद नवजीवनपर लिखैत छथि– *पैघ छोट सुइयासँ माँगि क'/राखल लगैछ।/जिनगी ओही नोक पर टाँगिक'/राखल लगैछ।*

मृत्युसँ बाहर अबैमे कुमार मनीषक सकारात्मक सोच, साहित्य सृजनक ऊर्जा आ अपनाकेँ अबोध शिशु जकाँ अस्पतालमे इश्वर आ अस्पतालकर्मीक आगू समर्पणसँ नवजीवन भेटिते छैक ,तकर वर्णन एना कयने छथि– *व्हील चेयर बहुत बलशाली होइत अछि/किछुए*

क्षणमे/तोड़ि दैत अछि ओ/अहाँक अहंकारक कड़ी सभ कें/मुक्त क' दैत अछि।/व्हील चेयर पर बैसि क'/भ' जाइत छी अहाँ/शिशु सन/निष्कलुष आ निष्पाप।

एहन अनेको कविता छनि, कैंसरसँ जूझैत, अपनाकें सम्हरैत-सम्हारैत आ माँक कोड़ामे पड़ल, चिंतित अपना लेल नहि, पितामहीक विषयमे सोचि जे जँ ओ जीवित रहितथि त' हुनक की दशा होइतनि, हुनक कष्टक अनुभव कय। हुनकहि शब्दमे— *कहन प्रतिक्रिया होइतनि हुनकर/पोताक बायोप्सीक रिपोर्ट पर... /कीमोथैरेपी पर... /नीक भेल जे चलि गेलीह/पहिनहि/हमर पितामही ...।*

कुमार मनीषक कवितामे मात्र अपन बीमारी टाक चर्चा नहि, देशक चिन्ता, समाजमे व्याप्त भ्रष्टाचारक चिन्ता, नेताक ठकपनीक चिन्ता, वोटक समय जनताकें प्रलोभनसँ चेतबैत सही प्रतिनिधिकें चुनबाक हेतु सचेत करैत छथि आ कहैत छथि लोभसँ बचू, भय मुक्त होउ, नहि त' एहिना चुनावक समय नेता आयत, जीत कय पतनुकान भय जैत— *पाग देबौ पठरू/घुनेश देबौ पठरू/कुदकैत रह एहिना/सनेश देबौ पठरू।*

ठोकि देबौ जिनगीकें/घोंकि देबौ पठरू/नहि मानबे बल्लमसँ भोंकि देबौ पठरू।'

हिनक कविता मात्र डरबैत नहि अछि, चेतबैत सेहो अछि, रास्ता सेहो देखबैत अछि— *उठू! सबल बनि-मतदाता!/हे! भारत-भाग्य-विधाता।*

पर्यावरणक संतुलन हेतु गाछ-वृक्ष, पशु-पक्षीक समुचित सुरक्षाक हेतु सरकारक उदासीनता, औद्योगिक विकासक होड़मे जिनगी कतयसँ कतय लय जायत, से हिनक अनेको कवितामे दृष्टिगोचर होइत अछि। गाछ झमटगर ,स्वर्ग उतरतै ,गाछ फरै ने रुपया यौ ! आदि अनेको दृष्टान्त दैत कविताक माध्यमे समाजमे नीक संदेश देलनि अछि— *गाछ झमटगर/ सुड्डुकि कार्बन/बचबै प्राण!/गाछ झमटगर/सह-सह जीवन/सुख केर खान!*

तहिना पक्षीमे बगड़ाकें प्रतीक मानि, हिनक एक कविता चिन्हित करबाक योग्य छनि। आन-आन चिड़ै-चुनमुन्नी जकाँ बगड़ोक अपन फराक पारिस्थितिकीय काज(इकोलॉजिकल फंक्शन) छैक। बिहार सरकार बगड़ाकें विलुप्त होयबासँ बचयबाक हेतु बिहारक राजकीय पक्षीक दर्जा देलक अछि, मुदा जँ गाछ-बृक्ष कटैत रहत, फूसक घर टूटैत रहत आ मॉल आ विशाल मकान बनैत रहत, त' एक ने एक दिन ई चिड़ै निश्चित विलुप्त भय जायत। 'बगड़ाकें भोटे नहि छै तैं' एहि शीर्षकसँ सरकारक उदासीनताक एहि तरहेँ वर्णन कयलनि अछि— *जहिना बगड़ा/द'रहलैए प्राण आइ/घिसिया-घिसियाक'/आ मतलब नहि अछि/हमरा की अहाँकें की हिनका-हुनका/तहिना बलि देबय पड़तै/लोकोकें काल्हि/एही वेदी पर/अपन अगिला संतति पीढ़ी/से धरि निश्चित।*

पहाड़पर कविता छनि, दशरथ माँझीक साहसिक वर्णन छनि, मीडियापर प्रहार छनि संगहि न्याय-प्रणालीपर सेहो। रूस भ्रमणक अनुभवपर लिखलनि अछि त' निर्भया-काण्ड सन-सन क्रूरतम घटना सेहो कविकें द्रवित करैत छनि। पुरस्कारक राजनीतिपर चोट छनि, कचोट छनि देशक तरक्की नहि देखि आ सर्वोपरि जीवनक वेदना आ संवेदनाक कविता छनि एहि संग्रहमे— अपराजेय संकल्पसँ/रगराइत रहल/पहाड़/भक-भक-भक.../नहा गेल/ सौँसे संसार/प्रेमक जोतिमे...।

न्याय प्रणालीपर सटीक कटाक्ष देखल जा सकैछ—

महग न्याय छै/दाम लगै छै/सहज भने हो/डाक बजै छै/एते दाममे/पा-भरि भेटतौ/एते दाममे/छै अधसेरी/एते दामकेर/किल्लो भरि छै/एते दामकेर/पूर पसेरी।

स्वच्छ आ स्वस्थ देशक कल्पनाक ओरिआओनमे जतेक कारकक प्रयोजन पड़ैत छैक, सभ भेटि जायत, हिनक एहि कविता संग्रहमे।

कुमार मनीष आ झारखंडक जंगल, देवता, लोकआस्था, आदिवासीक निष्कलुष जीवनक कविता नहि, ई भ' नहि सकैछ, आ से अछि एहू संग्रहमे प्रमुखताक संग। 'नॉट रेकॉमेंडेड' एहि संग्रहक सभसँ दीर्घ कविता छनि। कविताक अन्त कतेक आशावान रूपेँ लैत छथि, सैह हिनक जीवनक सोच छनि, कवितेमे जीबैत छथि— *मोनमे नाच' लगैत छथि प्रकृति/वनदेवी/मोनमे बरखा हुअय लगइये/मोनमे सिहक' लगैत अछि बसंतक सिहकी/आनंदक बसात/पुलकि उठैत अछि सम्पूर्ण गात/जीवनक ओरिआओन करैत/हम/जंगल भ' उठैत छी।*

कुमार मनीष अरविन्दक पहिल कविता संग्रहपर 2002मे मैथिली सृजन पुरस्कार, दोसर संग्रहपर दू-दू पुरस्कार(मैथिल समाज रहिका द्वारा यात्री पुरस्कार-2013 आ चेतना समिति पटना द्वारा कीर्ति नारायण मिश्र साहित्य सम्मान-2015), झारखण्डमे मैथिलीक लगातार सृजनक हेतु पहिल त्रिवेणी साहित्य सम्मान-2016) आ एहि संग्रहपर साहित्यक सर्वोत्कृष्ट पुरस्कार 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार-2019सँ पुरस्कृत कय हिनकर साहित्यिक साधनाकें एहि वर्षक सर्वोत्कृष्ट कृतिक मुहर लगा देलक।

ई फूलक गुलदस्ता

साहित्यक मुख्य उद्देश्य थिक समाजकें असत्पथपर जयबासँ रोकब तथा सत्पथपर बढ़बाक प्रेरणा देब। एकर सभसँ बेसी प्रयोजन नेनाकें छैक, कारण नेनाक मस्तिष्क कोरा कागत रहैछ, ओहिपर जैह लिखि देबैक, सैह अमिट भय जयतैक। कोमल मनपर कोमलतासँ कहल जायवला प्रत्येक शब्द पाथरक रेखा बनि जाइछ जे कहियो मेटाइछ नहि। नेना प्रकृतिक एहन मोहक उपहार थिक जे वर्तमान आ भविष्यक बीच पूलक काज करैछ(*मैथिली बालसाहित्य— डॉ. दमन कुमार झा*)।

आगाँ एहि पुस्तकमे कथाक विषयमे लिखैत छथि जे 'कथा साहित्य आधुनिक कालमे मैथिलीक समृद्ध विधा थिक। जहाँ धरि बालसाहित्यक प्रश्न अछि... आन विधासँ बाल कथासाहित्य किछु बेसी संतोषप्रद अछि।'

कथा नेनाक हेतु केहन हेबाक चाही, नेनाक हेतु रूचिगर आ शिक्षाप्रद कथा कोन-कोन विषयपर हेबाक चाही, ओहि प्रसंगे लिखैत छथि– 'नेना खिस्साप्रिय होइत अछि। पहिने माइक कोरमे, पछाति पिता-पितामहसँ ओ खिस्सा सुनैत अछि आ मुग्ध होइत अछि। ओ खिस्सा नाना प्रकारक रहैत छैक। किछु ऐतिहासिक पैराणिक कथा, किछु पशु-पक्षीक कथा। ई सभ कथा नेना बड़ उत्सुकतासँ, बेर-बेर, अपन अभिभावकसँ सुनैत अछि आ ओकरा मन रखैत अछि(मैथिली बालसाहित्य पृष्ठ-79)।

उपर्युक्त बातकेँ ध्यान राखि, एखन हम मैथिलीक ओहि रचना(कथासंग्रह)क विषयक चर्चा करय चाहब, जकरा वर्ष 2019क मैथिली बालसाहित्यपर साहित्य अकादेमी पुरस्कार देल गेलैक अछि। ओ साहित्यकार छथि, मैथिलीक सुपरिचित श्री ऋषि बशिष्ठ। श्री ऋषि बशिष्ठ बालसाहित्यक(कथा, उपन्यास, नाटक) विशेषज्ञ तँ छथिहे, रंगमंचक नीक अभिनेता आ निर्देशक सेहो छथि। हिनक एक कथासंग्रह गामसँ जाइत रेलगाड़ी(2016) खूब चर्चित रहलनि अछि। मुदा हिनक एखन अन्य कृतिपर नहि 'ई फूलक गुलदस्ता'पर, जे स्वाभाविके एक दिनमे विशेष चर्चित भय गेलनि अछि आ जकरा देखबा आ पढ़वाक लेल अनेको साहित्यप्रेमीकेँ इच्छा जागल हेतनि। संयोगसँ हमरा लग ई पुस्तक छल आ किछु दिन पहिने पढ़नहियो रही, मुदा आइ भोरसँ एक बेर फेर पढ़लहुँ।

ई फूलक गुलदस्ता नामक अनुरूपे चारि उद्यानक फूल आनि रंग-विरंगक सुगन्धित फूलक गुलदस्ता बना नेनाकेँ तरोताजा हेबाक लेल, स्वस्थ मानसिक विकास लेल, समर्पित केलनि अछि, जाहिमे पूर्ण रूपसँ सफल भेलाह अछि।

उद्यान-एक

उद्यान-एक, जाहिमे सात कथा अछि, ई फूलक गुलदस्ता, डुगडुगी, सुटहा, दाम, एक टा मायक ममता, रंगमे भंग, जाड़-ठारमे।

बाल दिवसपर प्रधानाध्यापक द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रमक प्रभाव किछु छात्र/छात्रापर एतेक पड़लैक जे गुप्त रूपेँ एक ग्रुपक निर्माण कयलक आ अपन बुद्धिक बलसँ, अनेक तरहक रिश्क लैत, अपन अभियानमे सफल भेल आ पंडित सीतारामक बंद पड़ल विशाल छहरदिवालीक अंदर फूलक बगीचा लगौलक, जेकरा देखि सभक मुँहसँ वाह-वाह निकलैक।

डुगडुगी कथामे बच्चाक उपयोग कय माहिर चोर अपन हाथ मारय चाहैत छल, किन्तु नेनाक बुद्धिक आगाँ सभ बेकार। जखन शातिर चोरकेँ डुगडुगी बजबय पड़लैक आ अपने जालमे फँसि गेल, इएह कथाक मूल छैक, कथाक सफलताक द्योतक छैक।

सुटहा बहुत कारुणिक कथा अछि। बाल श्रमिक, महानगरक, एगारह वर्षीय नेना द्वारा अपन माँक नामे पत्र कना दैत अछि। अन्त सुखान्त छैक। दाम कथामे शिष्यक योग्यता, प्रत्यत्पन्नमतिक जाँचक संग व्यावसायिक प्रबंधनपर नीक जकाँ प्रस्तुति केलनि अछि, जे नेनाक सिखबाक लेल उपयुक्त अछि। मनुख तँ मनुख, एकहि घाटपर शेर-बकरीक कथा नेनहिंसँ सुनैत आबि रहल रही, मुदा एतय ई कुकुर-बिलाड़िक कथामे 'एक टा मायक ममता'क विलक्षण प्रस्तुतिसँ मन मोहि लेलनि।

'रंगमे भंग' होइतो एतय सेहो नेना सभक सकारात्मक सोच, सामूहिक निर्णयपर प्रसन्नताक लहरि दौड़ि गेल। गरीबी, भविष्य, जाड़, बूढ़, अभावमे जाड़सँ दुलदुल करैत घरक खढ़ नोचि, आगि पढ़ितेपजाड़ि बाबाकेँ जाड़ ठारसँ बचायब बच्चाक साहसिक कथा अछि, नीक अछि।

उद्यान-दू

उद्यान-दूमे मात्र दू कथा अछि। दुनू ऐतिहासिक कथा अछि। झिझिया नाच आ गुदरिया बाबाक कथा मिथिलामे प्रसिद्ध अछि। गुदरिया बाबाक विषयमे तँ बहुतोकेँ ज्ञात छनि, मुदा झिझिया नाचक कथासँ बहुत अपरिचित हेताह, खास कय बच्चा।

हुनका लोकनिक लेल नीक जानकारी अछि। दुर्गापूजामे ई नाँच मिथिलामे बहुतो ठाम होइत अछि।

उद्यान-तीन

उद्यान-तीनमे तीन कथा अछि। काल्पनिक, रहस्यमय, 'शठे शाठ्ये समाचरेत'वला कहाबत चरितार्थ करैत छथि। चोरकेँ दौड़ मारी, बच्चाक लेल नीक कथा अछि। खिच्चड़ि-खिच्चड़िमे हास्य तँ अछिये, रटंत विद्यापर व्यंग्य सेहो अछि।

उद्यान-चारि

उद्यान-चारिमे चारि कथा अछि। झीलमे डुमइये चान, जंगलमे हुआ, ककरो कहबै नहि, इनाममे फिफ्टी-फिफ्टी चारू चारि तरहक कथा अछि। बानरक लाथेँ बुजुर्गक महत्व आ छत्रछाया नेनाक लेल प्रेरणास्पद कथा प्रस्तुत केलनि अछि। जंगलमे हुआ हुआमे मैनेजरक ठक आ चातुर्यक कथा अछि। किछु एहने सन दोसरो कथा सुनल छल, जाहिमे अंतमे राजा मंत्रीकेँ बुझबैत छैक, जे-से।

ककरो कहबै नहि– ठीके पेटमे कतौ बात अरघय। अपनासँ पत्नी, पत्नीसँ परिवार, समाज तक जखन पसरलैक, तँ लोभमे बज्रपात तँ हेबे करतैक, से भेलैक, एहू कथामे।

इनाममे फिफ्टी-फिफ्टी पढ़ि मोन पड़ि गेल भारतक तत्कालीन गृहमंत्री गुलजारीलाल नंदाक समयक एक वारदात दू रूपया गार्डकेँ दय भेंट केने छलनि हुनकहिं क्षेत्रक एक नागरिक। जखन ई बात मंत्री बुझलनि, तखन ओकर हम्म सोचि सकैत छी। मलाहक राजासँ भेंटमे श्री ऋषि बशिष्ठजी नीक उदाहरण प्रस्तुत कय किताबकेँ समाप्त केलनि।

कुल मिला कय हिनकर सोलहो कथामे उपर्युक्त करीब-करीब सभ बात आबि गेलनि अछि, जे हिनकर नेनाक मनोविज्ञानक परिपक्वताक परिचायक अछि। निर्णायकमण्डलक ध्यान एहि दिस अवश्य रहल हेतनि आ से उचिते, तैं उचित निर्णयक लेल साधुबादक पात्र छथि।

एहिसँ पूर्व श्री ऋषि चेतना समिति पटनासँ माहेश्वरी

सिंह महेश ग्रन्थ पुरस्कारसँ सेहो सम्मानित भेल छथि।

वर्तमानमे भारत सरकारक सीनियर रिसर्च फैलोशिप सेहो भेटल छनि। एखन हिनकर वयसे की भेलनि अछि। माँ मैथिलीक भण्डारकेँ बहुत समृद्धि करबाक छनि, से विश्वासपर ई खड़ा उतरताह, एहि शुभकामनाक संग बधाइ दैत छियनि।

राग-उपराग

जाहि गीतकारक गीतक प्रारम्भहिक अवस्थामे विख्यात स्वरक स्वामीक स्वर पाबि चुकल हो, पुस्तकक रूपमे अयलापर मैथिलीक विद्वान समीक्षक आ चर्चित गीतकारक निर्णायक मण्डली द्वारा साहित्य अकादेमीक युवा पुरस्कारक हेतु चयन कैल गेल हो, ओहि पुस्तककेँ पढ़बाक इच्छा ककरो सहजहिं जागि जाइत हेतैक।

हम जाहि पुस्तकक विषयमे चर्चा कय रहल छी, ओ पुस्तक अछि, मैथिलीक युवा गीतकार श्री अमित पाठकक जे 2017मे प्रकाशित 67 गीतक संग्रह अछि, जाहिमे श्रृंगार, मिथिलासँ पलायन, किसानक दुर्दशा, मिथिलाक शान, मजबूर-मजदूरक मान-सम्मान हेतु चेतना अनवाक प्रयास सहित विविधतासँ भरल अनेको राग-भासमे सुन्दर संयोजन अछि।

हम उपर्युक्त दुनू बातसँ एहि लेल शुरू कैल जे गीत विधाक पुस्तकसँ बेसी रुचि हमरा गीत सुनबामे लगैत अछि, जे हिनकर गीत कतेको बेर सुनि चुकल छलहुँ, मुदा जखन कोनो विषय महत्वक भय जाइत छैक, त' ओकरा पढ़ब आनंदक बोध होइत छैक आ स्वाभाविके हम ई किताब मंगा कय पढ़ल।

गीत एक एहन माध्यम होइत छैक जे जन-जन तक सभसँ आसान रूपमे पहुँचायल जा सकैत अछि। मैथिलीमे ई विधा साहित्यिक दृष्टिकोणसँ सेहो समृद्धि अछि आ ओही परम्पराक एक अन्यतम कड़ी छथि श्री अमित पाठक। किछु प्रसिद्ध गीतकारक स्पष्ट मान्यता छनि जे गीत विधापर समीक्षकक ध्यान नहि गेलनि अछि वा ई कही जे ओलोकनि एकर उपेक्षा कयलनि अछि से ओ लोकनि अपन गीत संग्रहक लेखकीयमे एकर उल्लेखो कयलनि अछि। हमरा हिसाबे हुनका लोकनिक इशारा पुरस्कारे दिस छल हेतनि। से ई रिक्तता अमित पाठकक रूपमे भरवाक एक प्रयास थिक, जे निस्संदेह हिनकर प्रतिभाक सम्मानक संग युवकक कान्हपर एहि दिस सृजनात्मकताक एक नीक भार देबाक सोच हेतनि।

श्री अमितजी 2014सँ गीत लिखब प्रारम्भ कयलनि। रजनी-सजनीसँ हटि समयानुकूल गीतक सृजन आजुक माँगक संग समाजक दिशा निर्देश हेतु एक प्रकारक चुनौती स्वीकार करब भेल। श्री अमितजी एहिमे पूर्ण रूपेण सफल भेल छथि, ई हिनक संग्रहक गीत देखलासँ विश्वासपूर्वक कहि सकैत छी। दोसर जेना पूर्वमे कहलहुँ, हिनकर गीतक स्वर हरिनाथ झा, अभिषेक झा, विकास झा, धीरज मिश्र, दुर्गानंद, प्रतिभा आदि अनेको चर्चित व्यक्तित्व द' चुकल छथिन, इहो कम महत्वक नहि।

मजदूरक शोषण समाज आ देशक अवनतिक हेतु पैघ विडम्बना अछि आ एहिपर लिखलो बहुत गेल अछि, किन्तु हिनकर ध्यान मात्र वर्णन करब नहि, शोषकक लेल चेतौनी सेहो अछि, *देखल जाय–शोणित चूबय जकर घामसँ, तकरहु मोजर माइन हो/ओकर बदौलति जे सुख भोगए, तकरहु आँखिमे पानि हो...*

पलायन रोकबाक हेतु, अपने भूमिपर कोनो रोजगार ठाढ़ करबाक सोच एहि पाँतीमे सुन्दर रूपेँ निखरल अछि– माँटि मिथिलाक कानब सुनै ने कियो/सब अपने बेगरते बेकल भेल रे...

मैथिली गीतक दुआरिपर अपन नव राग-भावक संग उपस्थित भेल अमित पाठक अपन एहि पहिले पोथीसँ चमत्कृत करैत छथि शब्द-सामर्थ्य आ भाव सम्पदाक धनी एहि युवा गीतकारसँ हम आश्वस्त छी जे भखरैत-उखरैत मंच एक बेर फेरसँ प्रतिष्ठापित होयत।

माहेश्वरी सिंह महेश ग्रन्थ पुरस्कारसँ पुरस्कृत श्री अमित पाठककेँ वर्ख-2019क साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कारक लेल हिनक यशस्वी होयबाक कामना करैत छी ।

•

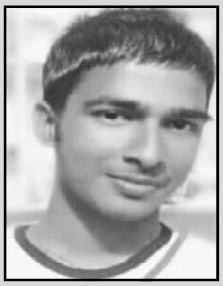

गजल

गजेन्द्र गजुर
+97798104888342

की कहू मीत जखन स्वभिमान मरि जाइ छै
तखने ओ भितरिया भगवान मरि जाइ छै

मायक नोर लेल, जे संर्घष नहि करैए
बुझू जे ओहि मायक संतान मरि जाइ छै

जकरा लेल छोड़लहुँ, अपन दुनियादारी
बाँकी की, जखन इमान मरि जाइ छै

तोरा आ हमरामे लागल अछि, दुनिया
यौ, एहिनामे मनुखक पहिचान मरि जाइ छै

•

नाटकीय तत्व उपेक्षित रहने नाट्य-समीक्षाक कोनो अर्थ नहि

प्रख्यात नाटककार महेन्द्र मलंगिया संग तारानन्द वियोगी आ ऋषि बशिष्ठक साक्षात्कार

तारानन्द वियोगी— *नाटक लेखन दिस अहाँक झुकाव कोना भेल? मने, एकदम शुरुआती दिनमे?*

महेन्द्र मलंगिया— कोनो घटनाक एकटा पृष्ठभूमि होइत छैक। हमरो संग सएह भेल। गामक लगहिमे बसुआरा आस्थान छैक। कृष्णाष्टमीक अवसर पर नियमित रूपे दू-तीन राति नाटक होएबे करैत छलैक। एहिना दुर्गापूजाक अवसरपर मधुबनीमे नाटक होइक। फेर गाहे-बगाहे रामलीलाक मण्डली मलंगियामे आबि जाइक। कारण, मलंगिया सात टोल छैक। तेँ माला उठएबाक बेसी झंझट नहि रहैत छलैक। एहि तरहे नाटक आ रामलीला देखबाक जे चसक लागि गेल से छुट'बला नहि छल। माय आ बाबू कतबो रोकथि, मुदा नाटक आ रामलीला देखबाक लेल चले जाइ। ई झुकाबक एकटा कारण भेल।

आब 1965 ई.मे बभनगामा स्कूल गेलहुँ त' नियमित रूपे वर्षा विदा आ दशैं विदाक अवसर पर नाटक कएनाइ शुरू कएलहुँ। सभ शिक्षक लोकनि संग सेहो देलनि। एहना स्थितिमे हमर ई कार्य नियमित रूपे चलैत रहल।

तारानन्द वियोगी— *मिथिला समाजक सबसँ निचला तल पर जे घटना भ' रहल छै, जे जिनगी जीयल जा रहल छै, ओहि ठामक जे अपन संघर्ष आ सुख छै, एकरा सबकेँ अपन नाटकक विषय बनेबाक ख्याल कोना आएल? की मिथिलामे एहि तरहक कोनो नाट्य परंपरा छलै जकरा संग अहाँ अपनाकेँ कनेक्ट क' पबैत होइ?*

महेन्द्र मलंगिया— घरोपर जमीन-जाल बढ़ियाँ छल। एहि कारणेँ खेतिहर मजदूरक सम्पर्कमे रहबाक अवसर भेटल। बभनगामा स्कूल गेलहुँ तैयो मजदूर सभसँ सम्पर्क रहबे कएल। कारण, स्कूलकेँ नेपाली लग्गासँ 49 बीघा (98 बीघा) जमीन छलैक। ठीकेदार सभ धान काटि क' स्कूलक फील्डमे अनैक। तेँ मजदूर सभसँ भेंट हुअए आ ओकर पीड़ा लगसँ देखबाक मौका भेटए। दमासँ ग्रसित लोक धान काटए आ खड़िहानमे आबि क' बेदम भ' जाए। दवाइ द' पुछिऐ त' कहए जे करैत छिऐक— बालू भूजि क' फकै छिऐ, अकोनक डाँट पीबै छिऐ।

हँ, स्कूलक हॉस्टलमे करीब डेढ़-दू सय विद्यार्थी रहैक। दूटा मेश चलैत छलैक। कहियो-कहियो रातिमे आलम आबए आ पाएर जाँत' लागए। एकर मतलब छलैक जे एकरा दिनमे नहि किछु भेटलैए। तेँ हम पाएर छोड़ा क' ओकरा एकटा गेस्टक पुर्जी काटि क' मेशमे पठा दिऐ।

एतेक लगसँ एकरा लोकनिकेँ देखलाक बाद अपन नाटकक विषय-वस्तु बनाएब स्वाभाविके बात छल। दोसर, एकरा लोकनिक भाषा तेनाने हम पचा लेने छलहुँ जे नाटक लिखबामे कोनो कठिनाइ नहि भेल।

आब जहाँधरि एहि तरहक नाट्य परम्पराक बात अछि तँ ओ ने हमरा देखल अछि आ ने ओहिसँ हम अपनाकेँ जोड़ि पबैत छी। एकटा बात अहीँ सोचियौ ने ओकरा आँगनाक बारहमासा देखलाक बाद किछु विद्वान पुछ' लगलथि जे मलंगियाजी कोन जातिक लोक छथि, ओत' ई परम्परा कोना चलतै?

तारानन्द वियोगी— *नेपालक मल्लकालीन नाटक गीतबहुल छलै। यैह परंपरा एम्हर मिथिलोमे रहलै। कैक आधुनिको नाटककार लोकनि परंपरित शैलीकेँ पुनर्जीवित करबाक दिस सचेष्ट भेला। अहाँकेँ से जरूरति की कहियो ने भेल? यथार्थवादी नाटकक अपन परंपराक जड़ि अहाँ कतय पबै छियै?*

महेन्द्र मलंगिया— मैथिली नाटकक तीनटा शाखा चलल। एकटा

शाखा नेपालमे गेल जे भाषा नाटक नामसँ जानल गेल। एकर पोषक मल्ल राजालोकनि भेलाह। दोसर शाखा गेल असाम जे अंकिया नाट नामसँ जानल गेल। एकर बीजारोपन कएलनि शंकरदेव। एमहर मिथिलामे जे शाखा रहल ओकरा कीर्तनियाँ नाटक कहल गेलै(कोनो सन्त वा देवताक बढ़ा-चढ़ाक' गुणगान करबकेँ कीर्तन कहैत छैक)।

हँ, तँ एही परम्पराक अन्तर्गत हमरा लोकनिक नाटक भ' रहल छल आ लिखा रहल छल, मुदा पाश्चात्य देशसँ जे इब्सनक तूफान चलल ओ हमरा लोकनिक नाटककेँ चौपट्ट क' क' राखि देलक। हिनकर कहब छलनि जे नाटक ओहन होएबाक चाही जाहिमे कालक मेल, स्थानक मेल तथा कार्यव्यापारक मेल होइक। एकरा संकलन त्रयक कहल गेलै। हिनक एहि तूफानमे सभ भारतीय नाटककार लोकनि उधिया गेलाह। मुदा बादमे चेतना अएलनि जे हम तँ अपन परम्परासँ कटि गेलहुँ अछि। तखन अपन संगीतक (गीत, नृत्य आ वाद्य) परम्पराकेँ पकड़बाक चेष्टा नाटककार लोकनि कएलनि। मुदा जे अत्यन्त कम साधन ल' क' नाटक कएनाइ शुरू कएने हो ओकरा कोनो चीजक जरूरतेक अनुभव होएतै त' ओ की क' सकैए? हमरे नाटक अछि *'ओ खाली मुह देखै छै'* उनटा क' छोड़ि दै छै। कारण, एहिमे अलगसँ गीत-संगीतक टीम राख' पड़तै। हमरा जानकारीमे गोविन्दे बाबूक *रुक्मिणी हरण* नाटक भंगिमा छोड़ि क' कहाँ केओ उठौलकै?

हम अपना नाटकक जड़ि कतहु नहि पबैत छी। अहीँ देखा दिअ ने, *ओकरा आँगनक बारहमासा, काठक लोक, ओरिजनल काम* आदि नाटकक जड़ि कत' भेटैए? हमर सभ नाटक एक दोसर नाटकक मूर्तिकेँ अपने भंजन करैत चलैए।

ऋषि बशिष्ठ— *अहाँ भारत आ नेपाल दुनू ठाम समान रूपें प्रतिष्ठित छी, नाट्यलेखनमे आ नाट्यमंचनमे अधिक सम्भावना कतय देखबामे अबैए?*

महेन्द्र मलंगिया— देशे दू छै, रंग कर्मी लोकनिक उत्साह आ विचार एके छैक। पशुपतिनाथक कृपासँ ओतहु प्रजातंत्र आबि गेलै। एहि तरहे दुनू देशक शासन व्यवस्था एके रंगक भ' गेलै। तेँ नाट्य लेखन आ नाट्य मंचनमे एके रंगक संभावना देखबामे अबैए। हँ, जखन राजतंत्र ओहिठाम छलैक तखन संभावनाक बाते छोड़ल जाए। नाटक छपएबासँ पहिने सेंसर करब' पड़ैत छलैक। संगहि ओही नाटकक सेंसर होइत छलैक जाहिमे राजाक गुणगान रहैत छलैक अथवा सत्ताक विरुद्ध एकोट शब्द नहि रहैत छलैक। जहाँधरि मंचनक बात अछि त' ओहिसँ पहिने प्रहरीसँ स्कृति लेब' पड़ैत छलैक। संगहि इहो लिखित रूपमे देब' पड़ैत छलैक जे राजा आ शासन व्यवस्थाक विरुद्ध एहन कोनो बात नहि अछि। मुदा आब ओहू ठामक लोक एही ठामक लोक जकाँ हावाक समान स्वतंत्र अछि। तेँ एके रंगक संभावना देखबामे अबैछ।

तारानन्द वियोगी— *अहाँक नाटक सब यथार्थ चित्रणमे त' अपूर्व अछिये, रंगमंचक दृष्टिसँ सेहो ततेक सोधल अछि जे रंगकर्मक संग अहाँक निकटताक परिचय दैत अछि। ई सब स्किल कोना अर्जित भेल?*

महेन्द्र मलंगिया— जखन हमर नाटक *'जुआएल कनकरी'* प्रकाशित भेल त' गोविन्द बाबू एकटा पत्र लिखलनि— एखन अपना लेल नहि, एखन मैथिलीक लेल नाटक लिखब जरूरी छैक। एही समयक आसपासमे *'गोदोक इन्तजारमे'* नाटकक समीक्षा आएल रहैक जाहिमे इहो उल्लेख रहैक जे पन्द्रह-बीसटा पेक्षक प्रेक्षागृहमे उपस्थित छल। ई हाल छल महान नाट्यकारक महान नाटकक। एकर कारण छलैक भारतीय पृष्ठभूमिसँ अलग भ' क' नाटकक रचना होएब। ई सभ एकटा संकेत छल। तेँ अपन पृष्ठभूमि, भौतिक साधन, प्रेक्षकक अवस्था, ओकर निजता आदिकेँ ध्यानमे राखब अवश्यक भ' गेल।

तारानन्द वियोगी— *नाटक लिखबा कालक अपन रचनाप्रक्रियाक किछु अनुभव सुनाउ। जेना, ओकरा आँगनक बारहमासा... आ कि दोसरो दोसर।*

महेन्द्र मलंगिया— रचना प्रक्रियाक अनुभवक बात अछि त' हम *'ओरिजनल काम'*क विषयमे किछु कह' चाहब— जाड़ मासमे गाम आबी त' दूध देब' बलाकेँ अपना लग बैसालिऐ आ पुछिऐ जे आगि तापब? 'जाड़ महिनामे के कहत जे नहि तापब।' ओकर उत्तर होइत छल। तेँ घूर करी। पत्नीकेँ कहियनि जे चाह बनाउ। आगि आ चाहक लोभमे बड़ी काल धरि बैसए। गप-सप चलए। हमरा ओकर बोलीक टोन, बातमे सहजता आ बीच-बीचमे गारिक पुट बड़ प्रभावित करए। एहिपर हमर पत्नी कहथिन, 'हँ, सभ गारि सिखा दियौन।' राम-राम हम कैलए गारी सिखेबनि!' ओकर उत्तर होइत छलैक। हमरा ओकरा बीच जे बात सभ होइत छल। ओकर एकटा बानगी सुनबै छी। *हम*— अएँ औ, झरोखी कोना मरलै? 'नइ हए बुझली? उ भट्ठाकेँ ओगरबाही लेने रहै। सभ दिन भट्ठापर जाइ आ भैंसकेँ गम्हड़ा धानमे हुला दै। एक दिन भूत कहलकै— देख भाइ, जहि नती तोँ भट्ठाकेँ ओगरबाही लेने छिही तहिनती हम धानक ओगरबाही लेने छिऐ। तब जे तोँ एना करबही से ठीक नइ होतौ। मुदा ई नइँ मानलकै। तब तेसरा दिन भूत कहलकै जे बलू आइ फड़िछा ले। दुनूमे कुश्ती हुअ लगलै। एक पटका ई मारै त' एक पटका ऊ मारै। पसर बेर तोरिक नइँ फरिछेलै। तब भूत कहलकै जे बलू जो। आ घरपर जब एलै तब भूतक चोटसँ मरि गेलै।' *हम*— 'अएँ हौ, भूतसँ जे बात भेलै से के सुनलकै?' 'इहो कोनो छिपल बात हइ, सब जनै हइ।' ओकर जबाव छल।

एहि तरहे ओकर सहजता, भाषा, बजबाक टोन, गारि आदि हमरा ओरिजन काम नाटकक रग-रगमे समाएल अछि। आब डूबि क' पानि पिनिहार लोकनिकेँ जे लगनि, मुदा मधुबनीक टाउन हॉलक प्रदर्शन देखि क' हमरा गामक लोक कहिए देलक जे एहि

नाटकमे ओ फल्लां छै त' ओ चिल्लां छै।

तारानन्द वियोगी— *आधुनिक भारतीय नाटकक विकास देखै छियै त' मैथिली नाटकक प्रबल भागीदारी करैत जे नाटक सब हमरा सोझा अबैत अछि, से अहाँक नाटक सब थिक। मुदा, घोर दुख होइत अछि ई देखि क' जे स्वयं मैथिलियेमे एहि बातक महत्व बुझैबला लोकक अभाव रहल। मैथिलीक नाट्यालोचना एहन टूल्स नहि विकसित क' सकल जाहिसँ एकरा बूझल जा सकय। एहि संबंधमे अहाँ कोना सोचौ छियै?*

महेन्द्र मलंगिया— नाट्यालोचनाक संकट मैथिलीए टामे नहि छैक। ई आन-आन भाषामे सेहो छैक। मोहन राकेशक नाटक *'आधे-अधूरे'* जखन प्रकाशित भेल रहैक त' हिन्दीक समीक्षक कहलथिन जे ई रद्दीक टोकरीमे जाएबला नाटक छैक। मुदा ओही नाटककेँ जखन अंग्रेजीक समीक्षक प्रशंसा कएलथिन त' हिन्दीक समीक्षक ओकरा माथ पर उठा लेलथिन। एहने सन बात मैथिलीयोमे छैक। जकरा पासमे ख्याति प्राप्त नाट्यकार सभक दसटा नाटक नहि छैक, जे दसटा नीक नाटकक प्रदर्शन नहि देखने अछि, ओहन लोक नाटकक समीक्षा करैत छैक। ई समीक्षा केहन होएतैक से सहजहि जानल जा सकैए। दोसर, नाटकक दू भाग होइत छैक— एकटा नाटकीय विषय तथा दोसर नाटकीय तत्व। एहिमे नाटकीय विषय मात्रपर बात होइत अछि, मुदा नाटकीय तत्व उपेक्षित रहि जाइत अछि जे एकटा चिन्ताक विषय अछि।

तारानन्द वियोगी— *हेबनिमे ज्योतिरीश्वर विषयक अहाँक अध्ययन सामने आएल त' बहुतो विद्वानक अपूर्णता देखार भेलनि। हमरा लगैत अछि जे ज्योतिरीश्वर अपनहु रंगक्षेत्रक आदमी ओहिना रहथि जेना अहाँ छी। तेँ, समानधर्मा होयबाक कारण एक दोसराक परिकल्पनाकेँ बेसी ठीकसँ बुझि सकैत छी। अहाँकेँ की लगैत अछि? एहि दिस ढुकबाक प्रेरणाक मूलमे की रहलै?*

महेन्द्र मलंगिया— अहाँ बहुत उपयुक्त प्रश्न कएलहुँ अछि। हम हुनकहि विशिष्टताकेँ आधार मानि क' आगाँ बढ़बाक चेष्टा कएलहुँ। जहिना ज्योतिरीश्वर अपन नाटकमे कोनो पण्डितक नाक-भौंह सिकुड़बाक कोनो परबाहि नहि कएलथिन तहिना त' हमहूँ कोनो परबाहि नहि कएल। एहिना जखन वर्णरत्नाकरकेँ देखलिऐ त' बिना एकर सहायतासँ मिथिला इतिहास लिखले नहि जा सकैए। मुदा ओहिमे जे शब्द सभ आएल छैक, ओकर अर्थ लगाएब कठिन छलैक। तेँ एहि दिस ढुकब आवश्यकता बुझाएल।

ऋषि बशिष्ठ— *वर्णरत्नाकरमे जाहि अपूर्णताकेँ अपने देखार कयलहुँ अछि , ओहि कमीक लेल पूर्व लेखककेँ जिम्मेदार मानैत छी अथवा शोध सामग्रीक अभाव?*

महेन्द्र मलंगिया— एहि लेल त' लेखक लोकनि जिम्मेदार छथि। कारण, शोध सामग्री सभक खोज नहि कएलथिन। दोसर, जतेक समय एहि कार्यक हेतु चाही ओतेक नहि द' सकलथि। तेसरमे इहो भेलै जे *लेखा ने बही हम जे कही सएह सही* सन दंभ आबि गेलनि।

ऋषि बशिष्ठ— *ग्रामीण रंगमंचक उद्भव अपने कोना मानैत छी?*

महेन्द्र मलंगिया— ग्रामीण रंगमंचक उद्भव पर्व तथा पूजासँ भेल। यथा— *कृष्णाष्टमी, दुर्गापूजा, कालीपूजा, छठि, सरस्वतीपूजा* आदि।

एहि सभ अवसरपर ग्रामीण लोकसभ नाटक करैत छल। बिलकुल सहज ढ़ंगसँ। हमरा त' इहो देखल अछि जे पैट्रोमैक्स उपलब्ध नहि रहलापर दू-तीनटा लोहियामे गोइठा आ तेल ध' क' नाटक करैत छल।

ऋषि बशिष्ठ— *ग्रामीण रंगमंचक प्रदर्शन आ शहरी रंगमंचीय प्रदर्शनमे की अन्तर?*

महेन्द्र मलंगिया— ग्रामीण मंचपर जे प्रदर्शन होइत छल ओतेक उच्च कोटिक नहि देखबामे अबैछ। कारण, छोट आ खुलामंच, नीक ध्वनि विस्तारक यन्त्रक अभाव, लचर प्रकाश व्यवस्था आदि नाटककेँ प्रभावित करैत छैक। मुदा, शहरी मंचपर उक्त चीजसभक अभाव नहि खलैत छैक। तेँ प्रदर्शनमे निखार अबैत छैक। मुदा, अमुक नाटककेँ ग्रामीण मंचक हेतु कहिक' नहि बाँटल जा सकैए।

तारानन्द वियोगी— *एक समयमे अहाँ कथो खूब लिखलियै। ओ बेजोड़ एहि दुआरे रहलै जे ओइमे अपना समाजक एक अनुपस्थित यथार्थक दर्शन होइत छल। फेर कथा लिखब छोड़ि किए देलियै?*

महेन्द्र मलंगिया— शुरुमे हम नाटकसँ जुड़लहुँ। हमर एकटा नाट्य संस्था छल। जनकपुरक लोक नाटक देखबाक अपेक्षा रखैत छल। संस्थाक सदस्य अभिनय करबाक हेतु उत्सुक रहैत छल। एहना स्थितिमे हमर बेसी समय नाट्य लेखन आ ओकर निर्देशनमे व्यतीत होइत छल। एतबय नहि, मधुबनीक नाट्य संस्थामे सेहो टीप-टाप कर' पड़ैत छल। एहना स्थितिमे नाट्यक समय काटिक' कथामे देब सम्भव नहि छल। ओना किछु कथा सभ लिखबो कयलहुँ से नाट्यक समय चोरा क'।

तारानन्द वियोगी— *आइकाल्हि की चलि रहल छै? आगूक की सब योजना छै?*

महेन्द्र मलंगिया— आइ-काल्हि खेती आ पढ़ाइ-लिखाइमे लागल रहैत छी। अगिला योजनामे *'डाक, घाघ आ भड्डरी'*केँ पूरा करबाक अछि। दोसर, वर्णरत्नाकरक छूटल अंश सेहो पूरा करब।

तारानन्द वियोगी— *ई बात मोनमे उचरैए जे अहाँकेँ आत्मकथा सेहो जरूर लिखबाक चाही। से एहि दुआरे जे ओहिमे जानि नहि समाजक कतेको गुमनाम काल-पात्र के दुर्लभ कथा एतै। विचार करै छियै की?*

महेन्द्र मलंगिया— मोनमे त' उचरैए जे राजतंत्रक जालमे फसल मिथिलाक एक फाँकक लोक कोना एतेक दबावमे रहैत छलैक? कोना भाषा आ संस्कृति दुनू फाँककेँ गछारने छलै आ छैक। बूझिए ने पड़ैत छल जे दुनू फाँकक बीचमे भारत आ नेपालक बॉर्डर छैक। अहाँ ठीके कहलहुँ जे दुनू फाँकक गुमनाम कालपात्रकेँ हम नीक जकाँ उजागर क' सकै छी। तेँ ई योजना रखनहि छी। •

वैद्यनाथ झा
गुरूग्राम, हरियाण
9582221968

केंद्रीय विद्यालयसँ अवकाश प्राप्त शिक्षक, कथाकार एवं अनुवादक वैद्यनाथ झाक *छतरीमे छेद* आ *खिस्सा सुनू बाउ* प्रसिद्ध बाल कथा संग्रह अछि। वर्ष 2018मे खिस्सा सुनू बाउ पर *साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार* प्राप्त छनि संगहि *म.प्र. तुलसी साहित्य अकादमी सम्मान* भोपाल(2014) एवं *सेवक सम्मान*(2012) काशी साहित्य सभा, वाराणसी सेहो प्राप्त छनि।

दोस्त

भोरुक पहर। मुकुन्द गहींर निन्नमे सूतल छल। मम्मीक मोबाइलक घंटी बजला पर ओकर निन्न खुजलै। ताहि काल ओकर मम्मी भनसा घरमे छलखिन। फोन ओकरे उठब' पड़लै। ओ स्क्रीन पर पापाक नाम देखि हड़वड़ा क' बाजल—

'गुड मार्निंग, पापा।'

'गुड मार्निंग, मुक्कू। की क' रहल छलहुँ?'

'पापा, आइ रवि छैक। तेँ अबेर धरि सूतल रहि गेलहुँ।'

'सॉरी बेटा। हम अहाँक निन्न खराप कयलहुँ। कोनो बात नहि अहाँ लेल एकटा नीक समाद अछि। हम नौ तारीखकेँ गाम आयब आ 13 तारीखकेँ अहाँकेँ ल' क' एत' जमशेदपुर आबि जायब। मुकुन्दक पिता मोहन बाबू जमशेदपुरमे बायोइंजीनियरींग विभागमे वैज्ञानिक छलाह।

जमशेदपुर जयबाक बात सूनि ओकर पयर धरती पर पड़िते नहि छलै। ओकर मोनमे शहर जयबाक नाम पर लावा फूट' लगलै। एखन धरि ओ शहरक चमक-धमक टी.वीए पर देखने छल। आब ओ दिन गिन' लागल छल। छः...सात...आठ...नौ...।

आइ मोहन बाबू गाम अयलाह। गाम अबिते हुनकर मोन हरियर भ' गेलनि। पुरान दोस्त-महीम संगे हँसी-ठट्ठा, गप्प-सड़क्का करैत कलम-गाछी, खेत-खरिहान बौआइत रहलाह।

तेरह तारीखकेँ मोहन बाबू पत्नी आ बेटा मुकुन्द संगे जमदेशपुर आबि गेलाह। गामसँ विदा होब' काल मुकुन्दक दोस्त सभ अड़ियात' अयलै। ओकर सभक आँखिसँ नोर टघरि रहल छलै।

जमशेदपुरक नामी स्कूलमे मुकुन्दक नाम लिखा गेलै। ओकरा त' स्कूलक क्लास रूम सभ, खेलक मैदान, पार्क-बगीचा देखि क' चकबीदोर लागि गेलै, विद्यार्थी सब लक-लक उज्जर स्कूल-ड्रेस पहिरने, पानिक बोतल, बैग पीठ पर लदने स्कूल अबैत जाइत छलै। स्कूलक भवन तेहन दीन जेना राजा-महाराजाक महल होइ।

मुकुन्दकेँ स्कूलमे पढ़ैत एक मास भ' गेलै। केओ ओकर दोस्त नहि बनल छलै। ओ उदास रह' लागल छल। ओ सोचय—

—एहिसँ नीक त' गामे छलै। ओत' मारिते रास दोस्त सभ छलै। कपिल, निखिल, मोस्ताक, पप्पू, करिया पकिया दोस्त ई पाँचु एक दोसराक कन्हा पर हाथ ध' क' चलै, पिहकी दैत, सड़क पर पड़ल वस्तु जातकेँ ठेलैत, पयरसँ ठोकर मारैत स्कूल पहुँचय। ओकरा सभकेँ अपनामे अपन गुरुजी लोकनिक चलब-फिरब, बाजब, पढ़यबाक नकल कर'मे बड्ड मोन लागय।

एत' तँ किछु नहि। चुपचाप आउ, पढ़ू मैदानमे खेलू, घर जाउ। किछु दिनसँ मोहन बाबू गौर क' रहल छलाह जे मुकुन्द ओतेक खिलल नहि रहैत अछि। ओकर मुँह कने मलान रहैत छैक। ओ पत्नीसँ पुछलखिन मुदा ओ बजलथि—बेटेसँ पूछि लीयअ ने।

एक दिन ओकर पापा पुछलखिन— 'मुकुन्द बौआ आइ-काल्हि अहाँ उदास किएक रहैत छी? की कोनो दिक्कत।

'की कहू, पापा, एत' कोनो दोस्त नहि अछि। गाम पर केहन एकसँ एक संगी सभ छलै। एत' सभ अपनेमे हेरायल रहैए।'

ओ कहलखिन— 'हँ चिन्ता-जुनि करय। सभ ठीक भ' जेतै एक सप्ताहक बाद—

एक दिन मुकुन्द कक्षामे बैसल छल। सर' क्लासमे नहि आएल छलखिन।

एकटा चरफर विद्यार्थी कक्षामे प्रवेश कयलकै। ओ मुकुन्द लग सीट खाली देखि क' बैसि गेलै। कने काल बाद ओ मुकुन्द दिस हाथ बढ़ौलकै—

'हेलो, हम अजय।'

'हम मुकुन्द।

फेर त' दुनूमे प्रगाढ़ मित्रता भ' गेलै। एहि दोस्ती केर चर्च समुच्चा स्कूलमे होब' लगलै। संगहि खेलब, जलपान, होम वर्क, पढ़ाइ। अजय पढ़यमे बड्ड तेज छलै। खेलमे सेहो तेज छलै। ओकर स्मरण शक्ति अद्‌भुत छलै।

आइ शनि छलै। स्कूलमे क्लास रूममे पढ़ाइ बला कोनो काज नहि छिलै। स्कूलक नियमक अनुसार हर शनिकेँ विद्यार्थी अपन-अपन रुचिक अनुसार काज करबा लेल स्वतंत्र छल।

'आइ हम दुनू गोटे बैडमिंटन खेलब।' मुकुन्द बजलै।

'नहि, खिस्सा कहबाक कार्यक्रम चलतै। अजय बजलै।'

'नहि, खेल हेतै।'

'नहि, खिस्सा।'

अंतमे खिस्सा कहनाइ तय भेल। अजय खिस्सा सुनब' लगलै। अजय ओकरा ग्रह, नक्षत्र, चान तरेगण, एलियन्स सभक खिस्सा सुनब' लगलै। से अजय मोन लगा क' खिस्सा सुनाबय। मुकुन्दकेँ बुझाय जेना ओ खिस्सा संगे अंतरिक्षमे घूमि रहल हुअय।

रवि दिन मुकुन्दक गामसँ ओकर तीनटा पकिया संगी कपिल, मोस्ताक आ करिया अयलै। ओही दिन मुकुन्द अजयकेँ सेहो आमंत्रित कयलकै। अजय त' नहि अयलै मुदा मुकुन्द आ तीनू संगी भरि दिन खूब मस्ती केलकै। रवि दिन रातिएमे तीनू दोस्त गाम घुरि गेलै।

अजयकेँ नहि अयलासँ मुकुन्द एतेक तमसेलै जे सोम दिन स्कूलमे जखन ओकरा अजय भेटलै त' ओ तामसे मुँह फुलेने चुप रहल। अजय दू-तीन बेर 'सॉरी' बजलै—

'सॉरी मुकुन्द, हम नहि आबि सकलहुँ'

तामसे ओ अजयकेँ झटकारि देलकै— 'जा, ई की भेलै, अजय त' खसि पड़लै। ओकर पाँजरिसँ एकटा तार बहरेलै। आ आँखिसँ एकटा लाल इजोत चमकलै। खेला खतम। सभ विद्यार्थी खसल अजयकेँ चारु कातसँ घेरि लेलकै। तखने साइन्स बला 'सर' दौड़ल अयलखिन। ओ अजयकेँ देखिते कहलखिन— 'जा, ई त' रोबोट छलै। तार बहरेलै, सर्किट शार्ट भेलै आ खिस्सा खत्तम।'

साँझखन भोजन कालमे मुकुन्द पापासँ स्कूलमे अजय बला गप्प कहलकनि। ओ हँस' लगलथि। ओ कहलखिन—

'रे बाउ, तोहर दोस्तक ई व्यवस्था हम कयने छलियौ तोरे लेल। एहि रोबोटमे तोहर पसिनक दोस्तबला सबटा करेक्टर 'फीड' छलहु।

'पापा, मनुक्ख मनुक्खे रहत आ मशीन मशीने। कपिल, पप्पू, मोस्ताक, निखिल सभक मोकाबिला अजय कोना करतै?'

मोहन जी मुस्किया रहल छलाह।

•

अनुप्रास

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक प्रयास

रचनाकार लोकनिसँ निवेदन

- जतय धरि सम्भव हो अपन रचना ई-मेल/ह्वाट्सएपसँ पठाबी।
- रचना कम्प्यूटर टाइप पठाबी। मोबाइलसँ टाइप क' सेहो पठा सकैत छी।
- रचना अप्रकाशित आ मौलिक हो।
- रचनाक संग अपन फोटो आ लगभग 50 शब्दमे अपन परिचय अवश्य पठाबी।
- रचनाक अन्तमे पूरा पता, मोबाइल नंबर आ ई-मेल अवश्य लिखी।
- समीक्षा हेतु पोथीक दू प्रति पठाबी।

—सम्पादक

whatsApp : 9430583847 e-mail : anuprasmadhubani.com

मामा अयलाह

रमाकान्त राय 'रमा'
8051788976

मामा अयलाह, मामा अयलाह
हमरा लेल खेलौना लयलाह
चाभीवाला भालू नाचय
सुग्गा गीत सोहनगर गाबय
वानर घीचि रहल अछि ठेला
मामा अयलाह, मामा अयलाह
मामा अयलाह, मामा अयलाह
हमरा लेल मधुरो लयलाह
गोल जिलेबी, उजरा रसगुल्ला
लाल जामुन, लोंगलत्ती भुल्ला
'टौफी' लै भेल ठेलमठेला
मामा अयलाह, मामा अयलाह
मामा अयलाह, मामा अयलाह
सभलै नव-नव कपड़ा लयलाह
शर्ट-पेंट आ मोजा-पनही
मफलर-स्वेटर रंग-बिरही
चितकबरा टाइ अलबेला
मामा अयलाह, मामा अयलाह
मामा अयलाह, मामा अयलाह
हमरा सबकेँ खूब हँसेला
खेल-खेनौना, मधुर-मिठाइ
नव-नव ड्रेस पहिरि अगराइ
गोरलगाइ पचसटकही देला
मामा अयलाह, मामा गेलाह

पोथी

मनोज कुमार झा
9472215670

पोथी होय अछि ज्ञानक घर
एकरा पढ़ने भागय डर

पोथी जोड़ै नेहक डोर
तिमिर मेटाबय आनै भोर

पोथीकेँ अछि विविध प्रकार
ज्ञान-विज्ञानक ई भंडार

पोथी बतबै बीतल बात
कखन कतय कयल आघात

पोथी दै अछि दिव्य प्रकाश
ई पुरबै अछि सबहक आश

पोथी खोलय मर्मक भेद
बनब विज्ञ त' रहत न खेद

बाल गजल

विजय कुमार ठाकुर
6207612188

अ आ इ ई लिखबै माँ
ए बी सी डी सिखबै माँ

गाछीमे जा क' टिकुला
बाबा संगे बिछबै माँ

खुद्दी मेरखी जाँतमे
अहाँ संगे पिसबै माँ

बोर बनादे खत्तासँ
पोठी माँछ खिचबै माँ

हमरो जल्दी दिअने
थारी बाटी पिटबै माँ

विकास-पथक ज्यामिति

विनय कुमार झा
9177613815

बढ़ल जा रहल छी हम
विकास-पथक अज्ञात ज्यामितीय विस्तारमे झोंकने
अपन मोन, प्राण आ संसारकेँ
बीना बुझने जे—
ई तँ थिकैक एकटा एहेन वृत्तपथ, जकर
आगम आ निर्गम बिंदुमे
भेद तँ छैके नहि।

चारि टाङ पर ठाढ़ हमर अस्तित्व
बढ़ीने रहय पहिल डेग जखन काटिकए
दूटा अनावश्यक टाङ, आ
बना लेने रहए दूटा हाथ, तँ
नाचि उठल रही हम ओ विन्धविजयी अस्त्र पाबि
आ फेर
ओही अस्त्रक संधानसँ बना लेने रही पहिया
फेरसँ चारि टाङ पर दौगबाक लेल।

सुनिकए सीखैत-सीखैत हम
कखन लीखए लागि गेलहुँ, मोन नहि अछि
मुदा, मोन अछि ओ ताल आ भोजपत्र
जतए सुरक्षित संरक्षित करैत रहलहुँ
पुरुखाक ज्ञान, मुदा
छोट होइत गेल भोजपत्र, हमर बढ़ैत ज्ञानक आगू
आ फेर,
देबए लगलहुँ आहुति ओही भोजपत्रक वंशकेँ
सुरक्षित, स्निग्ध आ टिकाऊ कागतक हेतुएँ
गाछक छायामे रहएवला मनुष्य
बल्कल वसनसँ शीत-ताप सहएवला मनुष्य
'माता भूमिः पुत्रोहं पृथिव्याः' कहएवला मनुष्य
विकासक मार्ग पर त्वरित दौड़बालए
एकटंगे ठाढ़ होमए लागल
अंतरिक्षमे पहुँचबालए
प्रकृतिसँ एकाढ़ होमए लागल
उड़य लागल अंतहीन आकाशमे
हेराय लागल विनाशकारी विकाशमे
अपनहि आकाशवाणी घोषए लागल
मोबाइल, इंटरनेटक कर्णपिशाच पोसए लागल
मुदा,
वृक्षसँ अंतरिक्ष धरिक विशाल डेगक फेरमे
स्वयं वामन बनैत
कालक संग गलबहियाँ करैत
सुविधाक चुम्बकीय चकाचोन्हमे
चकभाउर दैत
हाथ-पएर मारि रहल अछि
अपन शीशाक घर तोड़बालए
पाथर उसाहि रहल अछि।

पसारी

अमल कुमार झा
8809061603

हमरा गामक नूर मोहम्मद
लाखक गर्मीमे अपनाकेँ झोंकि क'
बनबैत अछि
नवविवाहिताक अखण्ड सौभाग्यक हेतु
सोहागक लहटी आ
बरुआकेँ अलंकृत करबा लेल गुआमाला
बदलामे पबैत अछि
भरि छाक शगुन ओ थोड़ेक सिद्धा

नहि करैत अछि कहियो हिज्जो
सभ शुभ-अशुभमे होइत अछि
पूर्ण संवेदनाक संग सभक संग
सभक खोज-खबरिमे जिबैत अछि
सभक हास-परिहासमे रमैत अछि

माथ ठोकि दैत अछि आशीर्वाद
सभ दिन रहबाक लेल निरोग आ
बनबा लेल बुधियार एहि अकिलगर दुनियाँमे
पुस्त-दर-पुस्तसँ रहल अछि व्यवहार
सुख-दुःखमे संग पुरबाक

नूर मोहम्मद हमर पसारी छथि
की ओ ठीके बस पसारीए टा छथि?